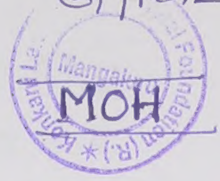
धार्मिक चिंतन

डा। मोहन शेणै



धार्मिक चिंतन

लेखक: डाक्टर मोहन शेणै

प्रकाशक: अड्यार गोपाल परिवार प्रकाशन, बेंगळूरु

धार्मिक चिंतन: इस पुस्तकमें धर्मके बारेमें प्रचलित विचार प्रकट किये गये हैं।

लेखक: डाक्टर मोहन शेणै

पहला छाप: एप्रिल 2017

प्रकाशनाधिकार: डाक्टर मोहन शेणै

प्रकाशक: अड्यार गोपाल परिवार प्रकाशन,
13/डी, 6 वां आढ रास्ता,
राधाकृष्ण लेऔट, पद्मनाभनगर,
बेंगळूरु, पिन 560070, इंडिया.
फोन 91+80+26797278

मूल्य: भारतमें 700 रुप्ये
विदेशमें 10 यू एस डालर

दुरुपयोग की ज़िम्मेदारी: इस पुस्तक में दिये हुए किसी विचार या सूचनाके इस्तेमालसे अगर किसी व्यक्तीको नुक्सान या क्षति होती है तो उसका मुआवज़ा लेखक या प्रकाशक की ज़िम्मेदारी रहती नहीं।

समर्पण

समाज सेवक डाकटर श्रीनिवास पडियार जी को समर्पित

डी टी पी: डा। मोहन शेणै

प्रकाशन देश: भारत

प्रस्तावना

हम सबको हमारे जीवन में अपना धर्म को जाननेकी आवश्यकता होती है। जब यह प्रश्न उठता है की हमारा धर्म कौनसा है तब हमको हमारे धर्म का नाम बताना पडता है। जीवन भर हम अपने धर्मको साथ ले कर चलते हैं। जीवन भर हमको बताया जाता है की ईश्वर पर विश्वास रखो। ईश्वर दयाळू है। श्रद्धापूर्ण मनसे अपने दुराचारोंको कबूल करके माफी मांगने पर ईश्वर हमको कष्ट नहीं देगा। हम अपने घर में जो कुछ अपने परिवारके लोग आचरण करते हुए देखते हैं उसको देखकर हम बचपनसे ही अपने धर्मके बारे में थोडा बहुत सीख लेते हैं।

अब इस्कूल में धर्म सिखाते नहीं। इस्कूल में एक दो भाषायें सीखते हैं। सारे हिंदुस्तान में अंग्रेज़ी हर इस्कूल में सिखाते हैं। हिंदी, पंजाबी, गुजराती, आदी भाषाओं को अपने राज्यमें सिखाते हैं। गणित, विज्ञान, भूगोळ, आदी विषय सिखाते हैं। ईसाई इस्कूलों में मोरल्स" सिखाते हैं। लेकिन किसी धर्मके बारे में कोई "(नीतिवचन) भी क्लास नहींलेते हैं। मुसलमानोंको मदरसे में इस्लाम धर्म सिखाते हैं। हिंदुओंको अपना धर्म शास्त्रोंको सीखने के लिये मंदिरों में अकसर नियोजित धार्मिक विषयके क्लास में हाज़र होना पडता है।

इस्कूल में धार्मिक शिक्शा नहीं होनेके कारण अब हमारे बच्चे धर्मके बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं।

विषय तालिका

आरंभमें दो बातें 1

लेखनका उद्देश 17

धर्मकी आवश्यकता 29

हिंदू भगवान 45

वेद और वैदिक धर्म 61

पौराणिक धर्म 75

भक्ति धर्म 91

हिंदू धर्म बदल गया है। 111

अंतमें दो बातें। 149

आरंभमें दो बातें

मेरा नाम मोहन शेणै है। मै कर्नाटक राज्यमें स्थित बेंगळूर नगरका रहनेवाला हूं। मेरी मातृभाषा कोंकणी है। मुझे अपनी मातृभाषामें लिखना पसंद है। लेकिन जब मैं कोंकणीमें लिखता हू तब मैं कानडी या देवनागरी लिपीका उपयोग करता हूं। कोंकणी भाषा सिर्फ गोवा राज्यमें राज्य भाषा है। कोंकणी भाषा अब भारत देशके संविधानके आठवें परिच्छेदमें उल्लेखित हुई है।

कर्नाटक राज्य में जहां कन्नड भाषा राज्यभाषा है यहांके कोंकणी बोलनेवाले लोग कानडी लिपीमें कोंकणी लिखते हैं। केरळ राज्य में कोंकणी लोग मलयाळम लिपीमें कोंकणी लिखते हैं। महाराष्ट्र राज्य में कोंकणी भाषा देवनागरी लिपी में लिखी जाती है।

गोवा सरकारने अपने व्यवहारमें कोंकणी भाषा के लिये देवनागरी लिपीको अधिकृत लिपीका दर्जा दिया है।

जब गोवा राज्य पिछले सदी ईसवी 1965 तक पोर्तुगीसोंका वसाहत हुआ करता था तब पोर्तुगीस सरकारने कोंकणी भाषे की अधिकृत लिपी रोमन लिपी कहके घोषित किया था।

मेरा यह लेख मैं कोंकणीमें नहीं बलकी हिंदी भाषामें लिखता हूँ क्योंकी आजकल भारतमें अधिकतर लोग हिंदीमें ही लिखतें पढ़ते हैं। फिर यह लेख जो मैं लिख रहा हूँ इसे पढ़नेवाले लोगोंको संभवतह कन्नड या कोंकणी भाषामें लिखा हुवा लेख पढनेमें तकलीफ होगी। किसी एक लेखको लिखते समय हमें यह सोचना चाहिये कि इसको कौन पढ़ेगा। अगर हम पढनेवाले जिस भाषा समझसकतें हैं उसी भाषामें अपना पाठ लिखतें हैं तो उस पाठको ज्यादा लोग पढेंगे। मेरा अनुमान यह है कि अगर मैं थोडा बहुत कष्ट उठाके यह लेख हिंदीमें लिखता हूं तो फिर इसको सब पढेंगे। मेरा यह प्रयत्न सफल होसकता है। मेरी हिंदी ज़रा असाधारण है क्योंकी मैंने कहीं कहीं अंग्रेज़ी पदोंका इस्तेमाल किया है। कोंकणि या कन्नड पदोंको भी इधर उधर मिलाया है।

मै कर्नाटक राज्यके दक्शिण कन्नड ज़िलेके मंगळूर शहरमें ईसवी 1938 में जनमा था। मंगळूर शहर दक्शिण भारतके पश्चिमी समुद्र तटपर है। मेरा धर्म हिंदू धर्म है। मैं गौड सारस्वत ब्राह्मण हूं। मेरे माता पिता हिंदू थे और गौड सारस्वत ब्राह्मण थे। इसलिये मुझे भी उनकी जाती और धर्म में शामिल किया गया। हमने अपनी जाती को समर्थन करना स्वाभाविक है। अगर मैं ईसाई या मुसलमान परिवारमें पैदा हुवा होता तो मैं हिंदू नही बनता था। मै बचपनसे हिंदू धर्मको मानता आया हूं। मैने हिंदू धर्मके जीवन प्रथाको अपनायी है। ब्राह्मण होनेके नाते मैं सस्याहारी हूं। मै बचपनसे ही हिंदू धर्मके ग्रंथोंको पढ़ते आया हूं। जबभी हमारे घर में कोई धार्मिक पर्व मनाया जाता था तो हमारा सारा परिवार उस पर्व को मनाने में सक्रिय होता था।

मेरी मां जिनका नाम राधाबायी था सिर्फ दूसरे क्लास तक पढ़ी थीं। लेकिन वे देवनागरी लिपी पढसकती थीं। उन्होने घर में बैठके ही अपने स्वयं प्रयत्नसे कन्नड, तेलुगु, देवनागरी इत्यादि भाषाओंको पढ़ने लिखने सीखा था।

मेरे पिताजीने आठवी क्लास तक इस्कूल में पढ़ाई की थी। मेरे पिताजीने भी घर में ही हिंदी में लिखने और पढ़ने सीखा था। मेरे पिताजीने आर्य समाजके अनेक पुस्तकोंको पढ़ा और मुझे भी आर्य समाजके विविध विचारोंसे अवगत कराया। आर्य समाजके संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वतीने मूर्ति पूजनका खंडन किया था। मेरे पिताजी पौराणिक समाज में जनमे और पौराणिक मंदिरों में मूर्तियोंकी पूजा करते करते बडे हुवे। जब उन्होने अपने बाईस तेईस बरसके उम्र में एक दिन आर्य समाजके प्रचारक स्वामी श्रद्धानंद सरस्वतीका भाषण सुना तो उनको आर्य समाजके सिद्धांतोका परिचय हुवा। उसी दिन मेरे पिताजीने पौराणिक प्रथाको त्याग किया और वे आर्य समाजके वैदिक ईश्वरको मानने में लगे। मेरे पिताजीने अपने सब बच्चोंको वैदिक धर्म सिखाया। मेरे पिताजी हर दिन जो पौराणिक विधी में संध्यावंदन किया करते थे उसको रोक दिया। उसके बदले हर दिन आर्य समाजके ग्रंथोंमें दिये हुवे नियमके अनुसार संध्यावंदन और हवन करने लगे।

मैने भी आर्य समाजके ग्रंथोंको पढके वैदिक विचारोंको अपनाया। मेरी मां राधाबायीने तो अपना पौराणिक विश्वासोंको बदला नहीं। उन्होंने पिताजीके नये धर्मकी निंदा तो किया नहीं। लेकिन वे पौराणिक मंदिर जाते रहे और सारे पौराणिक पर्वोंको मनाते रहे। मंदिरमें मूर्तिके सामने सर झुकाते रहे, पूजाके अंतमें पुजारीने दिये तीर्थप्रसाद स्वीकार करते रहे। कभि कभी गर्भग्रह में दिखता हुवा पौराणिक भगवानकी मूर्तीको मंदिरके आंगनमें लेटकर साष्टांग नमस्कार भी करते रहे। मेरे पिताजी की बडि बहन जो विधवा थीं और जिनका पालन पोषण हमारे घर में ही होता था उन्होने मूर्तिपूजनको चालू रखा। उनके अपने कमरे में उन्होने एक छोटासा मंदिर सज़ाया था। एक तीन फूट ऊंचे मंटपके अंदर सीढ़ियां जैसा पीठ रखके उस पीठपर पौराणिक देवोंकी मूर्तियोंको सज़ाया था। इन मूर्तियों में पंढ़रपुरके विठोब रुकुमाई के मूर्तियां अग्रस्थान में थीं। सभी मूर्तियोंका फूलोंसे सिंगारना और सज़ाना वे हर दिन करते थे।

घरके महिळावोंको बिठाके हर शाम भजन गाती थीं। भगवान राम और कृष्ण इत्यादी देवताओंके फ्रेम में बिठाये चित्रोंको मंटपके पीछेवाले दीवार पर कहीं कहीं अनेक जगह लगाये थे। मूर्तियोंके सामने दो दियाओंको तेल भरके रखके रुईके बत्तियोंको जलाते थे। भजन में तरह तरह के भक्ति पदोंको गाते थे। मराठी अभंग गाते थे। संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर, मीराबाई, वगैरे महापुरुषोंके भजनोंको गाते थे। भारत में मूर्ति पूजकोंकी संख्या आर्यसमाजियोंसे भी बहुत ज्यादा है। लेकिन मेरे पिताजीने अंत तक वैदिक धर्मको ही पालन किया।

अब ईसवी 2016 में मेरि उमर 78 है। ईसवी 1943 में मंगळूरुके एक प्रैमरी इस्कूल में मेरी शिक्शा आरंभ हुई थी। मैं आठ नौ बरसका होते ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघकी (आर एस एस की) एक शाखामें शामको जाता था। आर एस एस की शाखे में मुझे देशप्रेमका संबोधन मिला।

ईसवी 1947 में जब भारतको स्वातंत्र्य मिला तो कोंग्रेसका तिरंगा ध्वज हमारा राष्ट्रीय ध्वज हो गया। कांग्रेस के चरकेके बदले अशोक चक्र राष्ट्रीय ध्वजके सफेद पट्टी पर दिखने लगा। तब तक हम अंग्रेज़ोंका यूनियन ज्याक ध्वजको सलाम करते थे। स्वतंत्र भारतके संविधानमें धर्मनिरपेक्शता एक प्रबुद्ध नीतीके रूपमें उभर कर आया है।

मेरे पिताजीने आर्य समाजके नियमोंके अनुसार मेरे चौदा बरसके आयुमें वैदिक रीतीमें एक सन्यासीके हाथों मेरा उपनयन संस्कार करवाया। मैं कट्टा आर्य समाजी बनगया। ईसवी 1961 में मैं मेडिकल कालेजमें एम बी बी एस कोर्स के लिये भर्ती हुआ। 1968 में वैद्यकीयके उच्छ्र शिक्षण के लिये मै अमेरिका गया। अमेरिकामें साढे आठ बरस वास करके ह्यूमन पेथोलोजीमें डिप्लोमेट बनके 1977 में मैं हमेशा के लिए भारत वापस आगया। तब मेरी उमर 39 थी। मेरे दो बच्चे थे। तब मेरा अव्वल लक्श्य पत्नीका और बच्चोंका पालन पोषण था।

जब मै 70-72 उमरका हुआ तब मुझे वैदिक धर्मके बारेमें विश्वास कम हुआ। मूर्ति पूजन के बारेमें विश्वास बढा तो नहीं। मेरा विश्वास अब मनुष्यके अपने सामर्थ्यपर टिका है। देवीदेवताओंको प्रार्थना करना कम उमरके सज्जनों को आवश्यक है। जब कोई कम उमरवाला आदमी या औरत संकटमें पड़ता है या पड़ती है और उस संकटसे बाहर आनेकेलिये उनको कोई आसान रास्ता दीखता नहीं तब उस आदमी या औरतको ईश्वरकी याद आती है। वह ईश्वर जो सर्वांतर्यामी है और सब कुछ जाननेवाला है, कृपाळू है, दयामय है, भक्तोंके सब गलतियोंको माफ करनेवाला है उस ईश्वरकी याद आती है। सब जनोंको उनके कठिण कालमें किसी बचानेवाली शक्ती की सहायता आवश्यक होति है। मै मानता हूं की मेरे इस प्रौढ उम्र में हर कोई संकटमें मैं स्वयं बुद्धी और ज्ञानकी मदद से बेडापार करता हूँ। ऐसा नहीं की मैं सब मुष्किलोंको स्वयं निपटा सकता हूँ। जब मैं किसी संकटमें पड़ता हूं तब मैं उस संकटका समाधान अपने पूर्व अनुभवोंसे, बुद्धीसे और ज्ञानसे ढूंढ़ता हूं। भगवानकी प्रार्थना नहीं करता हूँ।

हर आदमीको कभी न कभी किसी विषयमें डर लगना स्वाभाविक है। डरका कारण अनेक हैं। अंधकारमें सबलोग डरते हैं। बडी आवाज़से हमारा देह एक बार झटकता है। कोई इन्सान बंदूक या पिस्तोल दिखाता है तो हमें डर लगता है। रातको अकेले रास्तेपर चलते वक्त कोई पीछा करता है तो हमें उस आदमीके बारेमें कुछ पता करने तक डरसा लगता है। इन सब तरहके डरानेवाले परिस्थितीको दूर करनेकेलिये हम भगवानकी प्रार्थना करते हैं। हम आशा करते हैं की भगवान हमें किसी तरहका संकट आने नहीं देगा। जो मनुष्य अंधकार, आवाज़ या अपरिचित व्यक्ती आदी विषयोंका धैर्यसे सामना करता है उसको डर नहीं लगता। अगर लगता है तो वह डर क्षणिक होता है।

ज्ञान ग्रंथों में होता है। आज कल हम धार्मिक विषयोंको सीखनेकेलिये शास्त्रोंके अनुवादके पुस्तकोंको पढ़ते हैं। बहुतसे संस्थाओंने ऐसे पुस्तकोंको शास्त्रियोंके हाथों लिखवाकर प्रकाशित किये हैं।

भगवद्गीता एक ऐसा पुस्तक है। श्री रामकृष्ण आश्रमने प्रकाशित धार्मिक पुस्तकें सब घरों में देखनेको मिलती हैं। महात्माओंके जीवन चरित्रमें लौकिक और अलौकिक दोनों भाव होते हैं। लौकिक भाव वह है जो प्रत्यक्श है। लौकिक विषय सत्य होता है। जो भी लौकिक भाव या विषय है उसको सब समझते हैं। लौकिक विषयके बारेंमें कोई प्रश्न नहीं उठता। लेकिन जो भी अलौकिक भाव या विषय है उसके बारेमें हमको अलग अलग लोग अलग अलग तरहसे स्पष्टीकरण देते हैं। सारे अलौकिक विषयोंका स्पष्टीकरण देते हुए सबसे पहले हमको बताया जाता है की यह ईश्वरका खेल है। यह स्पष्ट है की जो कोई विषय हमारे दिमागके पहुंचसे दूर है तो हम उसे जानते नहीं। हमे सिरफ कबूल करना चाहिये की उस विषयको हम जानते नहीं। बड़े लोगोंको जिनको उनके परिजन महात्मा कहकर पुकारते हैं उनको यह कबूल करना बहुत मुश्किल होता है की वे उस विषयको जानते नहीं।

महात्माओंको कोई भी विषय नहीं जाननेका प्रश्न कभी भी नहीं उठता।

कोई स्वामी यह नहीं कह सकते हैं की वे किसी विषयको जानते नहीं। इसीलिये अगर हम कोई विषय जिसको हम अलौकिक समझते हैं और महात्माओंके पास उसका स्पष्टीकरण मांगते हैं तो वह महात्मा यह कबूल नहीं करेंगे की उन्हें उस विषयके बारेमें पता नहीं। बदलेमें वे इसको ईश्वरका हाथ कहके कोई पौराणिक कथाका उदाहरण देके उस विषयकी अलौकिकताको बढ़ाते हैं। जिसको हम अलौकिक पाते हैं वह इसीलिये अलौकिक है की हम उसको कभी देखा नहीं, सुना नहीं या कभी अनुभव किया नहीं। उसके बारेमें ग्रंथोंमें पढ़ा नहीं। जितना हमारा बुद्धी और ज्ञान बढ़ता है उतना कम अलौकिक भाव या विषय हम देख, सुन, या अनुभव कर पायेंगे।

ज्ञान, विज्ञान और तंत्रज्ञान के बिना हम हमारी लौकिक बुद्धिमत्ताको विस्तार नहीं करसकते हैं। लौकिक बुद्धिमत्ता पढ़ाईसे हासिल होती है।

हिंदुस्तानमें ईसवी 1000 के बाद सिंधू नदीके पश्चिम में स्थित राज्योंसे मुसलमान हमलावर आये।

इन हमलावरोंने हिंदुस्तानको लूटा और इसके कारण हिंदुओंका मनोबल टूटा। हिंदुओंका नारा "अहिंसा परमो धर्म" इसका कोई असर हमलावरों पर नहीं हुआ। हिंदू राजा युद्ध में हारे। अपना राज्य मुसलमानोंको सौंप दिया। मुसलमानोंने हिंदू धर्म के अनुयायियोंको इतनी पीड़ा दी की हिंदू लोग अपना हिंदू धर्म त्याग कर मुसलमान बनने पर मज़बूर हुए। साथ ही हिंदू संस्कृती अवनतीकी तरफ बढ़ी। संस्कृत भाषाकी जगह फार्सी भाषा प्रबल होगयी। सारा पुरुषार्थ मुसलमानोंसे लढ़नेमें व्यर्थ हुआ। मुसलमानोंने हिंदुओंको गुलाम बनाया। हिंदूओं में निराशा फैली। सब जगह भय और अंधकार छाया। हिंदू लोगोंको व्यापार और वृत्तियों में भरोसा कम हुआ। लोगोने लौकिक विषयोंको अध्ययन करके समस्याओंका समाधान ढूंढना बंद किया। साधू, सन्यासी, बैरागी बनना अच्छा समझा। हिंदुओंको काम करके सुख जुटानेमें या श्रमसे लाभ पानेमें दिलचस्पी कम हुई। हिंदुओंने खेतीबाडी करके अपना पैदावार मुसलमान अधिकारियोंको सौंपना चाहिये था। अपनी सब समस्याओंको हिंदुओंने ईश्वरको सौंपा।

तेरहवीं सदीसे लेकर भारतको स्वातंत्र्य मिलने तक हिंदुस्तान में काम करके आर्थिक वृद्धी पाने में किसीको इच्छा नहीं थी। युवाओंको संत, सन्यासी, साधू आदी बनना श्रेष्ट साधना हुई। अपने देश को परदेशियोंके हाथोंसे छीन कर स्वायत्तता स्थापित करने में हिंदुस्तानी असफल हुए। लौकिक विषयोंसे कोई लाभ न मिलनेसे सब लोग अलौकिक बातों पर निगाह करने लगे। धन धान्यसे समृद्ध होने के बदले मानसिक शांतीके वास्ते सब कहने लगे की अब हमें सिरफ ईश्वर ही बचायेगा। सब लोग काम करके संमृद्ध होने के बदले पारमार्थिक विषयोंके बारेमें चर्चा करने लगे। अपने सामने आके खडी समस्याओंको अलौकिक कहके अपना असहायताको दर्षाया। अपना हिंदू धर्म श्रेष्ठ कहनेके बदले सब धर्म एक समान बताया। युद्धमें लढके मरनेसे भी ईश्वरका भक्त बनकर गांव गांव घूमकर कीर्तन गाके भिक्शा माँगना अच्छा समझा।

अब ईसवी 2016 में भारत देशको स्वातंत्र्य मिलनेके बादसे हम सब फिर लौकिक विषयों पर इच्छा करने लगे हैं।

अब हिंदू धर्म विज्ञान के नींव पर खड़ा है। अन्य सब धर्मोंसे भी ज्यादा आसानीसे पालन करने योग्य बन गया है। जो भी पारमार्थिक विषय हैं उनको अलग रख कर हम अपनेको हिंदू कहला सके हैं। धर्म में आस्था दिखाना एक व्यक्तिगत विषय बन गया है। हिंदुस्तान में अब आर्थिक उन्नती आत्मिक उन्नतीसे भी बड़ी हो गई है। अगर हम आर्थिक समृद्धी पाते हैं तो अपने जीवनमें शांति प्राप्त करलेंगे। जीवन में ऊंचे आदर्शों का अर्थ बदला है। जो कोई मनुष्य मानसिक असमर्थतासे कष्टमें फंसा हो, अपना लक्श प्राप्त करनेमें असफल हुआ हो, तो वह मनुष्य अब ज्योतिषीके पास जा कर उसका समाधान नहीं ढूंढता बलकी अपने नज़दीकी ब्यांक शाखा में जा कर ऋण लेनेका प्रयास करता है। विज्ञान, तंत्रज्ञान, आदी पुस्तकोंको पढ़कर अपना कौशल बढानेका प्रयास करेगा। अवश्य स्वयं पर विश्वास जतायेगा। ऐसी लौकिक साधना करते करते आर्थिक साधकको विपरीत परिस्थितियोंमें अनेक कठिण परीक्शाओं का सामना करना पड़ेगा। कभी एक बार रास्ता भूलेगा तो विविध तरहकी दक्शताको हासिल करके दूसरी नौकरी पायेगा। उसको बेकार नहीं घूमना पडेगा।

यह "साधना" क्या चीज़ होती है यह प्रश्न संतोंको पूछे तो क्या उत्तर मिलता है? वे कहेंगे की नामका जप करना ही "साधना" है। आँखें बंद करके इष्ट देवताका नाम जपते रहो। नाम जप करने से हमारा दिमाग टेनशन छोड कर जप करने में लगता है। अपने इष्ट देवताका नाम या किसी वस्तु या विषय पर मनको केंद्रित करके उसीका ध्यान करनेसे दिमाग में जो टेनशन पैदा करनेवाला विषय सताता था उसके स्थान में इस अहानिकर चीज़को लायें तो उससे दस पंद्रह मिनट में दिमागमें शांती महसूस होगी। मैं समझता हूँ की अपना कर्तव्य जो है उसे करना सच्ची साधना है। नाम जपनेके बदले अपना काम करना जो है इसको साधना कहके पुकारना चाहिए। आँखें बंद करके बैठना और नाम जपना युवकोंको और युवतियोंको समयको बरबाद करने जैसा लगेगा। धार्मिक विचार सब कर्तव्य पर टिका है। सभी धर्मोंमे अच्छे नियम वही हैं। 1. हिंसाको छोडो। 2. परनिंदा मत करो। 3. व्यर्थ कालहरण मत करो।

अब भी हिंदुस्तानमें भूखमरी बहुत ज्यादा है। उन्नीसवी शताब्दीके अंत तक हिंदुस्तान में ब्राह्मणोंका और अमीरोंका सर्वाधिकार चलता था। छूताछूत पद्धतीसे निचले जातीके लोगोंको बहुत अन्याय झेलना पड़ता था। ज़मीनदार लोग अपने खेतोंमें पसीना बहाके श्रम करनेवाले खेतिहर लोगोंसे महसूल वसूली करनेमें जानवर जैसे बर्ताव करते थे। अठारहवी सदीमें जब हिंदुस्तान में अंग्रेज़ोंका शासन आया तब अंग्रेज़ोंके बस्तियोंमें बसे नागरिकोंको न्याय मिलने लगा। पुलीसवाले कानूनके अंदर बर्ताव करने लगे। न्याय दिल्वानेकेलिए अंग्रेज़ोंने पहले अपनी दंड संहिताको लगाया। चोरी, हिंसा, खून इत्यादी अपराधोंकी अलग अलग सज़ा सुनानेके लिए अलग कानून बनाये और न्यायपालिकाओं और न्यायाधीशोंको नियुक्त किया। किसी नागरीकको पुलिस थाने में अपना शिकायत दर्ज करना संभव हुआ। संदिग्ध व्यक्तीसे मुआब्ज़ा मांगने लगे। हिंदू धर्म न्यायकी ओर बढ़ा।

लेखनका उद्देश

इस पुस्तकको इसीलिये लिख रहाँ हूँ की मेरे विचारोंको मैं सब लोगोंके सामने रख सकूँ। हमारे मन में सारे सोच पैदा होते हैं। उन सोचोंको हम बोल कर खुल्ला कर सकते हैं। लेकिन हमको सुननेवाले मिलते नहीं। बोल कर हम अपने सारे विचारोंको नहीं सुना सकते हैं। पुस्तक में सौ से ज्यादा पुटों में हम सारे सोचोंको लिख कर बतायेंगे तो उसको जब चाहे तब पुस्तकको खोल कर सब लोग पढ़ सकते हैं।

इस पुस्तकका विषय है धार्मिक चिंतन। हम जब छोटे थे तब हम हमारे माँ और पिताने ईश्वरके बारे में बोलते हुए सुनते थे। शिव नामक भगवान को विशेष स्थान था। शिवजी का फोटो उनकी पत्नी पार्वतीके फोटोके साथ गणेश चतुर्थीके पर्वके समय ऊँचे आसन पर रख कर आरती दिखा कर पूजा करना मैंने देखा है। शिव और पार्वती भगवान गणेशके माता पिता हैं। गणेश एक ऐसा भगवान है जिसको किसी कार्य शुरू करते वक्त पहले याद करके काम शुरू करते हैं।

शिवरात्रीके पर्व उपवास रख कर अनशन करते हैं। एक हज़ार बिल्व पत्रियोंको शिव लिंग पर चढ़ाते हैं। कई ग्रंथों में लिखा है की बहुत पहले शिव ही अकेला एक मात्र भगवान था जिसको लिंग के रूप में बना कर प्रार्थना करते थे। बाद में शिवको मानव जैसे शरीर दिया गया। शिवको तीन आँखें दिये गये। जब शिव ध्यानके लिये पद्मासन डाल कर आँखें बंद करके बैठता है तो उसकी तीसरी आँख बंद रहती है।

शिवका और एक नाम है रुद्र। रुद्रका मतलब है कोपिष्ट। रुद्रको आसानीसे गुस्सा नहीं आता। लेकिन जब रुद्र्को गुस्सा आता है तो उसकी तीसरी आँख खुलती है और सामने खडे कोई भी हो वह जल कर भस्म हो जाता है। इन कथाओंको पुराणों में लिखा है। पुराणों में तैंतीस करोड देवी देवताओं का उल्लेख है। हमारे धार्मिक कर्म और पर्व उत्सव आदी सब विधियाँ पुराणोंके कथाओंके आधार पर रचाई हुई हैं।

हमारी सोच हमारे मन में उठती है। सब स्त्री पुरुषको धर्मके बारे में सोच आती है। जब हम कोई बुरी घटना देखते हैं या भयानक बात सुनते हैं तो अकसर हमारे मुँहसे ऐसा एक उद्गार आता है - "हे भगवान"। भगवानकी सोच इतना सामान्य है की कई लोग अपने शरीरके अंदर भगवान रहने पर विश्वास करते हैं। ईश्वरको हर तरह वर्णन करते हैं। ईश्वर विश्वके कोने कोने में है। हर एक चीज़ में है। हमारे शरीरके हर एक कण में है। बैंगन में है। बाघ में भी है। पानी में है। अग्नी में है। लेकिन उसकी पूजा करते समय हम उसकी मूर्ती बनाकर पूजा करते हैं। मूर्ती में भगवानको देखते हैं। सब लोग कहते हैं की ईश्वर सर्वांतर्यामी है। लेकिन ईश्वर एक जगहसे दूसरे जगह आता जाता है। जब भी ईश्वर या धर्म की सोच मेरे मन में आती है तो मैं उसको भूलना नहीं चाहता। अगर मैं इन विचारोंको पुस्तकके रूप में लिख कर रखता हूँ तो मुझे जब चाहे तब उन विचारोंको मेरे पुस्तक में पढ़ना आसान हो जाता है।

मेरा धर्म आम तौर पर हिंदू है। मेरी जाती ब्राह्मण जाती है। मैं ब्राह्मणों में गौड सारस्वत ब्राह्मण हूँ। सब जानते हैं की हिंदुस्तान में हिंदू के अलावा और कई धर्म हैं। मैं उन अन्य धर्मोंका मामला नहीं उठाऊँगा। मैं सिरफ हिंदू धर्मके बारे में लिखूँगा। हिंदू धर्म विश्वका सबसे पुराना धर्म है। फिर भी ईसाई या इस्लाम धर्मके तरह हिंदू धर्म विश्वव्यापी नहीं है।

ईसवी 1947 से पहले ब्रिटिष इंडिया में जिस में वर्तमान पाकिस्तान और वर्तमान बांग्लादेश मिले हुए थे करीब करीब 85 प्रतिशत हिंदू धर्मकी आबादी थी। जब ईसवी 1947 में पाकिस्तान ब्रिटिष इंडियासे अलग हुआ तब जो भारत बचा वह ब्रिटिष इंडियाका तीन चौथाई मात्र रहा। ब्रिटिष इंडियाकी आबादी ईसवी 1947 में 34 करोड थी तो उनमें लगभग 29 करोड हिंदू थे।

ईसवी 1947 में जब ब्रिटिष इंडियाका बटवारा हुआ तब लगभग एक लाख मुसलमान लोग भारत छोडकर पाकिस्तान जाकर बसे। लगभग 10 लाख हिंदू लोग जो पाकिस्तान के कब्जे में मिले हुए प्रदेश में बसे हुए नागरीक थे भारत के तरफ निकल पडे। उनमेंसे लगभग एक लाख हिंदुओंको भारत पहुंचनेके पहले ही हत्या कर दी गयी। पाकिस्तान एक इस्लामी राष्ट्र बना। भारत एक धर्मनिरपेक्श राष्ट्र बना। भारतने अपना संविधान धर्मनिरपेक्श संविधान बनाया। भारतके संविधानके अनुरूप भारत में बसे मुसलमानोंको हिंदूके समान सभी सुविधायें मिलती हैं। ईसवी 1971 में पूर्वी पाकिस्तानके लोगोंने दंगा मचाकर शेख मुजीबुर रेह्मानके नेत्रत्व में अपने पूर्वी बंगाल देशको पाकिस्तानसे अलग किया। इस नये देशको बांग्लादेश कहते हैं। बांग्लादेश में भी प्रशासन इस्लामी होनेके कारण उस देश में भी पाकिस्तान जैसे हिंदू विरोधी गतिविधियां चलती हैं मगर पाकिस्तान में जितना है उतना नहीं।

भारतके उत्तर में स्थित नेपाल में हिंदू लोग बहुसंख्यक हैं। लेकिन नेपाल में जो संविधान है वह धर्मनिरपेक्श संविधान है। इन सब हिंदू धर्मके विषयोंकी चर्चा करने के लिये मैं इस पुस्तकको लिख रहा हूँ।

हिंदू धर्मका जो नाम है वह अंग्रेज़ोंने हिंदुस्तान में बसे मुसलमानोंको छोडकर बाकी लोगोंको दिया हुआ नाम है। फार्सी लोग, यहूदी लोग, ईसाई लोग, आदी धर्मके लोग न हिंदू हैं न मुसलमान हैं। अंग्रेज़ी प्रशासन में बौध, जैन और सिख धर्मोंके लोगोंको हिंदू नाम से ही जाना जाता था।

स्वतंत्र भारत में मुसलमानोंको, ईसाईयोंको, बौध, जैन, सिख, फार्सी, आदि समुदायोंको हिंदू जातीसे अलग करके अल्पसंख्यक दर्जा दिया गया है। भारतके संविधान में पिछडे जातियोंकी सूची बानायी है। इस सूची में अनुसूचित जाती और जनजातियोंका नाम लिखे हुए हैं।

अन्य पिछ्डे जातीके लोगोंकी एक सूची भी बनाई गयी है। अनादिकालसे इन पिछ्डे जातीके लोगोंको सामाजिक अन्याय हुआ करता था। प्राचीन काल में सिरफ ब्राह्मणोंको लिखने पढ़नेका अवसर दिया जाता था। अन्य जनोंको इसकी आवश्यकता नहीं थी। सब लोग अपने अपने भाषा में बोल सकते थे। किसीको पत्र लिखनेका संदर्भ नहीं था। राजाओंको अगर किसी सूचनाको और किसी राजाको रवाना करनेकी ज़रूरत होती तो राज्य पुरोहितके हाथों पत्र लिखवाकरते थे। ब्राह्मण लोग पत्र लिखने में हर एक आदमीको मदद करते थे। ज़मीनदार, वेपारी, सैन्याधिकारी, आदी सब लोग जब भी किसीको कोई संदेश रवाना करना चाहते थे तो उनको ब्राह्मणके पास जाकर पत्र लिखवाना पडता था। सब लोगोंको इस्कूल में शिक्शा अंग्रेज़ोंके प्रशासनके काल में शुरू हुआ।

अनादिकालसे पिछडे जातीके हिंदू लोगोंका अपना अलग एक धार्मिक विधी थी। वह विधी वैदिक या सनातन धर्मकी नहीं थी। वह धर्म वेद पुराण आदि शास्त्रोंके धर्म जैसा नहीं था। उस धर्म में भूताराधना अग्र स्थान पर था। अब भी कई जगहों में भूताराधना चालू है। हमारे कन्नड देशमें भूतगृह (मंदिर) में भूताराधना ज़ोरसोरसे मनाते हैं। रात भर भूत वेषधारी नाचते हैं गाते हैं। नाग या सर्प की आराधना भी अनेक हिंदुस्तानी लोग करते आये हैं।

देहाती, आदिवासी और ग्रामीण लोग जो जंगलों में या पर्बतोंके निवासी हैं उन्होंने अपना अलग ईश्वरको माना है। उनके हिंदू धर्म में जो भी उनका भगवान है उसकी पूजा करते आये हैं। इनमें मरद और मादा दोनों भूत होते हैं। इस भूत भगवानको खुश करने केलिये तरह तरहके त्योहारोंको मनाते हैं। पक्शी या प्राणीको काट कर उसका खून पीना एक विशेष पूजा है।

अब ईसवी 2016 में भारत देश बहुत बदल गया है। भारतका सरकार एक प्रजाप्रभुत्व के नियमों पर आधारित सरकार है। भारत का संविधान पर आधारित चुनाव होने के बाद सरकार सत्तामें आता है। ईसवी 2014 मई महिनेसे नरेंद्रभाई मोदीजी प्रधान मंत्री हैं। भारत में राश्ट्रीय स्वयं सेगक संघ (आर एस एस) से प्रभावित लोग ज्यादातर हिंदू हैं। मोदीजी भी हिंदू हैं और आर एस एस से प्रभावित हैं। बंगालके श्यामप्रसाद मुखर्जीने भारत स्वतंत्र होनेके बाद सोचा की आर एस एस का एक राजकीय अंग कोई होना चाहिये। इसीलिये उन्होंने जनसंघकी स्थापना की। जनसंघ बाद में कोई कारण वशात् भारतीय जनता पक्श (भाजपा) बन गया। अटल बिहारी वाजपेयीजी इसवी 1998 से 2004 तक दिल्लीमें भाजपाके नेतृत्ववाली न्याशनल् डेमोक्रटिक एलायन्स (एन् डी ए) की सरकारके प्रधान मंत्री रहे। बादमें दिल्लीमें 10 बरस कांग्रेस् पक्श सत्तामें थी।

डा। मनमोहन सिंग कांग्रेसके प्रधान मंत्री रहे। ईसवी 2014 में जब जनरल इलेक्शन् हुआ तब भाजपाको बहुमत मिला। भाजपाने अन्य सहचिंतक पार्टियोंके साथ दिल्लीमें फिर एन् डी ए की सरकार को सत्तामें बिठायी। सारे हिंदुस्तानके लोग दिल्लीमें सरकारके अफसर हैं। लेकिन भारत में व्होट ब्यांक की राजनीती चलती है। कई जगह मुसलमान आबादी बहुत है। कोई 12% से 29% मुस्लिम आबादी है। मुस्लिम लोग कभी भाजपाको व्होट नहीं देंगे। जो भी मुस्लिम भाजपाको समर्थन देता है वह अपरूप (विरला) है। लेकिन मोदीजीके सरकारने सबका साथ सबका विकासका नारा लगाया है। अब यह देखना है की भाजपा सरकार ईसवी 2019 में जब फिर जनरल इलेक्शन होता है तो फिरसे सत्ता में आती है। इस पुस्तकको लिखकर मैं मेरा अनुमान व्यक्त करूँगा की भविष्य में भारतके हिंदू लोग कैसे अपने धर्मको प्रगतीके पथ पर ले जायेंगे? पाश्चात्य संस्कृतीकी छाया भारत पर पड़ रही है।

दूरसंचार का तंत्रज्ञान दुनियाके लोगोंको एक दूसरेसे संवाद और संभाषण तेज़ीसे करने की सुविधा देती है। "सोषियल मीडिया" माने सामाजिक माध्यम जो अत्याधुनिक डिजिटल वार्ता प्रणाली है संवादको त्वरित गतीसे चलाने में बहुत मददगार है। "इंटरनेट" एक सारे कंप्यूटरोंको एक दूसरेसे तारोंके ज़रीये जोडनेवाला षड्यंत्र है। "वै-फै" एक नया बिना तारोंके कंप्यूटरोंको जुडानेवाला बिजलीसे चलनेवाली व्यवस्था है। "सेल्ल्यूलर" या "मोबैल" टेलिफोन तारोंके बिना काम करनेवाला एक बहु उपयोगी यंत्र है। इस में एक ब्याटरी है जिस में बिजली उठती है। इस ब्याटरीको "री-चार्ज" करनेसे दस बारह घंटा चलानेसे खपी हुई ब्याटरीको पुनः बिजली देने में समर्थ करसकते हैं। मोबैल फोनको 4जी व्यवस्थाको जोडनेसे हमें इंटरनेटसे मिलनेवाली सभी सुविधायें बिना किसी तारोंसे जोडे हुए मिलती हैं। इन सब बातोंको किसी धर्मसे जुटाना अभी तक किसीने आवश्यक नहीं समझा है।

हमारा मोबैल इतना काम चलाता है की वह एक नया भगवान के तरह है। मोबैल फोन एक छोटासा मशीन है। लेकिन उसके पीछे एक बडा अंतरजाल जिसको नेटवर्क कहते हैं वह है। कहीं एक जगह एक इमारत में "सर्वर" नामक एक यंत्र रखते हैं। इस यंत्रको एक तार के ज़रीये एक लोहेकी मीनार जिसको "मोबैल टवर" कहते हैं उससे जोडते हैं। इस टवर पर "डिश" जो एक दो फूट व्यासकी लोहेकी थाली है उसको लगाते हैं। मैं इन सब नये विषयोंको हमारे धार्मिक चिंतनसे जोडकर मेरा विचार विश्वको सुनाऊँगा।

धर्मकी आवश्यकता

बिना धर्मके कोई परिवार भारत में जी नहीं सकता। जैसे हमारा नाम, पता, उमर, जनम तारीक, वार्षिक आय (व्युत्पत्ती), आदि विवरण या ब्योरा हर एक काम में बताना पडता है वैसे ही हमारा धर्म और जाती का परिचय हमको शिक्शण संस्था में दाखिल होने के लिये या नौकरी के लिये निवेदन करते वक्त ढ़ांचा भरने के लिये चाहिये। जो कोई ईसाई, बौध, जैन, सिख, फार्सी, मुसलमान, आदी गैर हिंदू धर्म में जनमे भारतीय व्यक्ती हो उनको धर्मके अलावा अपनी जातीको भी खुलासा करनेकी आवश्यकता नहीं है। इन धर्मों में जाती को मान्यता नहीं है। भारतके संविधान में हिंदुओंको चार वर्ग में बांटा गया है। दलित वर्ग वह है जिसमें सब पिछडे जातीके हिंदू शामिल किये गये हैं। सामान्य वर्ग (जनरल केटेगरी) वह है जिसमें ब्राह्मण आदी ऊँची जातियोंको शामिल किया है। आज कल हर एक प्रसूती को अस्पताल में करवाते हैं। शिशूका जनमको और माताका, पिताका नाम सरकारी रजिस्टर में दाखलात करवाना आवश्यक है।

शिशुका लिंग और वज़न तथा प्रसव होनेके बाद कितने समय में शिशुने पहली किरटी मारी (आवाज़ निकाला)। पिताका धर्म और जातीको भी जनम रजिस्टर में लिख लेते हैं। जनम का समय और तारीख लिख कर शिशुको कोई नाम रखा है तो उसको भी रजिस्टर में लिखा जाता है। इन सब विवरणोंको लिख कर एक जनम पत्र तय्यार करके शिशुके पिताको देते हैं। हमारा धर्म और जाती जनम से ही सिद्ध होता है। आज कल हर शिशुको अनेक बीमारियोंसे बचाने के लिये टीका लगाते हैं। भारत सरकारने इसकी व्यवस्था की हुई है। टी बी से बचने के लिये बीसीजी और हिपेटैटिससे बचने के लिये टीका हर एक धर्म के शिशुको जनमके तुरंत बाद देते हैं। हाल ही में हर एक धर्म और जाती के व्यक्ती को एक कार्ड जिसका नाम है "आधार" करवाना पड़ता है।

शिशुका आधार कार्ड बनाया जा सकता है। जब हम पासपोर्ट बनवाते हैं तो उस में हमारा धर्म का नाम दर्ज़ करने की आवश्यकता नहीं है। यह इस लिये की यात्रीको धर्मके कारण कोई असमानता का सामना न करना पड़े। हवाई ज़हाज़ में सभी यात्रियोंको एक समान व्यवस्था की जाती है। हिंदुओंको अलग आसन नहीं देते हैं। शुल्क में धर्मके आधार पर अंतर नहीं है। पुरुष हो या स्त्री हो सब प्रौढ़ व्यक्ती को टिकट के शुल्क में क्लासके आधार पर अंतर होता है। रैलगाडी में यात्रा करते समय किसी यात्रीका धर्म कोई भी हो उसको टिकटका शुल्क क्लासके प्रकार होता है। जनरल कंपार्टमेंट में टिकटका शुल्क कम है। फर्स्ट क्लास का शुल्क ज्यादा है। यात्री किसी धर्म का क्यों न हो हर एक यात्रीको हर एक क्लास में एक समान टिकट का शुल्क किराया चुकाना पडता है।

यात्रीका वय तो 60 से भी ज्यादा है तो उस व्यक्तीको सीनियर सिटिज़न का दर्ज़ा दिया जाता है। सीनियर सिटिज़न बुज़ुर्ग होते हैं। उनको किराये में डिस्कौंट देते हैं लेकिन लिंग या धर्मके आधार पर नहीं। वय के आधार पर देते हैं। हवाई ज़हाज़ में जो खाना परोसते हैं वह भी यात्रीका अपना प्रैव्हेट व्यक्तिगत मामला है। हिंदू लोग मांसाहारी भी होते हैं। मुसलमान सस्याहारी भी हो सकते हैं। हवाई ज़हाज़ में या रैलगाडी में यात्री जो चाहे वह खाना खरीद सकते हैं। किसी खानेकी चीज़ जो यात्रीको मिलती है उसको यात्रीने स्वयं परख कर खरीदना चाहिये। भारतकी सीमाके अंदर सब जगहों पर यात्राके समय ब्राह्मणोंको चाहिये तो सस्याहारी खाना मिल सकता है। लेकिन विदेश में मांसाहार ही ज्यादा प्रचलित होने के कारण विदेश यात्रा मे जाने वाले ब्राह्मण लोग ज्यादा तर भारतीय विमान में ही सवार करते हैं।

भारतीय विमान कंपनियोंको सस्याहारी खाना भारतीय शैली में बनानेकी व्यवस्था करना आसान है।

विदेशी विमान कंपनियोंको भारतीय रसोइया या बावरचियोंको नियुक्त करना मुश्किल होता है। फिर भी यात्रियोंको अपना खाना च्यवन करने में और यात्राको सुखदायक होनेके लिये जो भी विमान में भारतीय मूलके यात्री ज्यादा हैं तो उन विमानों में भारतीय खाना परोसते हैं। जबसे भारत में अस्पर्शता निरोधी कानून लागू हुआ है तबसे कोई व्यक्तीको जातीके आधार पर घृणा नहीं दिखाते हैं। छूताछूत पद्धती अब चालू नहीं है। किसी व्यक्तीका उसकी जातीको लेकर बुरा व्यवहार करना जैल भेजनेवाला जुल्म है।

सारे हिंदुस्तान में आज कल अस्पर्शता को ज़डसे निकाल दिया है। भारतको स्वातंत्र्य ईसवी 1947 में मिलनेके बादसे पिछडे जातीके लोगोंका स्वाभिमान बढ़ा है। अनुसूचित जाती और जनजातियोंके लोगों के जीवन में पिछले पचास वर्षों में अच्छी प्रगती हुई है।

शिक्शा संस्थाओं में और सरकारी नौकरी में पचास प्रतिशत आरक्शण होनेके कारण इन वर्गों के लोगोंको अपना धर्म और जाती को घोषित करना ज़रूरी है। अन्यतः कहीं भी किसी को अपना धर्म या जाती का खुलासा नहीं करना पड़ता है।

तो फिर हम क्यों हमारे धर्मको जीवन में आवश्यक समझते हैं? क्यों की हर एक व्यक्ती अपने जीवन में सुरक्षा चाह्ता है। अपनी सुरक्शा स्वयं जैसे लोगोंके साथ गठबंधन करनेसे मिलती है। यह सुरक्षा पुलीस वालोंके हवाले नहीं करसकते हैं। अब भी हम अपनी भाषा बोलने वालों के साथ में सुरक्शा महसूस करते हैं। हिंदू मंदिरों में हाज़िर होने वाले सब लोग एक दूसरों को अपना समुदाय का सदस्य के रूप में देखते हैं। एक जुट होते हैं। अगर वह मंदिर अपने इष्ट देवताका मंदिर हो तो उसमें व्यक्ती स्वयंको सुरक्षित मानने लगता है।अब बहुत कम लोग संस्कृत जानते हैं। इस्कूल में बहुत कम छात्र संस्कृतको अपना पठ्य विषय बनाते हैं। संस्कृत लेने वाले छात्र बहुत कम हैं।

आज के नवजवान जो आगे देश चलाने वाले अफसर होंगे, सांसद होंगे, पंचायत सभाओं में ज़िला परिषदों में नेता बनने वाले होंगे कभी संस्कृत सीखते नहीं। जो भी मंदिरों में, त्योहारों में, पूजा पाठों में वेद या पुराणों में से लिये हुए संस्कृत श्लोक और मंत्रोंको पंडित लोग सुनाते हैं उनको हम समझेंगे नहीं क्यों की हम संस्कृत जानते नहीं।

इन श्लोकोंको और मंत्रोंको स्थानीय भाषा में अनुवादित करना चाहिये। सब को उनका अर्थ मालूम होना चाहिये। स्थानीय भाषा में अनुवादित संस्कृत श्लोक या मंत्र अपना गांभीर्य खो देनेका अनुमान है। लेकिन जिस श्लोकका अर्थ हम नहीं जानेंगे उसको पंडितने सुनाया तो कौन उसको सुनेगा? अनेक विद्वानोंने सारे संस्कृत शास्त्रोंकी व्याख्यायें और टीकायें बहुत बार लिखी हुई हैं। लेकिन श्लोकको और मंत्रको संस्कृत में ही अब भी पढ़ते हैं। सब विद्वान लोग वही एक श्लोकको व्याख्या विविध अर्थ देके विवरण देते हैं। उदाहरण के लिये अगर कोई पंडित पूजा करते वक्त किसी संस्कृत श्लोकका कन्नड अनुवाद बोलेंगे तो कैसे होगा? अच्छा ही होगा।

आम आदमीको ऐसी पूजा कन्नड में करने से सारे गतिविधियाँ समझ में आयेंगी। अगर आजके नवजवानोंको हिंदू धर्मको ठीक तरहसे समझाना है तो पंडितोंने और पुजारियोंने पूजा के श्लोकोंको और मंत्रोंको स्थानीय भाषा में रचा कर पढ़ना चाहिये। हिंदुओंने सारे धार्मिक विधियोंको संस्कृतके बदले स्थानीय भाषा में चलाना चाहिये।

जो भी श्लोक या मंत्र पंडित पूजा पाठ करते वक्त पढ़ते हैं उनको स्थानीय भाषा में तर्ज़ुमा करके पढ़ना चाहिये। संस्कृत एक पठ्य विषय तो कालेजों में है। संस्कृतको अच्छी तरहसे सीख कर वेदोंका और पुराणोंका अर्थ हम ही निकाल लेंगे तो हम उनका मूल मतलब समझेंगे। लेकिन संस्कृत सीखना आम आदमी को असाध्य है। इस्कूलों में जब स्थानीय भाषाको सिखाते हैं तब उसी भाषा के श्लोकोंको समझना आसान होगा। अंग्रेज़ोंने ईसवी 1785 के बाद उनके कब्जे में आये हुए बस्तियों में इस्कूलोंकी स्थापना की। उससे पहले हिंदुस्तान में सिरफ मंदिरों में और मठों में संस्कृतको प्रथम पठ्य विषय बनाके पाठशालायें चलायी जाती थीं।

स्थानीय भाषा और गणित सिखाया जाता था। नब्बे प्रतिशत लोगोंको मंदिरोंके या मठोंके पाठशाला में दाखलात होता नहीं था। ब्राह्मणोंको पाठशालाओं में प्रवेश पहले कराते थे। निचले जाती के लोगोंको पाठशालाओं में प्रवेश मिलना असंभव था। पूजाओं में शामिल होनेवाले भी ज्यादा ब्राह्मण ही थे।

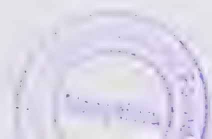
लेकिन अब सब लोगोंको इस्कूलों में कई पठ्य विषयोंको पढ़ने की सुविधा है। अब नब्बे प्रतिशत लोग अक्षर लिखना पढ़ना जानते हैं। अब वेदोंको और अन्य हिंदू शास्त्रोंको स्थानीय भाषा में तर्ज़ुमा करके सब को पढ़ने देना चाहिये। आज के नवजवान आँख बंद करके हिंदू कहलानेको नहीं चाहेंगे। सब शास्त्रोंका अर्थ हिंदू नवजवानों को समझ पडेगा तो उनको हिंदू बने रहने में रुची लगेगी। हमारी अगली पीढी जो हमारी पीढीके बाद आती है संस्कृत में लिखी हुये हिंदू शास्त्रोंको पढ़ने में रुची नहीं दिखायेगी। अपनेको हिंदू कहलाने में उनको इच्छा नहीं रहेगी। मंदिरों में और मठों में गतिविधियोंको सरळ बनाना चाहिये।

पूजा और प्रार्थनाओंको अर्थपूर्ण बनाना चाहिये। संस्कृतके साथ साथ स्थानीय भाषाको बल देना चाहिये। भारतीय संविधानके तहत किसी मठको संस्थानका दर्जा नहीं हो सकता। कोई भी मठ स्वतंत्र भारत का एक अंग है। मठोंने भी भारतके सारे कानूनोंका पालन करना चाहिये। प्राचीन हिंदू धर्म जो वेदों में और अन्य शास्त्रों में हम पढ़ते हैं वह काल के अनुसार समय बीतते बीतते बहुत धीरे परिवर्तित हुआ है।

क्रिस्तानंतरकी नौवी सदी में शंकराचार्यने वेदोंका अर्थ अपने ही रीती में सुनाकर अद्वैत सिद्धांत पेश करके हिंदू धर्मको आधुनिक बनाया। मध्वाचार्यने द्वैत सिद्धांतको सामने रखकर और एक बार हिंदू धर्म का सुधारण किया। रामानुजाचार्यने भी विषिष्टाद्वैत को दर्शाया। लेकिन सब मनुष्योंको इस विश्व में प्रकृती की संपत्ती पर एक समान हक होता है इस सिद्धांतको सत्रहवीं शताब्धी में अंग्रेज़ोंने सारे विश्व में प्रचार किया।

पंद्रहवीं शताब्धी में जब युरोप में बडे बडे समुद्रगामी ज़हाज़ बनाये गये तब कई शूर नाविक असामान्य धैर्य थामकर महासागरों में चल पडे। समुद्रके उसपार क्या है देखने के लिये निकल पडे। इससे पहले अनादि काल से वेनीस वगैरह युरोपके देशोंसे कई साहसी व्यापारी युवक भूमार्ग पर रेशम मार्गको लेकर पूर्व में स्थित हिंदुस्तान, चीन, आदी देशोंके व्यापारियोंके साथ तरह तरहके रेशम, मोती, वज्र आदि म्हाल खरीदने के लिये आते थे। ऐसे एक साहसी मार्को पोलो नामक वेनीशिया के युवकने तेरहवीं सदी के अंतिम वर्षों में चीन की यात्रा की।

चार पांच बरस पर्सिया, हिंदुस्तान, टोबेट, चीन वगैरह देशों में घूमनेके बाद जब वह वापस अपने देश आया तो उसको किसी एक अपराध के लिये जैल जाना पडा। जैल में उसने अपनी यात्राके बारे में एक पुस्तक लिखा। इस पुस्तकको अन्य देशोंके लोगोंने पढ़ा तो उनके वीरोंको भी पूर्वी देशों में जाकर जैसे हो सके वैसे अपना और अपने देशका भविष्य उज्वल करनेकी आशा पैदा हुई।



चौदहवीं सदी में युद्ध और अशांतीके कारण यूरोपके व्यापारियोंका पूर्वी देशों के तरफ जानेवाले भूमार्गको मुसलमान राजाओंने बंद किया। इस लिये युरोपके राजाओंने निश्चय किया की पूर्वी देशोंको पहुंचने के लिये अन्य कोई मार्ग है तो ढूंढेंगे। समुद्र मार्ग है तो बडे बडे नावों में जाना पडेगा। इस्पेय्न, पुर्तुगाल, आदी देशोंके राजाओंने एक जुट हो कर साधनोंको जुटा कर कोलंबस नामक एक नाविक अधिकारीको पश्चिमकी ओर भेजा। अगर पृथ्वी गोल है तो यह नांव पृथ्वीके पीछे से पूर्व पहुंचेगा।

कोलंबस अट्ळांटिक सागर पार करके वेस्ट इंडीस द्वीप समूह पहुंचा। उसने इस द्वीप समूह को पूर्वके देश समझा। एक अपने सहनाविकको वापस युरोप भेज कर अपने राजाओंको बताया की मैं इंडी में लंगर डालके बैठा हूँ।

पोर्तुगालके राजाने अपने वास्को ड गामा नामक नवसेनानीको पूर्वकी तरफ एक बडे नाव में इंडियाका शोध करने के लिये भेज दिया। वास्को ड गामाको पुर्तुगालसे निकल कर पहले दक्शिण दिशा में जा कर आफ्रिका भूखंडका चक्कर काटना पडा।

फिर वास्को ड गामा पूर्वकी दिशा में तैर करके दक्शिण हिंदुस्तान की पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित कोळीकोड शहर आ पहुंचा। वास्को ड गामाको वास्तविक हिंदुस्तान हाथ लगा। आगे उसने श्रीलंकाकी परिक्रमा करके मलया आदी देशोंका पता लगाया।

युरोपके राजाओंको और लोगोंको अपना ईसाई धर्म प्रचार करके सारे पूर्वी देशोंके निवासियोंको ईसाई बनानेकी इच्छा पैदा हुई। इसीलिये ईसाई पादरी और मादरी जो उनका धर्म गुरु हैं हिंदुस्तान आये। इधर उन्होंने मलयाळम भाषा सीखी। कन्नड भाषा सीखी। कोंकणी, तमिळ, उर्दू, बंगाली आदी भाषाओंको भी सीख कर अपना ईसाई मत प्र्चार करनेके लिये गिर्ज़ा घरोंको बनवाया। युरोपके विद्वानोंको भारतीय संस्कृतीका परिचय हुआ। उन्होंने देखा की हिंदुस्तान में मानवीक असमानता तीव्र है।

जो कोई युरोपका सैन्याधिकारी आफ्रिका पहुंचा उसने आफ्रिका में अपने देश का झेंडा एक शहर में पहरा कर उस शहरके मुखियाको अपने तरफ खेंचा। उनको अपना सफेद चेहरा दिखाकर मुग्ध किया। आफ्रिकाके लोग काले बदनके हैं। उन लोगोंने कभी गोरे आदमीको देखा नहीं था। युरोपके लोग सब गोरे लोग हैं। आफ्रिका में युरोप देशोंकी बस्तियाँ बसाई गई। आफ्रिकाके नीग्रो लोगोंको नावों में जानवरों की तरह ठसा ठस भरके युरोपके खेतों में काम करवाने के लिये भेज दिया। इन नीग्रो लोगोंको जानवरों जैसे बेचना शुरू हुआ। आफ्रिकाके नीग्रो गुलामोंको अमेरिका में भी बडी माँग थी। बाद में सारे विश्व में नीग्रो का व्यापारके विरोध में इंग्लेंड में ज़ोर से आवाज़ उठा। अठारहवीं सदी में अमेरिका में भी नीग्रो का व्यापार के विषय पर अमेरिकाके दक्शिणके और उत्तरके नागरीकों के बीच आपस में सिविल युद्ध हुआ। युद्ध में उत्तर समुदायकी सेना जीत गई।

आफ्रिकाके नीग्रो लोग भी मनुष्य जातीके ही हैं। महात्मा गांधीको सौतआफ्रिका में वर्ण भेद का चोट लगा था। युरोपके लोगोंने भारतीय मूलके लोगोंको सौतआफ्रिका में समाज में निचले स्तर पर रखा। इन "कलर्ड" जनोंसे असमानताका बरताव करते थे। महात्मा गांधी जब भारत लौट आये तब उन्होंने अस्पर्शताके विरोध में आंदोलन किया। इसके फलस्वरूप सारे विश्व में समान मानव अधिकार का चिंतन ज़ोर से उठा। समानता को प्रतिपादित करके अठारहवीं शताब्धीके अंतके वर्षों में भारत में राजा राम मोहन राय नामक एक बंगालके नेताने हिंदू धर्म में बहूत तरहके सुधार लाये। ब्राह्म समाज नामक एक संस्था बंगालके ही केशव चंद्र सेन नामक नेताने ईसवी 1866 में स्थापन किया। 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वतीने मानवीय समानता और जातिरहित समाज बांधने के लिये आर्य समाजकी स्थापना की। हिंदू धर्म में इस बदलावको पहले सामने रखना चाहिये।

मनु स्मृती में चार जातियों को लिखा है। ब्राह्मण जो ब्रह्माके शिरके समान है पहले स्थान पर है। क्शत्रिय जो राजा बनता है, सैनिक बनता है, लड़ता है, देशको विदेशी आक्रमणसे बचाता है वह दूसरे स्थान पर ब्रह्माके भुज और हाथों जैसे है। ब्रह्माका शरीरके समान जो व्यापारी लोग, शेतकरी लोग, वैद्य लोग, लोहार, धोबी, तेल निकालनेवाले, आदी लोग वैश्य जाती के हैं। शूद्र उनको कहते हैं जो साफ करते हैं। सामान भरते या लादते हैं। शूद्रोंको ब्रह्माके हाथ पाँव कह कर मनु ने पुकारा है। मनु ने कहा था की जातियाँ वृत्तीकी होती हैं जनम की नहीं। लेकिन जब एक वैद्यके परिवार में वैद्यका बेटा वैद्य वृत्तीको अपनाता है सौ सौ पीढ़ियाँ ऐसे ही वैद्य बनते हैं तो वे सब वैद्य जाती के कहलाते हैं। पिताकी वृत्ती ही बच्चोंकी वृत्ती हो गयी तो वही उन लोगों की जाती भी होती है।

मैं इस पुस्तक में हिंदू धर्म जिस में बहुत बदलाव आया है उसको बताने का प्रयास करता हूँ। क्यों किसी हिंदू को अपना धर्म आवश्यक है इसका भी उत्तर दूँगा।

हिंदू भगवान

मैंने धर्म शास्त्रोंको और ग्रंथोंको पढ़ा है। बचपनसे ही मैं ईश्वर के दर्शनोंको पढ़ते आया हूँ। लेकिन मुझे अब समझ में आया है की हम भगवान के बारे में बेमतलब चर्चा करते हैं। भगवान हिंदुओंका हो या ईसाइयोंका, इस्लामका हो या दूसरे किसी मतका। हमें भगवानका पता नहीं लगा है। विज्ञानियोंने भगवानको ढूंढ़ना छोड दिया है। हमारा भगवान कैसा भी हो हम उस भगवान पर भरोसा करके उसकी पूजा करसकते हैं। हमारे भगवानको हम रूप और आकार दे कर उसकी मूर्ती बनाकर उसको बिठाने के लिये एक मंदिर बनाकर जैसे चाहे प्रार्थना और पूजा करसकते हैं। हमें हिंदुस्तान में ऐसे करनेसे कोई रोकेगा नहीं। उस मूर्तीको एक रथ पर बिठाकर जुलूस भी निकाल सकते हैं। अगर बडा जुलूस निकालनेका इरादा है तो पहले पुलीसवालोंकी अनुमती लेना पड़ेगा। अगर भारी भीढ़ जमा होनेकी संभावना है तो पुलीस थानेसे सुरक्षा माँगना अच्छा है। लेकिन अपने भारतमें हमारा भगवान बिना किसी झंझटसे हमारे साथ रह सकता है।

चारों वेद पुराणोंसे भी पुराने हिंदू शास्त्र हैं। वेदों में "यज्ञ" को बहुत महत्व दिया है। तत्वों का विचार करना जैसे ज़रूरी है वैसे ही यज्ञका आचरण करना ज़रूरी है। याग, होम और यज्ञ आज कल बहूत कम जगहों में किया जाता है। जो कोई धुँवां होम करते वक्त हवा में जाता है उसको आज कल प्रदूषणका दर्जा दिया गया है। शहरों में दस साल पहले कूडा कचरा जला कर भस्म करते थे। कूडा कचरा कहीं दूर ले जाकर फेंकनेकी या परिष्कार करनेकी ज़रूरत नहीं पडती थी। अब किसी मुन्सिपालिटी के नौकराणीने कूडा कचरा जलाया तो उसको दंड देते हैं। फिर भी जैसे हम घरके अंदर सिगरेट पी सकते हैं वैसे ही हवनकी अग्नीको अपने घर में जला सकते हैं। लेकिन आज कलके शास्त्रज्ञोंने बताया है की यज्ञ का अर्थ सिरफ हवन करना नहीं बलकी अपने जीवनको यज्ञ रूपी बनाना है। अथर्व वेद (11.1.15) में एक मंत्र है। ऊर्जो भागो निहितो यः पुराव ऋषि प्रतिष्टाप आ भरैता॥ अयं यज्ञो गातु विन्नाथवित् प्रजाविदुग्रः पशुविद्वीरविद्वो अस्तुः॥ इसका अर्थ है, "शुभ कार्योंको करना यज्ञ करना है"।

अच्छे काम करने से हमें हमारा पथ याने जीवन पथ साफ दीखेगा। अच्छे कामों से हमारा ऐश्वर्य बढ़ेगा। हमारे बच्चे भी अच्छे काम पर लगेंगे। हमें अच्छे पशुओंकी संपत्ती मिलेगी। हमारे प्राणमें उग्र शक्ती आजायेगी। वेदों में भगवान को "सविता" कह कर पुकारा है। सविताका अर्थ है "प्रेरक ज्योतिस्वरूप प्रभु"। मैं समझता हूँ की सूर्य विश्वका प्रेरक है। सूर्य ही एक तरह की ज्योती है। सामान्य हवन जो हम घर में करते हैं वह वेद मंत्रों को पठण करते हुए करना चाहिये। जब पुराणोंको लिखा गया तब भगवानकी मूर्ती बनाकर प्रार्थना करने का अभ्यास शुरू हुआ। वेदों में जो भी ईश्वरके नाम हैं उन नामोंको कथाओं में जोड़कर पुराणोंको लिखा गया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तीनों की कहानियाँ सुननेको बहुत अच्छा लगते हैं। लेकिन इन कहानियाँ अलौकिक हैं। उनमें वास्तविकताको ढूंढ़ना गलत है। शिव को चार हाथ नहीं हैं। ब्रह्म और विष्णु को चार चार हाथ दिये हुए हैं। हर एक पुराणोंके देव को एक मंदिर बनाया गया। उस मंदिर में जिस भगवान की मूर्ती रखी है उसी भगवान का नाम उस मंदिरको दिया जाता है।

अब ईश्वर है की नहीं? यह प्रश्न विश्व में किसीको अब उठाने की ज़रूरत नहीं है। हर एक आदमीको यह अधिकार भारतके संविधान में दिया हुआ है की वह ईश्वरको माने या न माने उसको सामाजिक और आर्थिक विषयों में समान न्याय मिलेगा। वह भारत देश का एक पक्का नागरीक बनके रहेगा। लेकिन अगर उसको अपने काम धंधे में प्रगती करनी है तो उसको बिना किसीका संपर्क के अकेला जीना मुश्किल हो जायेगा। हमें दोस्त चाहिये। हमारे बच्चोंको अच्छे इस्कूल में भरती करवाना है। दूकान में व्यापार चलाने के लिये बिरादरी बढ़ाना चाहिये। मंदिरों में पूजा में शामिल होना चाहिये। तो मूर्तिपूजाको खंडन करने से मंदिरों में त्योहारों में भाग लेना मुश्किल हो जायेगा। हमारे बच्चोंकी शादी कराने के समय हमारा कुल, वंश, वगैरह देखते हैं। लेकिन अब सब बच्चे एक समान पोशाक पहनते हैं। एक समान खाना खाते हैं। वही एक भाषा याने अंग्रेज़ी भाषा बोलते हैं। अंतरजातीय विवाह सामान्य होते आये हैं। "हम हिंदू हैं या मुसलमान हैं यह फरक पडता है क्या?"

बहुत जलदी माने ईसवी 1772 में अंग्रोज़ोंने अपनी हिंदुस्तानी बस्तीकी राजधानी को मद्रासससे कोलकत्ता को स्थानांतर किया। ईसवी 1799 में चौथे एंगेलो-मैसूरु युद्धमें टिप्पु सुल्तान मारा गया। तब अंग्रेज़ोंको मैसूरुके अलावा और कई छोटे संस्तान प्राप्त हुए। ईसवी 1803 में अंग्रेज़ोंने दिल्लीके मुघल बादशाहको हराकर उसको लाल किलेमें बंधक बना कर रखा। ईसवी 1818 में अंग्रेज़ी सेनाने सतारामें मराठा पेश्वाके सेनासे लढकर पश्चिमी हिंदुस्तानके ऊपर अपना कब्जा बनाया। सारा हिंदुस्तान अंग्रेज़ी आधिपत्यमें आया और इतना बडा देश सारा अंग्रेज़ी संस्कृतीसे थोडा बहुत प्रभावित होगया।

हिंदुस्तानके हज़ारों अमीर लोगोंके बच्चे अंग्रेज़ी सीखनेकेलिए इंग्लेंड गये। इंग्लेंड और दूसरे यूरोपियन देशोंसे व्यापारी लोग, अन्य व्यवसायके लोग, कलाकार, साहिती, ईसाई मिशनरी लोग सबको अंग्रेज़ी सरकारने हिंदुस्तानमें घुसने दिया। इन सब लोगोंने हिंदुस्तानके हर बडे शहरमें स्थानीय लोगोंको युरोपियन संस्कृतीका परिचय दिया।

सारे हिंदुस्तानमें ईसाई धर्मको ऊंचा दर्जा मिला। हिंदू मुस्लिम दोनों धर्मके लोगों पर पाश्चात्य संस्कृतीकी छवी आ बैठी। अंग्रेज़ोंने अपने इंग्लेंड में जैसे इस्कूल और कालेज बनाये थे, वैसे ही उनकी अपने कब्जे में आयी हुई बड़ी बस्ती हिंदुस्तान में भी नये इस्कूलोंको स्थापित किया। इस्कूलों में और कालेजों में पढ़े हिंदुस्तानी नवजवानोंने अपने हिंदू धर्म को अंग्रेज़ोंका ईसाई धर्मसे तोलना शुरू किया। ब्राह्म समाजकी सृष्टी हुई और पुराणोंको कपोलकल्पित कहानियों का दर्जा दिया। हज़ारों युवकोंने नये ब्राह्म धर्मको स्वीकार किया। थोड़े समय बीतने पर आर्यसमाजकी स्थापना हुई। ब्राह्म समाजियोंने यज्ञोपवीत का बहिष्कार किया था। लेकिन आर्यसमाजने यज्ञोपवीत को हिंदू धर्मका एक अनोखा चिन्ह बताया। ब्राह्म समाजियोंने हिंदू धर्मके सभी परिचयात्मक चिन्होंको उठाकर फेंक दिया। लेकिन आर्यसमाज में वैदिक रीतियोंको पुष्टी दी है। संध्यावंदन, हवन, सोलह संस्कार, आदियोंको बरकरार रखा।

ब्रिटिष हुकूमतके नीतियोंके ज़रीये जो हिंदू धर्म में प्रगती हुई उसके परिणाम स्वरूप हिंदू धर्मके गुरुओंके हाथोंके नीचे से उनका धर्म पर आधिपत्य फिसल कर गिरा। धर्म गुरुओं की बात कोई सुननेको तय्यार नहीं था। ईसाइ धर्म में येसु क्रिस्तको ईश्वरका बेटा बताया है। ईश्वरका नाम है "गोड"। ईसाई धर्म में सिलुबी जिस पर येसू की मृत्यू हुई थी उस सिलुबीको परिचयात्मक चिन्ह बनाकर बड़ा महत्व दिया है। इस्लाम धर्म में अल्लाहको नमाज़ करते समय कोई भी मूर्ती नहीं रखी जाती है। मेक्का में जो काबा है उसका परिक्रमण हज यात्री ज़रूर करते हैं। अगर कोई विचार एक धर्म बनता है तो उसमें ईश्वरका अस्तित्व अपने आप सिद्ध होता है। अगर मतको मानते हैं तो ईश्वरका अस्तित्वको भी मानते हैं। लेकिन हिंदू धर्म एक ऐसा है जिसमें नास्तिक लोगोंको भी सदस्य बननेका अवसर है। हिंदू अपने ईश्वरको किसी नामसे पुकार सकता है।

हिंदुओंका ईश्वर कौन हो, कैसे हो, यदी गुणवान हो या निर्गुण हो, साकार हो या निराकार हो, आदी सारे विषय निर्णय करना हर एक व्यक्तीका अपना स्वातंत्र्य है। अपने देवको राम कहो, कृष्ण कहो, शिव कहो या विष्णू कहो इन कोई विषयोंसे हिंदू धर्म में फरक नहीं पडता। जैसे हर अन्य धर्मों में ईश्वर सर्वांतर्यामी है, सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है वैसे ही हिंदू भगवान भी है। कई हिंदू लोग विशेषतः स्त्रियाँ देवियोंको अपना इष्टदेवता मानते हैं। जैसे महालक्श्मी, पार्वती, दुर्गा, काली, वगैरह। केरळ राज्य में माँ भगवती को अति श्रेष्ट देवी मानते हैं। गोवा राज्य में महालसा (म्हाळषी) देवी को अव्वल दर्जेकी सर्वशक्तिमान देवी मानते हैं। लेकिन विद्वान लोग कहते हैं की इन सब देवी देवता वही एक भगवान शक्तीका द्योतक हैं। कई हिंदू जन कहते हैं की कोई भगवान नहीं बलकी केवल एक शक्ती है। कई हिंदू जन कहते हैं की उनको भगवानसे कोई लेना देना नहीं और इसीलिये वे भगवान के बारे में कोई अपना विचार प्रकट नहीं करेंगे।

आधुनिक इतिहासज्ञ कहते हैं की वेदोंको क्रिस्त पूर्व लगभग तीन हज़ार सालों पहले (कुल पांच हज़ार बरस पहले) बनाया गया था। हिंदू पंडित कहते है की विश्वका रचयिता ईश्वर जो है उस भगवानने सबसे पहले कुछ अपने आत्मीय ऋषियोंको बुलाकर कहा की अब ध्यानसे सुनो। मैं तुम लोगोंको वेद सुनाता हूँ। इसमें सारा ज्ञान है। हर मनुष्यको अपना जीवन सुखदायक करने के लिये जो भी ज्ञान चाहिये वह सब इसमें है। तुरंत उन ऋषियोंको दिमाग में एक विचित्र अनुभव हुआ। ईश्वरने उनके दिमाग में वेदोंको बीजांकुरित किया। इन ऋषियोंने इन वेद मंत्रोंको मूँहपाठ किया। हर दिन सुबह शाम इन मंत्रोंको पाठ करनेसे उनको इन सभी मंत्रोंका कंठपाठ हुआ।

सब हिंदू मनुष्योंको अपना जीवन अच्छे तरहसे बिताने के लिये भगवानने वेद मंत्र जीवन का मार्गदर्शक के रूप में दिये हैं। वेद हमारे जीवन पथका निर्देशक है। मैं समझता हूँ की उन ऋषियों ने इन वेद मंत्रोंको अपने बच्चोंको और अन्य शिश्योंको बताया और उनसे भी इनको कंठपाठ करवाया।

भगवानने इन ऋषियों पर भरोसा किया की वे इन मंत्रोंको उनके मरनेके बाद नाश नहीं होने देंगे। यह पता नहीं की भगवानने फिर किसी समय कोई अन्य ऋषियोंको वेदों का खुलासा किया था। यह भी पता नहीं की पहलेके ऋषियोंने उन मंत्रोंको ज्यों का त्यों अपने पीढ़ीको मनांतरण किया था या अनदेखीसे या जानबूझकर उनमें कोई बदलाव किया होगा की नहीं। हिंदू धर्म में अचल विश्वास रखनेवाले कट्टर पंथी संत, स्वामी, सन्यासी, साधू, धर्मदर्षी, आदी सब विद्वान यही कहते हैं की वेदोंको ईश्वरने ही मानवको दिये हैं।

यह भी कहते हैं की ईश्वर चाहता है की हर एक मनुष्य वेदों में दिये हुए नीतियोंको अनुसरण करें। ऐसे कहकर हिंदू बुद्धिजीवियोंने वेदोंको अमानवीय प्रामुख्यता दी है। वेद कोई मनुष्यने रचाये हुए धर्मग्रंथ नहीं बलकी भगवानने स्वयं मानवको दिये हुए मार्गदर्शक उपदेश हैं। मैं इस सिद्धांतको बिना सोचे मानते आया था।

लेकिन अब मुझे संदेह होता है की कभी कोई मनुष्य मुझसे भी बडा था? ज्यादा अक्कलमंद था? कोई मनुष्य कभी सुपरम्यान (अतिमानव) हो सकता है? जैसे मैं आज अपने हिसाबसे एक ऋषी हूँ लेकिन मुझमें कोई अतिमानवीयता दीखती नहीं तो मुझे क्यों ईश्वर बुलाता नहीं? क्यों मुझे भी वेदोंको सुनाता नहीं? विज्ञानी और तंत्रज्ञानियोंने अब बताया है की वेद भी ऐसे ही शास्त्र है जैसे अन्य मतोंके ग्रंथ हैं। वेदोंको प्राचीन विद्वांसोंने रचाया है। उसमें कोई भगवान का हस्तक्शेप नहीं है। अगर कोई इस विचारको नहीं मानना चाह्ते हैं तो मुझे कोई ऐतराज़ नहीं है। इसके कारण अंतरमतीय युद्ध नहीं होना चाहिये। धर्मों का पहला बोधन है की "सर्वे जनाः सुखिनो भवंतु" मतलब सब जनोंको सुख मिले। हिंसा छोडो। शांतीका पालन करो। किसीको जानसे मारो मत। किसी स्त्री पर बलात्कार बिलकुल मत करो। हम हमारा धर्म जैसे चाहे वैसे चला सकते हैं। अन्य धर्मोंके लोगोंको भी अपना धर्म जैसे चाहे वैसे पालन करने दीजिये। झगडा करके समाज में दुःख को बांटो मत। बदले में प्रेम बांटो।

वेदों में और पुराणों में जो ईश्वर दर्षाया हुआ है उस ईश्वरको भूकंप, बाढ़, अतिवृष्टी, अनावृष्टि, सूखा अकाल, तूफान, आदियोंसे मनुष्योंको बचानेका उपाय मालूम है। ईश्वरको इन सब प्राकृतिक कंटकोंको चलानेका या रोकनेका सामर्थ्य है। लेकिन कभी कभी ईश्वरको यह आवश्यक होता है की मनुष्योंको उनके पापोंको भोगने के लिये दंड देना पडता है। मनुष्योंने कोई पाप याने दुष्कर्म किया हो तो उसके बदले मनुष्योंको एक नहीं तो अनेक तरहका दंड ईश्वर देता है। ईश्वर देखता है। और पापियोंको दंड देता है। वेदों में वायु, अग्नी, आकाश, जल, भूमी आदियोंको भी प्रशंसा की है। उनकी स्तुती भी की गयी है। प्राकृतिक इकाइयोंको बहुत महत्व दिया है वेदों में। इन को वेदों में देवताका स्थान दिया है। भगवान देव है और वायु आदि देवता हैं। देव का आरंभ क्शण या अंतिम क्शण नहीं है। वह अनादि और अनंत है। विद्वान मानते हैं की ईश्वर निराकारी, निरूपी, निर्वर्णी, निरामय, आदी से संपन्न है। इस ब्रह्मांडका एक मात्र अधिपति और व्यवस्थापक है।

देवताओंको अपने विभाग का स्वतंत्र प्रभार दिया है जिससे वरुण बारिषका देवता नियुक्त किया हुआ है। वरुण नदियोंका, समुद्रका, महासागरोंका. तलावोंका आदि जल संपत्तीका भी देवता है। अग्नी देवता आग को संभालता है। इस ब्रह्मांड का निर्माण प्राकृतिक चीज़से हुआ है। ईश्वरने प्राकृतिक चीज़ को इस्तेमाल करके जगत बनाया। कारण वस्तु जो था उसको कार्य के माध्यमसे साकार ब्रह्मांड बनाया। धीरे धीरे इस ब्रह्मांडको मनुष्यने नागरीकता दी। ब्रह्मांडको बनानेवाले ईश्वरके स्वरूपको ब्रह्म कहते हैं। देव सिरफ स्वयं ने बानाया हुआ जगत को केवल देखता है। देव जगत को भोगता नहीं। जगत में ज़ड पदार्थ है और जीवित (जैविक) कृतियाँ भी हैं। जल में मछलियाँ पैदा होती है। मछलियोंका शरीर ज़ड प्राकृतिक वस्तू से बनाया गया है। पहले एक बार किसी मछलीमें जीव स्थापित हुआ तो फिर वह जीव उस मछलीके सभी पिल्लोंमें आगया। मछलीके बाद उरग याने सर्प बने। सर्पके बाद चौपादी प्राणियाँ बनी। आखिर में मनुष्य प्रत्यक्श हुआ। मनुष्य अन्य प्राणियोंसे भिन्न है क्योंकी मनुष्यका मेंदू (मस्तिश्क) शरीरके हिसाबसे अन्य प्राणियोंके मेंदूसे बडा है।

क्रिस्त पूर्व छवी सदी में भगवान बुद्धने और जैन मुनियोंने कहा की हर जीवित जंतू, जानवर या जन में एकसा आत्मा है। जंतू, पक्षी, प्राणी आदियोंको मारना हिंसा है। उससे पहले क्या हिंदू लोग मांसाहारी थे? नहीं कहते हैं हिंदू पंडित। नहीं कहते हैं वैदिक विद्वान लोग। मगर बौध और जैन धर्मोंने हिंदुस्तान में प्राणी हत्याको पाप बताकर सस्याहार को बढावा ला दिया। ब्राह्मण लोग कट्टर सस्याहारी बने। ईसाई धर्म में प्राणियोंको मारकर उसका मास सेवन करना निषिद्ध नहीं है। इस्लाम धर्म में भी हलाल तरीके से प्राणी की हत्या करके उसका मास खाने में कोई प्रतिबंध नहीं डाला है। हिंदुओं में भी ब्राह्मण छोडकर अन्य जातियाँ मछली, मुर्गी, मेष आदी मृगोंको काट कर खाते हैं। गौड सारस्वत ब्राह्मणों में कई घरों में और गोवा के बहुतेक घरों में मछलीको जल पुष्प का स्थान दिया है। मछली जो जल पुष्प है उस्को काटके शुद्ध करके पकाके खाने वाले हिंदू लोग अधिक संक्या में पाये जाते हैं

बौध धर्म हिंदुस्तान में क्रिस्तानंतर दूसरी सदी तक प्रबल था लेकिन बाद में पुराणों ने अपना मूर्तिपूजक सनातन धर्मको राजाओंके और प्रजाके सामने पेश करके हालत बदल दिया। भगवान बुद्धने और जैन मुनियोंने कोई ईश्वरको अपने धर्म में बतलाया नहीं। ईश्वर का अस्तित्व भी इन धर्मों में कबूल नहीं किया है। ईश्वर की पूजा या प्रार्थना करने के जगह बौध और जैन धर्म में बुद्ध और जैन मुनियोंकी याद की जाती है। "बुद्धं शरणं गच्छामि" कहते हैं बुद्ध के अनुयायी। क्रिस्तानंतर नववी सदी में फिर से वेदों का और पुराणोंका ईश्वर हिंदुस्तान में राजाओंका और प्रजाका इष्टका भगवान बन गया। लेकिन परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृती इन तीनो में कौनसा संयोग है इस विषय में तीव्र चर्चा हुई। रामानुजाचार्यने विष्णुको असली ईश्वर कहकर शिवकी पूजा करनेवालोंसे वैर जताया। बंगालके चैतन्य महाप्रभूने कृष्णको जो विष्णुका अवतार है पूज्य देव कहकर वैष्णव संप्रदायके संघठणको पुष्टी दी।

स्वामी शंकराचार्यने अपना एक सिद्धांत विद्वानोंके सामने रखकर हलचल मचा दी। तब तक सब हिंदू विद्वान परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृती ये तीनों ब्रह्मांड में अलग अलग विषय हैं। लेकिन शंकराचार्यने कहा की ब्रह्मांड में अकेले परमात्मा हैं। जीवात्मा भी संसार में बंधे हुए परमात्मा हैं। यहाँ कोई प्रकृती नहीं है। यह जगत एक माया है। जो हम देखते हैं वह वास्तव नहीं। जब परमात्मा माया से घेरा हुआ होता है तब उसको अपनी वास्तविकता को भूल जाता है। वह जीवात्मा हो जाता है। जीवात्मा तब ही परमात्मा हो जाता है जब उसको घेरी हुई माया पिघल जाती है और परमात्मा स्वयं को फिरसे पाता है। इस सिद्धांत को अद्वैत वाद कहते हैं। मध्वाचार्यने इस अद्वैत वाद का खंडन किया और अपना द्वैत वाद को पेश किया। द्वैत वाद में परमात्मा और जीवात्मा अलग अलग हैं। प्रकृती ज़ड वस्तु है। उन्होंने प्रकृतीको माया नहीं बलकी वास्तविक कहा। स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहा की प्रकृती एक वृक्शके समान है। वृक्ष पर दो पक्षियाँ जीवात्मा और परमात्मा बैठी हुई हैं। जीवात्मा वृक्षका फल खाता है। परमात्मा उसको देखता है।

वेद और वैदिक धर्म

अंग्रेज़ोने भारत आनेसे पहले सारा हिंदुस्तान अनेक राज्यों में बांटा हुआ था। राजाओंका अपना साम्राज्य हुआ करता था। बडा एक राजा और उसके अनेक सामंत राजा हुआ करते थे। तब ब्राह्मणोंकी वृत्ती संस्कृत भाषा सीखना और सिखाना, मंत्र कंठपाठ करना, याग यज्ञ आदि मनाना, पूजा करना, विवाह, श्राद्ध, उपनयन, सीमंतोन्नयन, अन्नप्राशन, नामकरण, आदि हिंदुओंके संस्कारों को धार्मिक विधी में चलाना होती थी। ब्राह्मणोंने कभी भी धन, भूमी, ऐश्वर्य, आदी संपत्ती को जुटाया नहीं। लेकिन वे अस्पर्शता का पालन करते थे। यही उनका शाप बन कर प्रस्तुत काल में उनको अपमान कर रहा है। आज भी सभी हिंदुओंको ब्राह्मण जो अगमनिगम पाठशाला में पढ़ कर पंडित बने हैं उनकी खिदमत या उपकार की ज़रूरत है। हमारे घर में शादी होनी है, या श्राद्ध होना है, पूजा पाठ होना है तो हम पंडितजी को बुलाते है। हम गौड सारस्वत ब्राह्मण हैं और हमारे बहुत कम नवजवान पंडितजी की वृत्ती को अपनी जीवन वृत्ती चुनते हैं।

हमारे जैसे ब्राह्मण लोग हिंदुस्तान की आबादी में दो प्रतिशत होंगे। इन में से हज़ारों में एक (या उससे भी कम) ब्राह्मण पंडितजी का पेटा पहनेगा। लेकिन कोई भी ब्राह्मण आदमी अब अपनेको ब्राह्मण कहकर कुछ लाभ नहीं पाता है। बदले में उसको कोई भी लक्ष नहीं देगा। ब्राह्मण हो कर आजकल कुछ भी फायदा नहीं। ब्राह्मणको सरकारी नौकरी मिलना कठिण है क्यों की अन्य जातियों के आवेदकों को आरक्शणकी सुविधा है। पचास प्रतिशत स्थानों में अनुसूचित जाती, अनुसूचित जनजाती और अन्य पिछडे जातीके आवेदक लोग नियुक्त किये जाते हैं। बाकी पचास प्रतिशत स्थानों को सभी शेष आवेदकों में से चुना जाता है। प्राय्व्हेट उद्योगों में आरक्शण नीती नहीं है। ब्राह्मणोंको प्राय्व्हेट कंपनियों में नौकरी ढूंढना पडता है। सरकारी नौकरियों में काम कम है। पहले सरकारी नौकरोंका वेतन श्रेणी भी कम थी।

लेकिन ईसवी 2015 से लागत सरकारी नौकरोंका वेतन प्रायव्हेट नौकरों के वेतन के बराबर आ पहुँचा है। सरकारी नौकरोंको घूस लेके पैसा कमानेका अवसर मिलता है। प्रायव्हेट नौकरियों में घूसका बेनेफिट नहीं है। प्राचीन काल में जब महर्षी मनुने अपनी मनु स्मृती लिखी तब जो समाज था उसमें नवजात शिशू को उसके जनमसे ही पिता की वृत्ती से लगाव होता था। पुरुष शिशुको उसके पिताकी वृत्ती को ही बचपनसे ही सीखनी चाहिये थी। अगर उस वृत्ती में अक्शरज्ञान की ज़रूरत नहीं हो तो वह शिशु आगे अनक्षरस्थ होता था। नवजात शिशूका भविष्य सुधृढ बनाने के लिये और जनमसे ही सुनिश्चित करने के लिये महर्षी मनूने अपने ग्रंथ में वृत्ती पर आधारित जाति व्यवस्थाको प्रस्तुत किया था। जब कभी किसी वृत्ती का किसी कारणसे माँग खतम होनेसे अवसान होता था तब उस वृत्ती के लोग बेरोज़गारी का शिकार होते थे। धोबी हो या बुनकर हर एक का जीवन वृत्ती जनमसे सुनिश्चित होती थी।

क्रिस्तानंतर अठारहवी सदी के अंत तक हिंदुस्तान में जीवनवृत्तियों में दो विध थे। अक्षरस्थ और अनक्शरस्थ वृत्ती। जिस वृत्ती में अक्शरज्ञानकी आवश्यकता होती थी जैसे मुनशी बनने में है उस वृत्ती के लोगोंको अक्शरस्थ होना चाहिए था। उस वृत्तीके परिवार का पुरुष बच्चा पाठशाला जाकर अक्शर सीखता था। गणित की आवश्यकता होती तो वह गणित भी सीखता था। बाकी सारे लोग अनक्शरस्थ होने में ही संतुष्ट होते थे। प्राचीन भारत में अक्शर सीखना याने कोई एक भाषा लिखना और पढ़ना बहुत मुश्किल था। कागज़ या लेखनी नहीं थी। रेत पर उंगलियों से अक्शर लिखना सीखते थे। आज ईसवी 2016 में हर एक बच्चे को इस्कूल जाना लगभग अनिवार्य जैसा है। आज वृत्तियों को किसी बच्चे के जनमसे ही सुनिश्चित नहीं करते। सामान्य परिस्थितियों में एक शेतकरीका बच्चा खुद एक शेतकर बनता है। दूकानदारका बच्चा बडे होते ही अपना एक दूकान खोलेगा।

आजके ज़माने में डाक्टरका बेटा या बेटी डाक्टर बनना योग्य समझते हैं। लेकिन जब कोई विद्यार्थी कालेज में अपना इच्छुक विषयको पढ़ने लगता है तो उसको उस विषयकी वृत्तीको अपनी जीवन वृत्ती बनानेकी इच्छा होती है। शेतकरका बेटा इंजिनियर बन सकता है। डाक्टरका बेटा सरकारी नौकरी पर मन करता है। ब्राह्मण का बेटा अगर वेदों में और शास्त्रों में प्रवीण होना चाहता है तो उसको आगम शास्त्र पाठशाला में भर्ती होना पड़ता है।

आजकल वेदों के ग्रंथ (पुस्तक) देखनेको भी नहीं मिलते हैं। काशी (वाराणासी, बनारस) में विश्वविद्यालयके ग्रंथालय में शायद कोई वेदों की प्रतियाँ मिलती होंगी। मैंने वेदोंको पढ़ा नहीं। आज कल देवनागरी लिपी में लिखी हुई पुस्तकोंको संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, मराठी, कोंकणी, इन पांच भाषाओं में पढ़ सकते हैं। भारत देश की बाकी भाषाओंको अपनी अलग लिपी होनेके कारण उनको पढ़ने के लिये इन भाषाओं की लिपी को पहले सीखना चाहिये।

वेद संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। वेदों में क्या लिखा है या नहीं लिखा है इस जानकारी को हम भारतीय विद्वानोंने या आचार्योंने लिखी हुई ग्रंथोंको पढ़कर जानसकते हैं। वेदोंको पद्य (काव्य) के रूप में मंत्र कहलाने वाले श्लोकोंसे बनाया गया है। इन श्लोकोंका अर्थ जानने के लिये अपार पांडित्य चाहिये।

प्राचीन ऋषी मुनियोंने तय्यार किये हुए वेदोंका अर्थ समझानेवाले भाष्य अब भी पुस्तक रुप में मिलते हैं। प्राचीन संस्कृत भाषा के ग्रंथों को पढ़ना या समझना आसान इसीलिये नहीं है की मंत्रों का अर्थ अनेक तरह से कर सकते हैं। हमे वेदोंको पढ़नेसे भी ज्यादा वेदों के भाष्यों को पढ़कर समझना आसान है। लेकिन इन भाष्यकारों का अपना ज्ञान और विचार होते हैं। कोई एक भाष्यकारने दिया हुआ किसी एक वेद मंत्र का अर्थ दूसरे भाष्यकारके अर्थ से भिन्न होना सामान्य है। एक ही वेद मंत्र का अनेक अर्थ हो सकते हैं। हम जो संस्कृत भाषा पाठशाला में सीखते है वह भाषा वेदों के संस्कृतसे मात्र थोडी सी मिलती जुलती है। बाकी वेदों का संस्कृत सामान्य संस्कृत जैसा नहीं है।

हमारे हाली प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदीने भारतीय टेलिविज़न दूरदर्शन का एक संस्कृत चानल (वाहिका) पसार करना शुरू करवाया। हफ्ते में सात दिन भी आधा घंटा यह वाहिका संस्कृत भाषाका प्रचार करता है। जब संस्कृत भाषा की लोकप्रियता बढ़ती है तब वेदोंका अध्यन करने इच्छुक लोग वेद शास्त्रोंको पढ़ेंगे। हमारा जीवन अब सरकार के नीतियों से बहुत प्रभावित होता है। जब हमारा सरकार हमारे संस्कृती, हमारी भाषा, हामारा खाना, पीनेका पानी, घर, बिजली, आदियों को हमारे इच्छाके अनुसार आपूर्ती करता है तो हमारा जीवन सुखद बनता है।

वेद चार हैंरिक् :, यजु, साम और अथर्व। वेदोंको अनेक शाखाओं में लिखा है। शाकल, शंखायन, जैमिनीय, आदि वेदों के शाखायें हैं। वेदों का प्रकाशन होने के बाद काल बीतते प्रस्तुत विद्वानोंने अनेक श्लोकोंको बनाकर वेदों में जोड दिया। अंतरिक्श में दिखने वाले सूर्य, चंद्र, नक्षत्रोंको, ग्रहोंको, वायु, आकाश, जल, भूमी आदियों को परमात्मासे जोडने के विषय में संम्हिता, ब्राह्मण, अरन्यक और उपनिषद लिखे। वेदों के मंत्रों की संख्या इससे बढ़ी।

वेदों में संहिता आदि मिलाने के बाद कई बरस बीते तो उस समय के विद्वानोंने और भी ज्यादा श्लोकोंको वेदों में जुटाया। ईनको वेदांग कहते हैं। शिक्शा, व्याकरण, छंदस, निरुक्त, ज्योतिष्य और कल्प ये छे वेदांग हैं। याञवल्क्य, नारद, मंडूकी और पाणिनी ने शिक्शा वेदांग रचाया। ज्योतिष्यके ग्रंथ लिखनेवालों में भास्कराचार्य ने सिद्धांत शिरोमणी और आर्यभट ने आर्यभटीय सिद्धांत जो खगोल विञानके ग्रंथ हैं इनको लिखा। वराहमिहिर ने बृहतसंहिता और बृहतजातक लिखा। सुंदरेश श्रौती ने सिद्धांत कौस्तुभ लिखा। कल्प के लिये आपस्थंभ, बोधायन, वैखनास, भारध्वाज, अग्निवेश, कात्यायन, धृह्यायन, आदि विद्वानोंने ग्रंथ लिखे। उपांग वह होते हैं जो वेदांगके भाष्य हैं। मीमांसा, न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र चार उपांग हैं। जैमिनी, बादरायण और शंकराचार्य आदि विद्वानोंने मीमांसा लिखी। पहले लिखी मीमांसा को पूर्व और बाद में लिखी मीमांसा को उत्तर मीमांसा कहते हैं। न्याय उपांग में दो विभाग हैं। वे हैं गौतम मुनीने रचाया हुआ न्याय वैशेशिक और कपिल मुनी और विञानभिक्शु ने रचाया हुआ सांख्य ग्रंथ।

वेदों का एक उपांग कहलानेवाले पुराणों को क्रिस्त पूर्व पहले सदी लेकर क्रिस्तानंतर नववीं सदी तक लगभग 900 वरसोंके अवधी में अनेक विद्वानोंने लिखे। मतलब ईसवी 2016 से दो हज़ार वर्ष पहलेसे पहला पुराण लिखा गया। उसके बाद ईसवी 2016 से अक्रा सौ वर्ष पहले याने शंकराचार्य ने अपना अद्वैत सिद्धांत पेश करनेके ठीक पहले आखिर का पुराण लिखा गया। आर्यसमाजके स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने "सत्यार्थ प्रकाश" ग्रंथ में लिखा है की पुराण की कथायें झूटी हैं। लेकिन हिंदुस्तान में हर एक मंदिर में कोई न कोई पुराणोंका देव की मूर्ती को पूजा करते हैं। कुल अठारह पुराण हैं। उनमें शिव पुराण, स्कंद पुराण और भागवत ज्यादा लोकप्रिय हुए हैं। महाभारत और रामायण इतिहास के ग्रंथ हैं। महाभारत को व्यास महर्षीने लिखा। रामायण को वाल्मीकी ने रचाया। महाभारत में भगवदगीता एक चुनी हुई कविता है जिसको स्वामी विवेकानंद ने हिंदुस्तान के लोगोंको आदर्श धार्मिक ग्रंथ बताया।

चार वेदोंका ज़िक्र करते हैं तो वेद की शाखायें, वेदांग, उपांग, पुराण, महाभारत, रामायण आदि सभी प्राचीन शास्त्रोंको वेद कहके पुकारना चाहिये। आज का नवजवान पुराणोंके कयानियों पर विश्वास नहीं करेगा क्यों की इन कथाओं में अमानवीय और असाधारण प्रसंग होते हैं।

शिव पुराण में लिखा है की शिवने कहाकी मैं विश्व की सृष्टी करूंगा। पहले शिव ने जल को इस्तेमाल करके नारायण को उत्पन्न किया। नारायण के बोंबुल्लीसे (नाभीसे) कमल खिला और कमल में ब्रह्म की पैदायिश हुई। सब कुछ जलमय है ऐसा शिवने देखा। थोडी पानी अपने हाथ में लेकर उस पानीको वापस पानीमें छोडा तो बुलबुलें उठी। एक बुलबुलेसे एक पुरुष उत्पन्न हुआ। उस पुरुषने ब्रह्मको कहा की, बेटा, तुम अब सृष्टी करो। ब्रह्मको पुरुषने बेटा कहकर पुकारने पर गुस्सा आया। ब्रह्मने पुरुषको कहा की मैं तुम्हारा बेटा नहीं बलकी तुम मेरे बेटे हो। उनमें झगडा हुआ और एक हज़ार दिव्य वर्षों तक दोनों झगडते रहे।

सृष्टी का भी इन एक हज़ार वर्ष बीत गये तो भी निर्माण हुआ नहीं। शिव ने अब निश्चय किया की अभ इस झगडेका हल निकालना चाहिये। पुरुष और ब्रह्म के बीच में जल में एक तेजोमय लिंग उत्पन्न हुआ। लिंग उत्पन्न होते ही वह आकाश की तरफ जाके रुका। इसको देख कर पुरुष और ब्रह्म दोनों घबरा गये। दोनोंने लिंग का आदि तथा अंत्य ढूंढ़ निकालने का संकल्प किया। यह भी तय हुआ की जो आदि और अंत को जान कर पहले लौटता है वह पिता है। जो बाद में लौटता है वह पुत्र है। पुरुष जिसको विष्णु कहकर पुकारा है कूर्म रूप धारण करके नीचे पानी में जाता है। ब्रह्म हंस का शरीर धारण करके ऊपर गया। दोनों मनोवेगसे चलते थे। दोनों एक हज़ार दिव्य वर्ष चलते रहे। दोनोंको लिंग का अंत्य मिला नहीं। तब विष्णु ऊपर चड़ने लगा और ब्रह्म नीचे चलने लगा। ब्रह्मने सोचा की अगर विष्णूने अंत ढूंढ़ने में सफलता पाई तो ब्रह्म पुत्र होगा। उसी समय एक गाय और एक केतकी वृक्श ऊपरसे नीचे उतर कर आये।

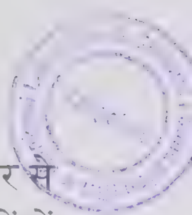
ब्रह्मने उनसे पूछा, "आप लोग कहाँसे आये?" तो उन्होंने उत्तर दिया की दोनों एक हज़ार वर्षोंसे लिंगके आधार पर चलते आये हैं। तो ब्रह्मने उनसे पूछा, क्या इस लिंग का कोई अंत्य है? तो गाय और केतकी वृक्शने उत्तर दिया की, नहीं है। ब्रह्मने उनको साथ में शिवके पास आनेको कहा। उनको झूटी साक्श्य देने को कहा की गाय लिंग के ऊपर दूध छोडती थी और केतकी वृक्श लिंग पर फूल बरसाता था। दोनोंको झूटा साक्श्य देना कबूल नहीं था। वे बोले की हम झूटी साक्श्य नहीं देंगे। तो ब्रह्मने उनको धमकाया की अगर वे दोनों झूटी साक्श्य नहीं देंगे तो उनको एक क्शण में जलाकर भस्म करेंगे। तब गाय और केदकी वृक्श दोनों डर गये और दोनों झूटि साक्श्य देने को राज़ी होगये। तीनों शिवके पास आये तो उधर विष्णु पहले ही पहुंचा था। शिवने विष्णूसे पूछा, क्या तुमने लिंग का अंत्य का पता लगाया है? तब विष्णु बोला की, नहीं. मुझे इसका अंत्य मिला नहीं।

शिवने ब्रह्मसे पूछा, क्या तुमने लिंग का अंत्यका पता लगाया है? ब्रह्मने कहा, हाँ है। तो शिव बोले, कोई साक्श्य है? तो गायने और वृक्षने अपनी अपनी कहानी बताई। तब लिंगके भीतरसे आवाज़ सुनाई दिया। मैं इधर ही रुकूँगा। इतना ही बस होता है पुराण एक पुराना कार्टून (व्यंग्य चित्र या हास्य चित्र) जैसी कथा है।

स्वामी दयानंद सरस्वतीने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश" में लिखा है की ईश्वर एक ही है और उसके बहुत सारे नाम हैं। लेकिन "ओं" जो अ, उ, और म से बना है वह नाम अनेक नामोंका प्रतीक है। 'अ' अक्षरसे विराट्, अग्नि, विश्व, आदी नाम बनते हैं। 'उ' अक्शरसे हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस, आदि नाम बनते हैं। 'म' अक्षरसे ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ, आदी नामोंका वाचन तथा इरादा होता है। वैदिक धर्म जो क्रिस्तपूर्व छहवी सदी में चालू था उसको बौध और जैन धर्मोंने लड़खडाया। हिंदुस्तान में वेदोंके जगह बौध और जैन धर्म के ग्रंथ आ बैठे।

सारे राजाओंने अपने ज्ञानी मंत्रियों के सलाह के अनुसार वैदिक धर्मको छोड कर वौध या जैन धर्म को अपना राज धर्म और अपने प्रजाका क्रियात्मक धर्म बनाया। राजाओंने अपने मंत्रियोंका सलाह स्वीकार किया तो प्रजाओंने राजाके आदेश पालन किया। बौध धर्म कई जगहों में प्रभावशाली हुआ तो जैन धर्म दूसरे कई जगहों में लोकप्रिय हुआ। वैदिक धर्म पीछे रह गया। तबसे वैदिक विद्वानोंने अपना धर्म का पुनरुत्थान करने के लिये वेदोंके बहुत से नये भाष्य लिखे। वेदोंका उपांग कहलानेवाले उत्तर मीमांसा, न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र आदी ग्रंथोंको लिखकर वैदिक धर्मको नया रूप दिया। वैदिक धर्मका नाम सनातन धर्म में बदल गया। ईसाई धर्म जो क्रिस्तानंतर पांचवी सदी में विश्व भर लोकप्रिय हुआ और महमद पैगंबर का इस्लाम जो आठवी सदी में आया तो इन मतोंका सामना करने के लिये भारतीय विद्यानोंने इन वैदिक उपांग ग्रंथोंको राजाओं को पेश किया। प्रस्तुत काल के राजाओं ने बौध धर्मको त्याग कर पुराणोंका धर्मको स्वीकारा।

पौराणिक धर्म



आज के ज़माने में हमारा हिंदू धर्म एक प्रकार से पौराणिक धर्म कहलाने के योग्य बन गया है। पुराणों में जो देवी देवताओं का नाम हैं उन्ही देवी देवताओं को हम आज अपने मंदिरों में और घरों में पूजा करते हैं। पुराणों में वेदोंके तत्वोंको भी लिखा है। बहुत से अमानवीय अवैञानिक बातों को भी लिखा है। ईसवी 2016 में भारत एक प्रजाप्रभुत्व बनने के बाद हमारे सरकारने धर्मनिरपेक्श नीतियों को लागू किये हैं। अगर कोई व्यक्तीको अपने विश्वास और आस्था के कारण अमुक रीती में जो किसी और को नुक्सान नहीं पहुंचाती है ईश्वर की प्रार्थना या पूजा करना है तो उसको बाधा डालने का अधिकार किसीको नहीं है। सभी धर्मों के लोगोंको अपने अपने पूजा विधियों को अभ्यास करने से सरकार या अन्य संस्थायें रोक नहीं सकती हैं। भारतके नागरीक को अपना धर्म और किसी को हानीदायक होने से बचाना चाहिये।

वेदों में एक ही ईश्वरका वर्णन बहुत से नामों से किया गया है। परमात्मा का हर एक विशिष्टता को एक नाम दिया है। परमात्मा विश्वका पती होनेसे उसको प्रजापती का नाम दिया है। ऐसे कई एक सौ से ज्यादा नामों को वेद में ईश्वरका नाम बताया है। पुराण के कर्तृ कवियोंने वेदों में लिखे हुए ईश्वरके नामोंको और उनके भावार्थोंको इस्तेमाल करके पुराण के कहानियोंको रचाये हैं। ईश्वर निराकारी है लेकिन पुराण में शिव, विष्णु, महादेव, ब्रह्म आदि देवोंको मानव शरीर देकर वैदिक धर्मको तिरछा है। वैदिक धर्म में संध्यावंदन करते समय किसी मूर्तीको सामने नही रखा जाता है। वैदिक लोग अपने भगवान को मन में समाते हैं। बिना किसी रूप रेखा या आकार के सर्वांतर्यामी भगवान की याद करते हैं। पौराणिक धर्म में संध्यावंदन करते समय कर्तृको शिवलिंग या किसी देवी देवताके फोटो या मूर्ती के सामने बैठकर करना पड़ता है। वैष्णव कहलानेवाले विष्णू ही अपना सर्वश्रेष्ट परमात्मा मानते हैं।

विष्णु पुराण में भगवान विष्णू को दस शिरवाले सर्प के ऊपर लेटे हुए पुरुष का रूप दिया है। विष्णूके नाभी से एक कमल पुष्प उठता है। उस कमल में और एक मनुष्य आकृती है जिसका चार हाथ हैं। इस आकृतीको ब्रह्म का नाम दिया है। ब्रह्म को सृष्टि कर्ता का स्थान दिया है लेकिन सरस्वती को जो साहित्य का अधिपती है ब्रह्मकी पुत्री कहा है। यह सरस्वती वेदों में ईश्वर का एक नाम है। वेदों में सरस्वती को स्त्री नहीं बलकी कोई लिंग नहीं है। पुराणोंके कवियोंने सरस्वती को स्त्रीलिंग देकर देवी बनायी है। सरस्वती की प्रतिमा को एक स्त्री के रूप में बनाकर उसको साडी पहनाया है। उसके हाथ में एक वीणा है और उसको वह बजाती हुई सी दिखाया है। लक्श्मी वेदों में निराकारी भगवान का एक नाम है। लेकिन पुराणों में लक्श्मी को विष्णू की पत्नी का स्थान दिया है। लक्ष्मी को धन संपत्ती की देवी बनाया है। पुराणों के अनुयायी लोगों ने दीपावळीका पर्व को रचाया और तेरहवी तिथी को धन तेराह पर्व का नाम दिया। धन तेराह पर्वके दिन लक्श्मी की प्रतिमा को पूजा करना अब सदियोंसे चलता आया है।

पुराणों को रचाये हुए कवियों ने वेदों में दिये हुए परमात्मा के विशिष्टताओं को उपयोग करके चित्रविचित्र कथायें लिखी। इन कथाओं को हर एक आम आदमी समझ सकता है। लेकिन जो कोई इन कथाओं की वास्तविकता पर ध्यान देगा तो उसको संकट होगा की अपना भगवान मानव शरीर वाला हो सकता है क्या? हमारा हिंदुस्तान अंग्रेज़ोंकी बस्ती होनेके बाद हमारे बच्चों ने इस्कूल जाकर शिक्शा ली। तब ब्राह्मणके अलावा अन्य जातीके लोगोंने भी पढ़ने लिखने में रुची दिखाई। उसी समय अंग्रेज़ोंने हिंदुस्तान में छाप यंत्र का उपयोग आरंभ किया। कागज़ बनाने का यंत्र भी इंग्लेंड से लाया और इधर कागज़ बनने लगा। इस्कूलों में इस्तेमाल करने के लिये पठ्य पुस्तकें छापे गये। जो भी ताड़पत्र पर लिखे हुए सनातन धर्मके ग्रंथ थे उनको कागज़ के पुस्तक बनाया। इन पुस्तकों को सभी लोग पढ़ सकते थे। सिरफ ब्राह्मण लोग नहीं। अन्य जनोंने पुराणों को पढ़कर आश्चर्य जताया। की ऐसी काल्पनिक कथाओं को अपना धार्मिक ग्रंथ के रूप में कैसे स्वीकार करें।

पुराणों की कथाओंको इतिहास का दर्जा हम नही दे सकते हैं। रामायण और महाभारत सनातन धर्म के ऐतिहासिक पुराण हैं। रामायण की और महाभारत की कहानियों को पाश्चात्य देशों में इतिहास का दर्जा दिया है। न तो धार्मिक दर्षनोंका। लेकिन आज ईसवी 2016 में हिंदुस्तान में और सारे विश्व में हिंदू लोग कृष्ण को और राम को विष्णूके अवतार कह कर घरों में, मंदिरों में और मठों में, हर एक धार्मिक जगह में उनको देव मान कर उनकी पूजा करते हैं। सनातन धर्मके ज्ञानियोंने देखा की रामायण जो एक राजा की कहानी है उसको धार्मिक शास्त्र बना सकते हैं। राम को विष्णूका अवतार कहकर रामायण को धार्मिक शास्त्रका दर्जा दिया। जिसकी शादी हो रही है उसकी ही तारीफ़ करना योग्य है। हिंदुस्तान में प्राचीन काल से राम को और कृष्ण को पहले महात्मा कहने लगे। बादमें स्वयं भगवान कहने लगे। इसकी पुष्टी में रामायण और महाभारत को दैविक शास्त्र बनाये गये। बाकी वेदोंके परमात्माके नामोंको प्रयोग करके पुराणों के कथाओं को रचाया।

पुराण के रचयिताने अपनी कल्पनाशक्ती को और ज्यादा विस्तृत करके ऐसे ग्रंथों को लिखा जिनको सनातन धर्म के आम आदमी उत्साहसे पढ़े। अपने भगवान पर भक्तिभाव उत्पन्न हो सके। इन कथाओं के बारे में चर्चा करना आज के ज़माने में अनावश्यक प्रयास होगा। ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, दुर्गा, भगवती, आदि किसी भी देवी देवताओं के विषय में चर्चा व्यर्थ है। जो कृष्ण भक्त है उसको अपनी आस्था को बचाके रखने की इच्छा हो तो किसी को कोई समस्या नहीं उठनी चाहिये। अगर कोई व्यक्ती तुलसी सस्य को पूजा करना चाहता है तो क्यों कोई ऐतराज़ करेगा? जब किसीको सच्चा भगवान का पता नहीं तो क्यों व्यर्थ झगडा करें? क्रिस्तानंतर नववीं शताब्धी में रामानुजाचार्य के काल में दक्षिण भारत में शैव पंथ के राजा राज्य चलाते थे। तब रामानुजाचार्यने विष्णुको एकैक परमात्मा कहकर उनको शैव राजा का वैरत्व झेलना पडा। उस समय जैन धर्म भी दक्षिण भारत में बहुत जनप्रिय हुआ था। बहुत से राजा जैन धर्म के अनुयायी थे। एक जैन राजाको जैन धर्म छोडकर फिर से विष्णु भक्त बनाने में रमानुजाचार्य सशक्त हो गये। उस राजा का नाम विष्णुवर्धन रखा।

शिव पुराण में शिव को एकैक परमेश्वर कहा है। इस पुराण में विष्णु को शिव का एक सेवक जैसा बताया है। ब्रह्म, गणेश, इंद्र, सूर्य, आदी भी शिव से निचले स्थर के देवता होते हैं। इस विषय को लेकर विष्णु भक्तों ने झगडा करना आज के ज़माने में अनावश्यक है। शिव के भक्तोंकी निंदा करने के बजाय उनको बधाई देना चाहिये की आप अपने को हिंदू मानते हैं, बस। आप शिव की पूजा करो। विष्णू की पूजा करो। राम, कृष्ण आदी किसी देवकी या पार्वती, लक्श्मी, सरस्वती आदी देवियों की पूजा करो। लेकिन हिंदू समुदाय में बने रहो। आप अपने घरके नज़दीक जो भी हिंदू मंदिर (टेंपल) है उस मंदिरके कार्यक्रमों में शामिल हो जाइये। हिंदू समुदाय में सदस्य बनीये। त्योहारों में अपना योगदान दीजिये। वैदिक धर्म जैसे हिंदू धर्म है वैसे ही पौराणिक धर्म भी एक हिंदू धर्म है। भगवान कौन है, कैसा है, किधर रहता है, कैसे इस संसार को चलाता है, इन प्रश्नोंका उत्तर किसीने ठीक तरह से अब तक दिया नहीं।

सभी लोग अपने भगवान की पूजा करना चाह्ते हैं। भगवान उन सब भक्तोंकी सभी इच्छाओं को पूरी करें यह आप कामना कीजिये। पुराण में जो कथायें लिखी गयी हैं उनमेंसे कई आचरणोंको करने में हिंदुओं में उत्साह बढ़ा है। वैदिक धर्म में हवन आदियों को घरों में करते थे। बडे यज्ञ तथा यागों को खुले मैदान में करते थे। मंत्र घोष होता था लेकिन मैं समझता हूँ की भजन या कीर्तन नहीं गाते थे। घोडोंका, बैलोंका दौड़ एक क्रीडा के रूप में चलाते थे। कुस्ती होती थी। अन्य स्पर्धायें होती थीं। राजाओं के साथ उनके परिजन शिकार करने जाते थे। राजाओं को वन्य प्राणियोंको बाण छोड कर मारना निषिद्ध नहीं था। राज्य के अन्य अधिकारियोंको भी शिकार पर जाना और वन्य प्राणियों को मारके उनको काटके खाना प्रचलित क्रीडा थी। जब बड़े बड़े मंदिर बने तब उन में पौराणिक देवोंकी मूर्तियों को बिठाकर आरती दिखाकर बाजा बजाकर करताळ बजाकर शंख फूँक कर ब्राह्मण लोग पूजा करने लगे तो लोगों में अपने देवी देवताओं पर नयी उम्मीद उत्पन्न हुई।

अपने पितृ के आत्माको शांति दिलाने के लिये प्रयाग, गया आदि क्शेत्रों की यात्रा करने चले। तीर्थ यात्रा जाना एक अमूल्य पुण्य मानने लगे। वेदों में मृतक श्राद्ध का सुझाव नहीं दिया है। जीवित माता पिताओंकी सेवा करना ही वैदिक श्राद्ध है। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्दा प्रकट करना। लेकिन माता पिता जीवित रहने के समय बेटे को डांट सकते हैं जिससे बेटा खपा होता है। जीवित माता पिताओं के ऊपर बेटे को श्रद्दा होना कम परिवारों में दिखता है। मृतक माता पिता कभी अपने बेटेको डांटेंगे नहीं। इसीलिये मृतकोंका श्राद्ध करने में बेटे को विरोध नहीं होता है। वैदिक धर्म में मंत्रों का पाठ करना पड़ता है। कई शब्धोंका उच्छार करना कठिण है। पौराणिक पूजा में कोई भी कठिण मंत्र पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। ओं गणेशाय स्वाहा। इदं गणेशाय इदं न मम। ऐसे आसान मंत्रों को कहना आसान है। पुराणों का धर्म जल्दी जनप्रिय हो गया।

पौराणिक धर्म ने जाति भेध को वृत्ती के बदले जनम के आधार पर चलाया। वैदिक धर्म की जातियाँ धर्म के आधार पर खडी थीं। पौराणिक ब्राह्मणोंने मनुस्मृती के तत्वों को स्वार्थ के अनुसार चलाया। छूआछूत पद्धतीको बढ़ाया। ब्राह्मणको धर्म के अपराधों का न्याय करनेका और दंड देनेका दोनों अधिकार पुराणोंने दिया। जो भी अपराध ब्राह्मणने किया उसका दंड हलका होता था। निचले जाती के लोगों ने बहुत छोटा सा अपराध करने पर उसको कठिण दंड ब्राह्मण न्यायाधीश देता था। निचले जाती के एक बच्चेने पानी अपने अंजली (हथैली) में लेकर पीना चाहिये था। उसको पानी ब्राह्मण और उच्छ जाती के लोग अपने बर्तन में नहीं देते थे। निचले जाती के लोगोंको छूने से भी ब्राह्मण अशुद्ध महसूस करते थे। अगर रास्ते में एक ब्राह्मण आ रहा है तो निचले जातीके जनों को सरके बाजू में या दूर से चलना चाहिये था।

अगर किसीने धर्म के विषय में अपराध किया तो उसका बहिष्कार करते थे। बहिष्कार का परिणाम अवर्णनीय कठिणाइयों का होता है। उसकी नौकरी चली जाती थी। कोई उससे बात नहीं करते हैं। उसके घर से बाहर निकाला जाता था। उसको कोई भी खाना नहीं देते थे। किसीका बहिष्कार को कोई आदमी खंडन करता तो उसको भी बहिष्कार करते थे। अस्पर्शता पौराणिक धर्म में एक विपरीत आचरण था। सूतक भी एक पौराणिकों का धर्म है। प्रसव का सूतक और मरण का सूतक पौराणिक धर्म ने प्रस्तुत किया। अस्पर्शता और सूतक का वैज्ञानिक अर्थ है। उस समय संक्रमण (इनफेक्शन) का ज्ञान नहीं था। संक्रमण से आनेवाले रोगोंसे बचने के लिये अस्पर्शता और सूतक को प्रस्तुत किया था। लिकिन उसको केवल ब्राह्मणों के लिये सीमित रखना गलत था। संक्रमण किसीको आ सकता है। केवल ब्राह्मण को नहीं।

पुराणों के काल में सती सहगमन की प्रथा ज़ोर पकडी। बाल विवाह की पद्धती भी शुरू हुई। इनको न वेदों में न पुराणों में उल्लेख किया है। लेकिन इनका अभ्यास पुराणोंके काल में प्रारंभ हुआ। हिंदू समाजके ब्राह्मण गण सती सहगमनको कितने हज़ार बरसोंसे पुण्यकर्मके समान मानते थे की अंग्रेज़ोंने भारतीय समाज सुधारक राजा राममोहन रायके दस बारा बरसके दौरान लगातार किये हुए गंभीर आग्रहके फलस्वरूप एक कानून लाकर सती को ईसवी 1829में अपराध माना और जिसने भी सती सहगमन करवाया उसको फांसीकी सजा देनेकी घोषणा की।

लेकिन बालक पत्नियों की हालत जैसे थी तैसे बनी रही। जो भी बालक पत्नी अपने पतीका निधन होनेपर सती सहगमन करवाके मारी नहीं जाती उसको मुंडन करके सफेद कपडा पहनाके सर्व अलंकारका निषेध करके जीने देते थे लेकिन उसको जीवन भर पीडा देते थे। बालविधवाओंका शोषण और अनेक अलग अलग ब्राह्मणोंकी निंदनीय प्रथावोंको देख कर अंग्रेज़ हुकूमत ने नये नये कानून लाये।

बालविवाहको ईसवी 1871 में अंकुश लगाया। अंग्रेज़ हुकूमतने न्यायाधीशोंको नियुक्त किया और न्यायालयोंको खुला। ब्राह्मणोंके और ज़मीनदारोंके हातोंसे सामाजिक निर्णयोंकी जवाब्दारी छीन ली। हिंदू धर्मके अनेक अंधविश्वासोंके ऊपर प्रश्न खडा किया। हिंदुस्तान के युवक और युवतियोंको स्कूलोंमें दाखिल होनेका मौका दिया। स्त्रियोंको सामाजिक अधिकार नहीं था। जो स्त्री अपनी लज्जाका परवाह नहीं करती, वेश्या बननेको तय्यार होके, नाचती, गाती, हर तरह की निंदा सहकर सामाजिक प्रतिबंधोंको ठुकराकर आगे बढती थीं उस स्त्रीको आरामसे जीनेका रास्ता साफ रहता था। स्त्रियोंको शिक्शा पानेका अधिकार नहीं था। उनको सरकारी या खास दफतरोंमें नौकरी नहीं मिलती थी। गरीब स्त्रीको तो अमीरके घर नौकरानी बनके रातदिन घरका काम करके जीवन बिताना पडता था। उसी समय स्वामी दयानंद सरस्वतीने भी मूर्ति पूजनका खंडन और वैदिक धर्मका प्रचार आग्रा शहरमें शुरु किया था।

ईसवी 1875 में स्वामीने आर्य समाजकी स्थापना मुंबई नगरमें की थी। ब्राह्म समाजमें यज्ञोपवीतको (जनिवारको) धारण करना अनुचित और अनावश्यक समझते हैं लेकिन आर्यसमाजमें जनिवार जिसको उपनयनके बादसे पहना जाता है अत्यावश्यक समझते हैं। जैसे आर्यसमाजमें वैदिक धर्मके अनुसार अंतर्जातीय विवाहको स्वागत करते हें वैसेही ब्रह्मसमाजमें भी अंतर्जातीय विवाहको अनुमति मिलती है।

ब्रह्मचर्य के विषय में भी वेदों में और पुराणों मे फरक है। अब ईसवी 2016 में वीर्यके बारेमें अनुमान बदल गया है। वीर्यस्खलन एक प्राकृतिक व्यवस्था है। तबीयत अच्छी है तो वीर्यस्खलन एक सामान्य दैहिक गती है। वीर्यस्खलनसे ब्रह्मचर्य नहीं टूट जाता। देहमें निर्बलता आती नहीं। असलमें वीर्यस्खलनके आखरी क्शणमे जो उद्दीपन होता है उससे शरीरके हर एक कण पुनर्यौवन प्राप्त करता है। देह में और दिमाग में ढीलापन आता है। सहस्त्रारमें नयापन आता है। तनावसे मुक्ती मिलती है।

आयुर्वेद वैद्यकीय विद्या वीर्यको विनाकारण बहुत महत्व देती है। आधुनिक वैद्यकीय पद्धती भारत में चालू होनेके पहले आयुर्वेद ही सब बीमारियोंको चिकित्सा देने में प्रयोग होता था। उस समय शरीर विज्ञान इतना विकास नहीं हुआ था। वीर्यका महत्वको विविध रूपमें कल्पना करके बताते थे। युवकोंको ब्रह्मचर्यके बारेमें यह कहते थे की वीर्यधारण ही ब्रह्मचर्य है। असलमें शादी होनेके पहलेकी अवस्था ब्रह्मचर्य है। शादी होनेके बाद बालकोंको विद्यार्जनमें मन नहीं लगता। इसीलिये जब तक विद्यार्जन एक गुरुके पास पाते हैं तब तक शादी करना मना था। इसमें विर्यधारणका प्रश्न नहीं है। लेकिन जब मुसलमान राजा आये तब वर्ण व्यवस्थामें अवनती प्रारंभ हुई। बादमें जब अंग्रेज़ सरकार आया तब भी ब्रह्मचर्यके और वीर्यधारणके बारेमें कपोल कल्पित उल्लेख आने लगे। विचारहीन लोग पहलेही उदासी रहे युवकोंको वीर्यस्खलन एक अनुचित विद्यमान बताकर गुमराह करने लगे। वीर्यको असंबद्ध महत्व देने लगे।

वीर्यस्खलनसे वास्तवमें व्यग्रता दूर होती है। बेचैनी गायब होती है। यह कहना गलत है की अगर कोई ब्रह्मचारी अपना वीर्यको शरीरमें उसके स्थानसे नीचे जानेसे रोकें तो वीर्य उपर जाता है माने ऊर्ध्व रेता होता है। वीर्य सिरफ निचले द्वारसे बाहर जा सकता है। और कहीं नहीं जा सकता है। वीर्याणुओंकी क्रिया उस वक्त एक ही होती है कि किसी रजोशील महिळाके गर्भ में आये हुए अंडोंमें प्रवेश करे और गर्भके संस्तापनमें मदद करे। नवजवान अपना विर्यस्खलन रोकने के लिए कोशिश करने से कुछ नहीं होगा। शास्त्रों में बताये हुए कुंभक आदी हर एक तरीखेकी साधना व्यर्थ प्रयास है। कोई नवजवान जितनी मेहनत वीर्यस्खलन रोकने के लिये करे उतना ज्यादा उनको वीर्यस्खलन होगा। वीर्य धारण साधनोंका मूल आवश्यकता नहीं है। आशायें भी और वीर्यस्खलन भी साथ साथ रहेंगी।

भक्ति धर्म

भगवान को जानने का प्रयास करना भक्ति धर्म में आवश्यक नहीं है। वैदिक धर्म ज्ञान का धर्म है तो पौराणिक धर्म विनोद का धर्म है। पौराणिक धर्म में ईश्वर की विशिष्टताओं को ज्ञान के माध्यमसे तुला नहीं जाता। वास्तविकता का स्वरूप ज्ञान के परिधी में सीमित है। वास्तविकता विज्ञान और तंत्रज्ञान पर आधारित है। जो भी वस्तुका विवरण विज्ञान से साबित नहीं होता है और अपनी लंबाई, चौडाई, ऊँचाई, आदि तीन परिमाण के बाहर है उसको अवास्तविक, अलौकिक या पारमार्थिक कहते हैं। वह वस्तु चौथा या पाँचवां परिमाण से मापा जाता है। ऐसे अलौकिक विषयों को हम देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते, सूंघ नहीं सकते, छू नहीं सकते, विस्तार से बता नही सकते हैं। हमारे मन में उस वस्तूका चित्र भी नहीं बना सकते हैं। दिल में पैदा होने वाले भाव, आवेश, विकार आदी वास्तव में हमारे मन में या दिमाग में पैदा होते हैं बलकी दिल में नहीं। ऐसे मनोभाव का प्रभाव सारे शरीर में होता है। ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है। नाडी तेज़ हो सकती है।

भक्तिभाव एक मनोभाव है। मनोभाव बढ़ाने के लिये गीत गातें हैं। नृत्य करते हैं। चिल्लाते हैं। चीखते हैं। रोते हैं। आँसू बहाते हैं। कांपते हैं। होश खोते हैं। बेहोश हो कर गिरते हैं। भक्ति ईश्वर की उपासना का एक तरीखा है। भक्ती में प्रेम भाव उत्पन्न होता है। भक्तीका विषय सामान्यतह कोई एक वस्तू होता है। वह वस्तु एक मूर्ती हो तो भक्ती निरपेक्ष होती है। अगर वह वस्तु एक ज़िंदा पुरुष, स्त्री, प्राणी या पौधा हो तो भक्ती अपेक्षासे भरी होती है। ईश्वर की प्रार्थना मौन प्रार्थना हो सकती है। मौन प्रार्थना करते वक्त अगर हम आँख बंद करते हैं तो भक्ती फिसल कर नींद में चली जाती है। निःशब्द स्थान में आरामसे बैठ कर आँखें बंद करके ञानके माध्यम से नहीं बलकी भक्ती के माध्यमसे मौन प्रार्थना करेंगे तो नींद आयेगी और नींद में भक्ती गायब हो जायेगी। अगर कोई शब्द को जप (उच्छार) करते हैं और साथ में एक बीजों की माला हाथ में पकड कर उंगलियों से हर एक शब्धके साथ एक बीज सरकाते हैं तो हम नींद को आने से रोक सकते हैं।

मौन धारण पर भक्ती जगाना उतना आसान नहीं जितना संगीत और नृत्य से जगा सकते हैं। क्रिस्त शक सातवीं सदी में दक्शिण भारतमें शैव कवियोंने गीत रचाये और राजाके दर्बारमें अपने देव की मूर्तिके सामने बैठ कर गाया। हर एक संगीतकार कवीने अपना भक्तिगीत गाकर अपना भावको राजाके सामने प्रकट किया। भावोंमें अति श्रेष्ठ भक्तिभावको दिखाकर अपने दैवी प्रेमको व्यक्त किया। दक्शिण भारत में तिरुनेल्वेल्लि शहर में दसवीं सदी में विष्णु पूजक नम्माल्वर ने तमिळ भाषा में भक्तिगीत रचाकर भक्ति मार्ग को प्रसिद्ध किया। अंदाळ नामक स्त्री भक्तिणने नम्माल्वर की भक्ति मार्ग को और अधिक जनप्रिय बनाया। कन्नड राज्य में बसवेश्वरने अपना लिंगायत मतको प्रस्तुत करके जातिभेदको हिंदूओंके बीचमेंसे हटाया। बसवेश्वर की स्तुतियों की गीतमाला भक्तिवेदांतको पुष्टी देता है। इंटरन्याशनल् सोसैटी आफ कृष्णा कान्शियन्स नामक (इस्ककान्) एक संस्थाकी स्थापना भक्ति वेदांत प्रभुपादजीने ही अमेरिका और भारतमें की थी। इस संस्थाका नाम सारे विश्वमें फैला है।

महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, एकनाथ, नामदेव, तुकाराम, आदी कवियोंने अपना भक्तिगीत गाते हुए घर घर भिक्शा मांगकर दास संप्रदायको जनम दिया। पुरंदरदास उन दिनों बहुत लोकप्रिय हुए और पुरंदरदासके भक्तिगीत आजकल सब गाते हैं। कनकदासने भी अनगणित संख्यामें भक्तिगीतोंको लिखा। इन सब संतोंने भक्तिप्रधान मार्गको मोक्श पानेकेलिये बेहतर मार्ग बताया। चैतन्य महाप्रभुको भक्तियोगी कहके पुकारते थे। चैतन्य महाप्रभुने बंगालमें क्रिस्त शक पंद्रहवीं सदीमें भक्तिमार्गका प्रचार करके सामान्य हिंदू लोगोंको एक आसान धार्मिक व्यवस्था उपलब्ध कराई। वे लगभग संपूर्ण भक्तिवेदांतके अनुयायी बने। उनके शिश्योंको प्रभुपाद नामक पदवी देते हैं। भक्तिमार्ग अपनाकर चलनेवाले भी हिंदूधर्ममें अधिक संख्यामें देखनेको मिलते हैं। सुरसंगीतसे संयोजित अपने भक्तिगीत सुनाकर, एकतारी बजाकर, नृत्य दिखाकर भक्ति धर्म के लोग देशमें सब जगह पर्यटण करते हैं।

कबीर, तुलसीदास, मीराबाई, आदी भक्तोंने मूर्ती पूजाको बल दिलवाया। वृंदावनमें श्री कृष्ण भगवानके मंदिरोंमें और मठोंमें भक्तियोगका आचरण कीर्तन, भजन, मृदंग वादन, नृत्य आदी शैलियोंमें किया गया। आदि शंकराचार्यजीका अद्वैत सिद्धांत हो या गुरु रमानंदजीका निर्गुण समाधी हो उन सब धार्मिक प्रथाओंको सम्मिलन करके या अवज्ञा करके एक नया और सुननेको, देखनेको और समझनेको आसान बनाया हुआ भक्तिमार्गका प्रचार हुआ।

धर्म पालन में प्रमुख कर्तव्य ईश्वर की स्तुती है। स्तुती का अर्थ ईश्वर को सराहना है। उसकी प्रशंसा करनी भी स्तुती है। स्तुती करनेसे क्या लाभ है? ईश्वर की प्रशंसा करने से हमको ईश्वरसे प्रेम होता है। ईश्वर जैसे हम बन नहीं सकते। अद्वैत सिद्धांत में परमात्मा और जीवात्मा दोनों वही एक है। भक्ति वेदांत में भी भक्तको ईश्वर में विलीन होना है। ईश्वर को बिना समझे हम उसकी भक्ती कर सकते हैं। स्तुती नहीं।

लेकिन स्तुती को भक्ति के द्वारा करते समय ईश्वर की आकृती को मन में बिठाकर स्तुती करते हैं। ब्राह्म समाज, आर्य समाज जैसे नये समुदायों में ईश्वर की भक्ती बिना मूर्तीकि करते हैं। ईश्वरसे संपर्क जुटाना स्तुती का उद्देश हैं। स्तुती फलनेसे ईश्वरका साक्षात्कार होता है। भक्तीगीतों को गाना ईश्वरका गुणगान करना है। भक्तिगीत सामान्य भाषामें लिखी गयी हैं। भक्तिगीतोंका अर्थ आम आदमी को जल्दी समझ में आता है। वेद में ईश्वर की स्तुती मंत्रोंसे किया जाता है। वेदों में बातायी हुई स्तुती की पद्धती मंत्र पठण की है। मंत्रों का अर्थ समझना आम आदमी को असाध्य नहीं पर कष्टसाध्य है। भक्तीको जगाना हर एक मनुष्यको आसान है। भक्तीको विकसित करके हर व्यक्ती धर्मात्मा बन सकता है। धर्म क्या होता है और उसका पालनसे स्वयंको और समाजको क्या लाभ होता है इसको भक्तोंने समझना चाहिये। स्तुतियों में दो तरह की होती हैं। सगुण स्तुति और निर्गुण स्तुति।

वैदिक धर्म के अनुसार ईश्वर कभी शरीर धारण नहीं करता है। वैदिक धर्म के अनुसार स्तुती करनी है तो ईश्वर को मानव शरीर देकर स्तुती नहीं करनी हैं। लेकिन पौराणिक धर्म की स्तुती किसी एक पौराणिक देवी, देव या देवताकी मूर्ती बनाकर सामने रख कर ही की जाती है। मूर्तियाँ पौराणिक देवी देवताओं के शारीरिक रूप दिखाते हैं। इन मूर्तियों को देखकर देवी देवताओं की प्रशंसा करना तो आसान है। वैसे ही प्रार्थना करके अपनी माँग उस देवी देव के सामने रखना भी आसान है। भक्ति धर्म में मूर्तीको देखकर भक्तिगीत गाना और ज्यादा आसान है। पौराणिक धर्म में जो परमात्माके नाम दिये हैं जैसे शिव, पार्वती, विष्णु, लक्ष्मी, ब्रह्म, सरस्वती आदि नाम दिये हैं इन देवी देवताओंका स्वरूप सब लोगों ने देखा नहीं। इसीलिये सभी पौराणिक देवी देवताओं के चित्रों को चित्रकारोंने बनाये हैं। पत्थर के मूर्तियोंको बनाये हैं। मिट्टीसे बनाये हैं। लोहे की मूर्तियाँ बनायी हैं।

वेदों में कही हुई बातोंको अंदेखी करके भक्तजन मूर्ती में बसे भगवान की प्रशंसा करने लगे। पुराणों में कई देवी देवताओंका स्वरूप के व्याख्यान दिये हैं। इन व्याख्यानों को पढ़कर चित्रकार और शिल्पियोंने अपनी समझके अनुसार देवी देवताओंके चित्र और मूर्ती बनायी। इन चित्र और मूर्ती खुद परमात्मा के दृश्य समझे गये। पौराणिक देवी देवताओं का स्वरूप कम से कम साधारण मानव जैसे होते हैं। लेकिन उनको अमानवीय रूप देने के वास्ते कई देवियोंको पाँच जोडी हाथ दिये हैं। विष्णूको मानवके दो के बदले चार हाथ दिये हैं। उनके हाथों में शंख, चक्र, गधा और पद्म जैसे साधन दिखाये हैं। जब कोई बच्चा अपने माताके साथ किसी मंदिर में जाकर मूर्तीको देखता है तो उसको पता लगेगा की देव देखने को कैसे हैं। बच्चेकी मा हाथ जोड़ कर मूर्तीको प्रणाम करती है तो बच्चा भी प्रणाम करना सीख जाता है। जिसने पुराण लिखे उसी कवीने चित्र या मूर्ती नहीं बनायी होगी।

कवी और चित्रकार या शिल्पकार साथ साथ बैठकर इन चित्रोंको और मूर्तियों को बनाया या नहीं? अब ईसवी 2016 में देवी देवताओं के चित्र या मूर्तियाँ जो देखनेको मिलती हैं उनको सदियों से अलग अलग चित्रकारोंने या शिल्पियोंने रचाया होगा। मूर्तियाँ अनेक बार सुंदर नहीं बलकी विकार होती हैं। किसी देवी की कथा सुनाकर एक माँ अपने बच्चे के दिल में भय पैदा करती है। मंदिर के देवी को देख कर उस बच्चे में भय पैदा होता है। वह स्तुति करने के बदले अपने गलतियों को याद करके माफी माँगेगा। क्रिस्त शक उन्नीस्वीं सदी में बंगालके प्रसिद्ध धर्मदृष्टि रामकृष्ण परमहंस कलकत्ताके दक्शिणेश्वरमें गंगातीरपर स्थित मा भवतारिणी देवी मंदिरके अर्चक थे। उनको देवीकी पूजा करना बहुत अच्छा लगता था। वे भक्तिगीत गाते गाते मंत्रमुग्ध हो जाते थे। स्वामी विवेकानंद भक्ति गीत गाते नहीं थे बलकी अद्वैत सिद्धांत के अनुसार अपने ईश्वरकी स्तुती करते थे। उन्होंने अद्वैत सिद्धांत का प्रचार किया।

नाम जप करना और एक तरीखे की स्तुती है। किसी को देवी देवताओं की स्तुती में सारा दिन बिताना आवश्यक नहीं है। भक्ति मार्गको अपना मार्ग समझनेवालों ने दिन में एक बार शाम को अपने घर में देव के मूर्तीके सामने बैठना चाहिये। कुछ मीठा पदार्थ एक थाली में नैवेद्य (प्रसाद) के लिये रख कर मूर्तीके सामने रखना चाहिये। मूर्तीको फूलों से सजाना चाहिये। मूर्तीके सामने एक या दो दीपों को जला कर रखना चाहिये। कम से कम एक आरती को तैय्यार रखना चाहिये। पहले दो तीन भक्ति गीत गाना चाहिये। मूर्ती को सिंगारने के लिये उसके ऊपर चड़ाये हुये फूलका एक दळ को आखिर में नैवेद्य में डालना चाहिये। इसका अर्थ है की देव ने हामारा नैवेद्यको स्वीकार किया। अब आरती को जलाकर मूर्तीके सामने घुमा घुमा कर चलाना चाहिये। दायें हाथ में आरती पकडकर बायें हाथ में एक छोटी सी घंटी मे किण किण किण आवाज़ निकालना चाहिये। दो तीन बार आरतीको घुमाने के बाद उस आरती को पूजा में भाग लिये भक्तोंके पास ले जाना चाहिये।

भक्त लोग अपना एक या दोनों हाथ आरती की ज्वाला के ऊपर सरकायेंगे और एक या दोनों हाथ को अपने मूँह पर घुमायेंगे। इन सब बातोंको बच्चे देख कर सीखते हैं। जिसने कभी पूजा देखी नहीं उसको यह सब देख कर सीखना ज़रूर होता है। हर दिन पूजा में शामिल होने से घरवालों को देव की याद आती है। ईश्वरकी याद करना एक तरहकी स्तुती है। जिसको अपने परमात्मा पर विश्वास है वह व्यक्ती परमात्मा को अपना रक्शक मानता है। परमात्मा को न्याय दिलानेवाला मानता है। जो ईश्वर पर विश्वास रखता है वह समझता है की पूजा जैसा धर्म कार्य करनेसे ईश्वर उसका जीवन सुखदायक बनाता है। पुराणों में पुण्य और पाप के बारे में लिखा है। अच्छे कामोंसे हमे पुण्य और बुरे कामोंसे पाप के फल मिलते हैं। दोनोंको हम भुगतनेसे ही हमारे माथे से निकाल सकते हैं।

तीर्थ और प्रसाद पौराणिक पूजा का एक अभिन्न अंग है। शुद्ध पानीको एक लोटेमें लेकर उसमें दो तीन तुलसी पत्तियोंको डालना चाहिये। देवकी मूर्ती के ऊपर चड़ाये हुये फूलका एक दळ को इस पानी में डालना चाहिये। यही तीर्थ है। कई मंदिरों में और घरों में तीर्थको अन्य तरीखेसे बनाते हैं। पहले थोडा चंदन एक सान पत्थर पर एक बूँद पानी में मूसलीसे पीसके लेह बनाते हैं। उस लेह को मूर्ती पर पसारते हैं। बाद में मूर्तीको नहाते हैं। मूर्ती के उपर पानी उँडेल कर उसको नहाया जाता है। उस पानीको मूर्तीकि नीचे रखी हुई एक थाली में इखट्ठा किया जाता है। आरती को लेने के बाद हर एक भक्त को एक चमच तीर्थ अपनी अंजली में लेकर मुँह में डालना चाहिये। उसको गले में जाने देकर पेट में जाने देना चाहिये। तीर्थ लेनेसे भक्तको परमात्मा से संपर्क बनता है। बाद में भक्तोंको प्रसाद बाँटा जाता है। प्रसाद वही मीठा पदार्थ है जिसको मूर्तीकि सामने पहले रखा था।

गाना बजाना नाचना मनुष्यका प्रकृतिक प्रवीणता है। मै समझता हूँ की संकीर्तन भक्तिमार्गका एक प्रमुख हिस्सा है। इस्लाम, क्रिश्चन, सिख, आदि हर एक धर्ममें भी उनकी भाषा और संस्कारोंके अनुरूप भक्ती का प्रदर्शन होता है। आजकलके पढ़े लिखे नौजवान जातियोंको या धर्मोंको प्राथमिकता नहीं देते हैं। लेकिन हर एक को कभी न कभी अपना संकट मिटानेके लिये एक अलौकिक शक्तीकी याद आती है। वह अलौकिक शक्ती ईश्वर, भगवान, देवी, देवता, अल्लाह, ईसामसीह, वाहे गुरूजी, या एक जीवित या मृत महापुरुष हो सकते हैं। पौधे, पत्थर भी हो सकते हैं। अपने वंश के पूर्वज जिसने कोई अन्मोल काम किया हो और उसको गांव में हर एक परिवार याद करते हैं तो वह भी एक दैविक शक्ती के समान माना जाता है। पहले महापुरुष बन जाता है और बाद में एक देवता बन जाता है। ऐसे अनेक पूर्वज के नाम पर मंदिर बनवाये गये।

याद जो है वह क्शणिक होता है। नाम जपमें याद अधिक समय टिकता है। सिरफ संकटके समय एक शक्तीकी याद करना या नाम जप करना मानवकी एक स्वाभाविक प्रकृती है। लेकिन संसारसे मुक्ति पाये हुए साधू संत लोग नाम जप दिन रात करते हैं। साधू संत लोग भीख मांगके अपना पेट भरते हैं। वे काम धंधा नहीं करते हैं। बेरोज़गार व्यक्तीको जनसंपर्क सिरफ घर घर जाकर भीख मांगते वक्त होती है। बाकी समय वे नाम जप में बिता सकते हैं। रोज़ीरोटी कमानेवालेको नाम जप के लिये समय नहीं रहता है। नाम जप बेकार सा लगता है।

फिर भी मनवाले लोग नाम जप या अन्य विधीमें 10-20 मिनट ध्यान करके अपने दिमागको विश्राम दे सकते हैं। जागरणके समय हमारा दिमाग आँखोंके सामने जो दृश्य है और जो शब्ध या बातें हमारे कान सुनते हैं उसपर केंद्रित होता है। हमारी विचारधारा जागरणमें हर क्शण चालू रहती है।

जब हम आँखोंको बंद करके कानोंमें बूच रखके आराम खुर्सी पर बैठके हाथ पांव ढीला करके कोई एक शब्ध या मंत्रको स्मृतीमें लाके लगातार निरंतर जप करेंगे तो हमारी विचारधारा उस शब्ध पर और उस शब्धके अर्थ पर टिकती है। निराकार ब्रह्मको सिरफ शब्धके माध्यमसे जप करते हैं। साकार शिव, विष्णु या कृष्ण भगवानको मूर्तीका रूप स्मृतीमें लाकर जप करना आसान होता है। निराकार ब्रह्म के शब्धमें मन लगे रहना ध्यान कहलाता है। स्मृतीमें शब्धके साथ मुँह में उच्छार करनेसे दिमाग और भी ज्यादा उस चीज़ पर केंद्रित होता है। उच्छार दो तरहके होते है। नादभरित और नादरहित। नादभरित उच्छार करते वक्त कानमेंसे बूच निकालना चाहिये। नादरहित उच्छार करते वक्त कानमें बूच डालके अन्य शब्दोंको कानमें पडनेसे रोकना चाहिये। जप करना और ध्यान करना हमारे शरीर और दिमागको भड़कनेसे रोक कर आरामकी पट्री पर लाने का उपाय है। जप और ध्यानसे भय, शोक (दुःख), मत्सर, क्रोध, आदी जो दिमागमें होते हैं वे जगह खाली करते हैं जिस जगहको नाम शब्ध या आकार पकड़ लेता है।

किसी संकटसे बचनेकेलिये धार्मिक नेता लोग अक्सर नाम जपका सलाह देते हैं। नाम जपसे हमारे दिमागका चिंतन केंद्र उस नाम पर टिकता है। नाम जपते समय हम निष्क्रिय हो जाते हैं। नाम जप करनेसे समस्याका समाधान नहीं होता है। निष्क्रियतासे हम कोई भी दुस्साहस करनेसे बचते हैं। प्रस्तुत समस्या चलती रहती है। हमारे निष्क्रियताके कारण वह समस्या ज्यादा बिगड नही जाती। समय बीतते बीतते वह समस्या कम या ज्यादा हो सकती है लेकिन हम निष्क्रिय होने से वह समस्या अपने गती पर चलता रहता है। हम उसमें अपना हाथ नहीं डालते। उसकी गतीमें हम दखल नहीं देते। उस समस्याको नाम जप के समय भूल जाते हैं। भूलनेसे हम संकटको दिमागमेंसे निकाल देते हैं। संकटकी यादके जगह नाम की याद आके टिकती है। दिमाग पर दबाव कम होता है।

जो कोई व्यक्ती बुद्धिमान होता है वह निष्क्रिय होना पसंद नहीं करता। वह संकटके समय उस संकटका समाधान ढूंढ़ता है।

लौकिक समस्यायें ज्ञान और विज्ञानके माध्यमसे सुलझा जा सकते हैं। समस्यायें प्राकृतिक होते हैं। अलौकिक शक्ती कोई है तो उसको हमारी समस्या सामान्य संगती होती है। जब हम बीमार होते हैं तो बीमारीको चिकित्सा करना चाहिये। अलौकिक शक्तीकी याद करते करते हमें सोचना चाहिये की इस समस्याका कोई समाधान है की नहीं। शरीरमें बल और मनमें धैर्य रखना चाहिये।

अपने शरीरमें बल हो और मनमें धैर्य हो तो हम समस्याका हल निकालने पर मन लगा सकेंगे। अकेले पद्मासनमें बैठकर आँखें बंद करके ध्यान करना भी भक्तीके सहारे कर सकते हैं। नाम जपको भी पद्मासनमें बैठकर आँखें बंद करके जपना उचित है। नाम जपके साथ प्राणायाम करना उपयुक्त होता है। योगासन करनेसे हाथ पाँव के मांस पेशियोंमें रक्त संचार ठीकसे होता है।

भक्तोंको एक लक्श्यकी ज़रूरत है। सामान्य भक्त लोग कृष्ण परमात्मा को अपने भक्तीका लक्श्य बनाते हैं। ईसाई अपने जीसस क्रैस्ट को, मुसलमान अपने आल्लाह परवर्दिगारको, सिख अपने वाहे गुरुजीको, आदि अपने भक्तीका लक्श्य बनाते हैं। भक्तीको जगाना भक्तिगीतोंको गानेसे या सुननेसे आसान होता है। गीतोंका साहित्य भक्तीके लक्श्यके गुणोंकी स्तुती करनेवाले होना चाहिए। भक्तको उन स्तुतियोंसे प्रभावित होना चाहिए। भक्तको मृदंग, एकतारी, करताल आदियोंके लयके साथ डोलना चाहिए। नाचना चाहिए। वास्तव में सिरफ गाना और नाचना भक्ती नहीं है। कलाकार व्यक्ती जो सच्चा भक्त नहीं है उसको अति मनमोहक तरीखे से भक्तिगीत गाना और भावभीन हो कर भक्तिभावोंको दर्शाके नाचना आता है।

दो से भी ज्यादा भक्तोंने साथमें भक्तिगीत गानेसे भक्तीका अधिक प्रभाव भक्तोंपर पड़ता है। सुननेवाले देखनेवाले ऐसे संकीर्तनमें भाग लेकर अपनी भक्ती प्रकट कर सकते हैं। अर्थपूर्ण भक्तिगीत श्रुति और लय के अनुरूप गानेसे सुननेवालोंमें भक्ती रस पैदा होता है। लयके अनुरूप नाचनेसे देखनेवाले भी नाचने लगते हैं जिससे उनकी भक्ती दुगुणी होजाती है। संकीर्तन एक सांस्कृतिक संयोग है। सिरफ गाना और नाचना भक्ती नहीं होती। निष्कपट और सत्यवादी भक्त बनने के लिये अन्य धार्मिक चारित्र्य चाहिये। सिरफ बातोंसे भक्त नही बनता। चिंतन और आचरण भी नेक होना चाहिये। भक्ति धर्मको अपनाने वाले भक्त गण उनके भक्ती के लक्श्य का वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं करते हैं। भक्तीका लक्ष्य सदा अच्छा होता है। कभी बुरा या गलत नहीं होता है।

भक्तीके साथ प्रेमकी झरी भी उठती है तो मनोरंजन होता है। विभिन्न रागोंके ज़रीये मनमें विभिन्न रसोंको उत्पन्न करसकते हैं। परमात्मा के भक्त अपने जीवनमें केवल भक्तीका संचालन नहीं बलकी समाज सुधारक कामोंको भी करते हैं। जिधर भी गये और जहाँभी रहे भक्ति धर्म पालने वाले अच्छे गुण के होते हैं। समाजमें कोई भी अन्याय होता तो उस अन्यायका परिहार ढूंढ़ने और परिहार करनेमें लगते हैं। मनुष्य अपना कष्ट मिटानेकेलिये सुलभ उपाय ढूंढ़ता है। प्राणियोंको दयासे देखना भक्ति धर्मका एक अंग है। गरीबोंकि हर तरहकी सेवा करना, किसीके ऊपर भेदभाव नहीं करना, आदी सद्‌गुण भक्त का होते हैं। वे भक्तिगीत गाते हैं और भक्ति कविता भी लिखते हैं। अनाथाश्रम, चिकित्सा केंद्र, पाठशाला, स्कूल, कालेज, आदियों में बिना शुल्क बिना स्वार्थ, स्वेच्छासे स्वयंसेवक बनते हैं। भक्तियोग, भक्ति धर्म, भक्ति सिद्धांत, आदि विषयोंका प्रचार किया करते हैं।

हिंदू धर्म बदल गया है।

आज के ज़माने में विश्व में चार वेदों को हिंदूधर्म के अग्रगण्य ग्रंथ मानते हैं जैसे बैबलको ईसाई धर्मका और कुरानको इस्लाम धर्मका। लेकिन कोई हिंदू अपने घर में वेदोंको नहीं रख लेता है। कोई भी हिंदू हर दिन वेदों में से एक दो प्रष्ट पढ़ने की आदत नहीं करता है जैसे ईसाई लोग बैबलसे और मुसलमान लोग कुरान से। हिंदुओं के मंदिरों में भी वेदों का मंत्र जो पढ़ते हैं वे बहुत कम हैं। पुराणों में से ज्यादा मंत्र मंदिरों में पढ़ते हैं। हिंदुओं के घरों में पिछले एक या देड़ हज़ार बरसों से आगे रचाये हुए विष्णु सहस्रनाम या ललिता सहस्रनाम पढ़ते हैं और उनको ही विष्णूकी या ललिता देवीकी पूजा में उपयोग करते हैं। शिव मंदिरों में शिव पुराणके मंत्रोंको पढ़ते हैं। वैदिक धर्मके होम और हवनोंको आज कल बहुत कम घरों में करते हैं। संध्यावंदन जो हर एक उपनयन संस्कारित युवकने हर दिन जीवन भर करना चाहिये वह भी एक दो हफ्ते करते हैं। आगे नहीं करते हैं।

जो सामान्य पूजा विधान अब हिंदुओं में प्रचलित है वह गणेश, राम, कृष्ण, दुर्गा, लक्श्मी, शारदा, आदी देवी देवताओं की पूजा है जो पुराणों में बताये हुए हैं। सविता, अग्नी, इंद्र, आदी वेदों के देव की नहीं। लेकिन अगर कोई हिंदू अपने घर में पूजा नहीं करता है तो उसको कोई भी बहिष्कार नहीं करसकता हैं। घर में वेद मंत्र पढ़ने से भी भजन गाना अधिक प्रचलित है। ईसवी 1875में आर्यसमाज स्थापित होनेके बाद वेदोंका और उपनिषदोंका प्रचार थोडा ज्यादा हुआ। घर में हवन करनेवालों की संख्या बढ़ी। आर्यसमाजने पुराणोंको और भागवतको वैदिक याने हिंदूधर्मके शास्त्र माननेसे इनकार किया। रामायणको और महाभारतको केवल इतिहास माना। कृष्ण और राम केवल ऐतिहासक महापुरुष समझे गये। भगवदगीताको हिंदू शास्त्रके रूपमें नहीं देखा। अस्प्रश्यताके आचरणको हिंदू धर्मसे अलग करनेका प्रयास आर्यसमाजने भी किया। गांधीजीके कालमें ही यह परिवर्तन ज़मीन पर प्रारंभ हुआ था।

सब हिंदुआँको एक समान माननेमें और जातिभेदके विरोधमें बातें हुईं। ब्राह्मणोंको अलग भोजन पंक्तीमें बिठानेकी रिवाज़ सार्वजनिक क्शेत्रोंमें कम होता गया। ईसवी 1947में जब हिंदुस्तानमें अंग्रेज़ी हुकुमत खतम हुई और ब्रिटिष इंडियाका बटवारा हिंदुस्तान-पाकिस्तान के बीच हुआ और दो स्वतंत्र देश अस्तित्वमें आये तो भारत केवल हिंदुओंका भारत नहीं रहा। जो भी लोग भारतमें रहते थे उनको नये संविधानके तहत समान हक उपलब्ध हुए। स्वतंत्र भारतमें (ईसवी 2011के जनगणतीके अनुसार) सरासर 80 प्रतिशत लोग अपना धर्‌म हदि्ूधर्‌म मानते हैं। कई लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं की उनका कोई धर्म नहीं है। भारतमें जो सरकार है वह किसी धर्मको सरकारी धर्म नहीं मानता। भारतवासीको अपना धर्म का नाम केवल सरकारी सर्वेक्शणके समय बताना पड़ता है। किसी हिंदूको अगर सरकारी नौकरीमें आरक्शणकी सुविधाका लाभ उठाना है तो उसको अपनी हिंदू जातिका खुलासा करना पड़ता है।

हिंदू धर्ममें कई जातियां हैं। उनमें कई जातीके लोगोंको पिछड़ा वर्ग नहीं मानते हैं। इनमें ब्राह्मण जातीके लोग प्रमुख हैं। स्वाभिमान स्वरूप ब्राह्मणोंको आरक्शणकी इच्छा या अपेक्शा नहीं है। लेकिन ब्राह्मण जाती अब भारत स्वतंत्र हो कर सत्तर बरस बाद पिछडी जाती सी बनी है।

सरकारी आरक्शण नीतीमें ब्राह्मण और अन्य ऊंच जातियोंको 'सामान्य वर्ग' (जेनरल केटगरी) के नामसे पुकारते हैं। दूसरा वर्ग 'अनुसूचित वर्ग' (स्केड्यूल केटेगरी} होता है। अनुसूचित वर्गमें अनुसूचित जाती और अनुसूचित जनजाती हैं। तीसरा वर्ग 'अन्य पिछड़ा वर्ग' (अदर ब्याक्वर्ड क्लासस) है। जिसमें जातीके आधार पर पिछड़े हिंदू लोगोंको शामिल किया है। सरकारकी आरक्शण नीतीसे जातिभेदको पुष्टी मिली है। किसी हिंदूकी जाति उसकी मांबापकी जाती पर निर्भर होती है। हिंदूकी जाति उसके जनमकी जाति है।

अपनी जाती कोई भी हो हिंदूको अपनी इच्छासे सामान्य वर्गमें शामिल होनेसे कोई रोक नहीं सकता। लेकिन किसी अनुसूचित या जनजातीमें शामिल होनेकेलिये उस हिंदूके मांबाप उसी जातीके होने चाहिये तथा उसका प्रमाण पत्र मंगवाना चाहिये।

भारतमें केंद्र सरकार मुसलमानोंको, सिक्खोंको, ईसाईयोंको और जैन धर्मके लोगोंको मतीय अल्पसंख्यक मानती है। हिंदू धर्मके लोगोंको अपने धर्मके बारेमें केवल जाती का नाम मालूम हो तो बस होता है। बहुतसे हिंदू लोगोंको अपने धर्मके बारेमें जानकारी कम है। अगर कोई मुसलमान अपने जीवनमें एक बार भी मस्ज़िद जाकर नमाज़ नहीं पढ़ता तो उसका मुसलमान होनेका अधिकारके ऊपर प्रश्न उठता है। ईसाई लोगोंको भी गिरज़ाघर जाकर सूलीके सामने घुटने टेकना पड़ता है। जैन लोगोंको अपने धर्मको प्रकट करनेकेलिये जैनमंदिर जाकर तीर्थंकरोंकी पूजा करना आवश्यक है।

लेकिन हिंदुओंको ऐसा कोई नियम नहीं है। उनको कहीं जाकर अपने भगवानकी प्रार्थना करके धर्म प्रकट करनेकी कोई अनिवार्य नियम नहीं है। हिंदू लोग केवल अपने घरमें ही, जैसे चाहे वैसे अपने धर्मकी शिष्टताको रख सकते हैं। फिर भी सब हिंदू लोगोंके अपने ही देवी देवता होते हैं और हर एक देवी देवताका एक मंदिर होता है। हिंदूधर्मके शास्त्रोंमें तैंतीस कोटि देवी देवताओँका उल्लेख हुआ है। हर एक देवी देवताको भगवान के समान मानते हैं। यह भी मानते हैं की भगवान एक ही है और तैंतीस करोड़ देवी देवताओँका अलग अलग नाम होते हुए भी इनमें से किसीकी प्रार्थना करनेसे उनकी प्रार्थना उसी एक भगवानके पास पहुंचती है। जिन नागरीकोंके माँबाप हिंदू, लिंगायत, वीरशैव, ब्राह्मो समाजी, प्रार्थना समाजी, आर्य समाजी, आदि वर्गके हैं वे सव हिंदू हैं।

मुसलमान, ईसाई, फार्सी, या यहूदी लोग हिंदू नहीं हैं। हिंदू धर्मके अन्य नाम हैं वैदिक और सनातन। ईसवी 1947से भी पूर्व हज़ारों बरसोंसे हिंदुस्तानमें रहनेवाले नागरीक किसी धर्मके क्यों न हो सब हिंदू कहलाते थे। उस समय हिंदुस्तानियोंको हिंदू नाम कोई धर्मका नहीं बलकी एक सामान्य नाम बनकर उभर आया था। सिंधू नदीके पार पूर्व दिशामें जो प्रदेश था उसको सिंधुस्थान कहते थे। सिंधुस्थान अरब्बी भाषामें स्वरांतर होकर हिंदुस्थान होगया। हिंदुस्थानमें रहनेवालोंको हिंदू नाम दिया गया। हिंदुस्थानमें रहनेवालोंका धर्म भूताराधक, नागाराधक, सूर्याराधक, बौध, जैन, सिख, वैदिक, सनातन, लिंगायत, वीरशैव, आदी वैविध्यमय था। अंग्रेज़ोंने मुसलमान, ईसाई, फार्सी और यहूदी लोगोंके सिवा बाकी सब हिंदुस्थानियोंको हिंदुओंके गुट में शामिल किया। परंतु जिस धर्मको हिंदुस्तानका धर्म समझा उन सब धर्मोंको हिंदू धर्म का नाम दिया क्योंकी इस देशका नाम हिंदुस्तान था।

अब भी भारतका नाम हिंदुस्तान भी है और इंडिया भी हैं। पाकिस्तान जो अंग्रज़ोंके इंडियाके विभजनसे पैदा हुआ वह विभजनके पहले हिंदुस्तानमें मिला हुआ था। उस समय पाकिस्तान भी हिंदुस्तानका एक भाग था। लेकिन पाकिस्तानको अब हिंदुस्तान कहकर बिलकुल नहीं कहते। उसको इंडिया नाम भी नहीं है।

सारे विश्वमें इसवी 2016में हिंदूधर्मका अपना स्वरूप आधुनिक विज्ञान और तंत्रज्ञानके अनुकूल परिवर्तित हुआ है। हिंदूधर्म अब सबसे आधुनिक, और गौरवपूर्ण धर्म माना जाता है। हिंदू लोग अपने धर्मको एक परंपरागत आस्था मानते हैं। जो भी धार्मिक विधियाँ देखनेमें अंधविश्वास जैसे लगते हैं उनको पारंपरिक स्थान देकर ऐतिहासिक माना गया हैं। भारतके संविधान धार्मिक संविधान नहीं है। यह एक लौकिक संविधान है। इसके कारण भारतके सभी कानून ऐहिक और सांसारिक सत्यको महत्व देते हैं। ऐसे धर्मनिरपेक्श राष्ट्रमें नागरिक अपना इष्ट का धर्म चलानेमें स्वतंत्र हैं।

हिंदूको अपने इष्टदेवताका पूजनका निषेध नहीं है। भारतके संविधानमें यह आश्वासन दिया है की हर नागरिक अपनेको किसी धार्मिक संघमें भर्ती करा सकता है। अपने धर्मका आचरण करनेमें हर नागरिकको सरकार सुविधा मुहैया करती है। धर्मके नाम पर प्रार्थना मंदिर बना सकते हैं। अपने घरमें, अपने गांवमें, अपने मंदिरोंमें हर एक नागरिक अपने धार्मिक विधियोंको चला सकता है। कुछ धार्मिक कर्मोंके लिये सरकार अपने खजानेसे धन खर्च कर सकता है। भारतके संविधानके तहत राज्य सरकारोंके अपने अलग कानून होते हैं। राज्य सरकारोंको केवल अपने प्रदेशमें रहनेवालोंका धर्म संबंधी कानून बनाने का हक़ हैं। जैसे मुसलमानोंको हाज यात्रापर जानेकेलिये टिकट कटवाना। मंदिरोंको, मठोंको, आश्रमोंको चलानेके लिये उनकी देखभाल करनेकेलिये आवश्यक व्यवस्थापक समितीको स्तानीय सरकार नियुक्त कर सकती है।

भारत अनेक राज्योंका एक संघ है। एक संयुक्त राष्ट्र (यूनियन्) है। केंद्र सरकार अपने कानून सारे देशमें लागू करता है। केंद्र सरकारको सारे देशमें लागू होनेवाले धर्म संबंधी या किसी अन्य विषय पर कानून बनानेका अधिकार दिया है। केवल हिंदूधर्मके लोग हर राज्यमें बडी संख्यामें रहते हैं। मुसलमान लोग भी हर राज्यमें पसरे हुए हैं। लेकिन मुसलमान लोग पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार और काश्मीरमें अधिक संख्यामें देखनेको मिलते हैं। ईसाई लोग केरल और गोवा राज्यमें केंद्रित हैं। सिख लोग पंजाबमें और जैन लोग गुजरातमें अधिक देखनेको मिलते हैं। लेकिन भारतीय संविधानमें जनप्रतिनिधियोंके चुनावमें मतदानमें प्रत्येक्करण नहीं है। मुसलमानोंको भी सामान्य मतदानमें भाग लेनेकेलिये भेदभाव नहीं है। भारतमें प्रजाप्रभुत्वका स्वरूप आर्थिक, सामाजिक, राजकीय, आदि विषयोंमें न्याय दिलानेवाला है।

हिंदू समाजमें हज़ारों बरसोंसे निचले जातीके लोगोंको भेदभाव करके अन्याय हुआ था। इसका प्रायस्चित्तके रूपमें स्वतंत्र भारतके संविधान रचनाकारोंने आरक्शण नीतीको अपनाया था। मुसलमानों. ईसाइयों, फार्सियों, जैन समुदायोंको जनप्रतिनिधियोंको चुननेमें आरक्शण नहीं मिलता है। सिरफ अनुसूचित जाती और जनजातिके उमेदवार जनप्रतिनिधियोंके चुनावमें आरक्शण पाते हैं। चुनावमें अल्पसंख्यक अपने उमेदवारको जीत दिला सकते हैं। कोईभी धर्म अगर इन विषयोंमे बाकी धर्मोंको हानी पहुंचानेवाला नियम लाता है तो उसको सरकार मान्यता नहीं देती है। एक साथ होकर कोई भी गुट चुनावमें अपना उम्मीदवारको जीत दिला सकता है। धर्मके नाम पर राजकीय गुटबंदी करना मना है। धर्मके नाम पर मतयाचना भी निषिद्ध है।

राजकीय पक्शोंके चुनाव संहिता एक दो गुटोंको अपने तरफ आकर्शित करनेकेलिये सिद्ध किये जा सकते हैं। लेकिन धर्मके नाम पर नहीं। इसीलिये अगर हिंदुओंके आर्थिक, सामाजिक, राजकीय, आदि बल की वृद्धी होनी है तो हिंदुओंको एक जुट होकर अपने उम्मीदवारों को सामने रखकर धर्मके नाम लिये बिना मतदान करना चाहिये।

राजकीय पक्शोंको प्रजाप्रभुत्वमें जाती या धर्म, भाषा या प्रदेशके नाम पर मतयाचना अनुचित और अपराध माना है। और हिंदुओंको पहले अपने देशकी भलाई सामने रखकर मतदान करना चाहिये। अपने देशकी भलाईसे हिंदुओंकी भलाई होगी। अल्पसंख्यकोंको भी अपने भारतको ऊँचायी पर ले जानेकेलिये उचित उम्मीदवारोंको चुनकर जनप्रतिनिधी बनाना चाहिये। सबका विकास ही हर एक भारतीय नागरीक स्वीकार करेगा। केवल एक समुदायके लोगोंका विकास बस नहीं होता है। ईसवी 2016में भारत इस दिशामें आगे बढ़ रहा है।

धर्म निरपेक्शताके ज़रीये ही सारे भारतीयोंका विकास होसकता है। नागरिकोंको अपने धर्मके विचारोंको प्रचार करते वक्त अन्य धर्मोंकी निंदा करना अनुचित है। हर हिंदूको धर्मका आचरण के ज़रीये अपने देशके संविधानको बल प्रदान करना चाहिये। अगर हिंदू लोग अन्य धर्मोंकी निंदा करते हैं तो वे देशके संविधानको निर्बल बनायेंगे। संविधानकी मान्यता हर एक हिंदूका कर्तव्य है। वेदोंमें, उपनिषदोंमें, पुराणोंमें, भगवद् गीतामें, भागवतमें, महाभारतमें, रामायणमें, आदि विविध हिंदू शास्त्रोंमें हिंदुओंकेलिये अनेक नीती और नियम पालन करनेको कहा है। भारतमें हिंदू बनके रहनेकेलिये इन नीति और नियमोंका पालन अनिवार्य नहीं है। इन शास्त्रोंकी नीति नियमोंका पालन नहीं किया तो उसको कोई दंड लगता नहीं।

धार्मिक नीतियोंका पालन किये बिना भी एक हिंदू आदमी अपनेको हिंदू कहला सकता है। कोई भी व्यक्ती, संस्ता, या समाज एवं सरकार उसको जातिभ्रष्ट या जातिबाहिर नहीं कर सकते हैं।

भारतमें जनमे हिंदू बालक अगर भारतमेंही रहकर भारतीय स्कूल कालेज जाकर अपने मांबापके घरमें बडा या प्रौढ़ होता है तो उसको हिंदू संस्कार आसानीसे मिलते हैं। लेकिन अन्य देशोंमें रहनेवाले हिंदू परिवारमें जनमे बच्चोंको हिंदूधर्मके संस्कार बहूत कम मिलते हैं। लेकिन उनकी जाती (रिलिजन) हिंदू होती है। प्रवासी भारतीय लोग अपने पास्पोर्टमें (पारपत्र में) अपना रिलिजन जो है वह नाम दर्ज नहीं करते हैं। हिंदू लोग अपने अन्य दस्तावेजोंमें अपना रिलिजन हिंदू लिखने की ज़रूरत हो सकती हैं। उसी वक्त उनका रिलिजन हमेशाके लिये वही रहता है। जब उनको बच्चे पैदा होते हैं तब उस बच्चोंका रिलिजन भी वही रहता है जो उस बच्चेके मां या बाप उसके जनम पत्रिकामें दर्ज करते हैं। प्रवासी भारतीय हिंदुओंको अपने देश पर जैसा गर्व है वैसेही अपने रिलिजनपर भी गर्व रहता है।

हिंदू रिलिजन छोड़कर अन्य कोई रिलिजनमें भर्ती होना आसान है लेकिन दुर्लभ है। प्रवासी भारतीयोंमे कभी कभी मतांतर देखनेको मिलता है हालाँकी बहूत कम संख्यामें होता है। जिस किसी विदेशमें झूटा प्रचारके कारण हिंदू धर्मको बुरा नाम दिया गया है उन विदेशोंमें हिंदुओंको कई तरहके कठिनायियोंका सामना करना पड़ता है। मुख्यतः इस्लाम देशोंमें ज्यादा भेदभाव होता है।

मुख्यतः इस्लाम देशोंमें उनके संविधानके तहत अन्य धर्मोंके लोगोंको समान हक़ नहीं है। इस्लाम तानाशाहीवाले देशोंमें सब धर्मके लोगोंको समान न्याय नहीं मिलता है। खास करके हिंदुओंको मुसलमानोंके जैसे समान हक़ नहीं दिये होते हैं। विदेशोंमें अन्य धर्मोंका प्रभाव हिंदुओं पर तीव्र होता है और केवल स्वधर्म पर अभिमान रहनेसे हिंदू जन अपना धर्म पालन करते हैं। हिंदूधर्मकी एक मुख्य धारा आहारकी होती है। भारतमें ब्राह्मणोंको मुरगी, मछली, या मास खाना निषेध है।

ब्राह्मणोंको भारतमें घरके बाहर हो या अंदर दाल चावल रोटी सब्ज़ी आदि भरपूर मिलते हैं जिससे उनको सस्याहारी बनके रहना मुश्किल नहीं है। लेकिन वेदेशमें ब्राह्मणोंको सिरफ अपने घरमें सस्याहारी खाना पकाके खाना पड़ता है। घरके बाहर दफ्तरोंमें, कार्खानोंमें, अन्य नौकरीके जगहोंमें भारतीय सस्याहारियोंको खाना खानेमें बहूत दिक़्क़त होती है। शुद्ध सस्याहारी खाना कहीं भी नहीं मिलता। होटेलोंमें सस्याहारी खाना नहीं मिलता है। चुन चुनके एक दो मुरगी-मछली-मास रहित चीज़ोंको ढूंढके खाना पड़ता है। हिंदुओंके अनेक त्योहार भारतमें आसानीसे मनाते हैं। त्योहारोंको घरके अंदर और घरके बाहर आस पासके लोगोंसे मिलकर मनाना आसान है। भारतमें अनगणित मंदिर हैं जिनमें हिंदू लोग त्योहारोंमें शामिल होते हैं। लेकिन वेदेशोंमें हिंदू मंदिर विरला हैं और दूर दूरके शहरोंमें एक या दो जगह मंदिर देखनेको मिलते हैं।

जैसे भारतमें अधिकांश स्कूलोंमें और कालेजोंमें शिक्शक, अध्यापक, प्राध्यापक आदि हिंदू होनेकी संभावना ज्यादा है वैसे ही विदेशोंमें वे सब कर्मचारी अन्य धर्मोंके होनेकी संभावना ज्यादा है। अपने धर्मके लोगोंके साथ और अपनी भाषा बोलनेवाले लोगोंके साथ काम करना आसान होता है। सब कोंकणी बोलनेवाले हिंदू लोग एक संघ बनाकर नियमित कालमें एक बार कहीं एक जगह मिलकर भोजन करते हैं। अन्य भाषाके लोगोंकी भी ऐसी ही स्थिती होती है। विदेशोंमें भारतीयोंका पहला असली मित्र बहुतेक संदर्भोंमें एक भारतीय ही होता है। प्रवासी भारतीयोंकी सब स्त्रियाँ जल्दी अपने अपनोंको पहचानते हैं और एक दूसरेकी ज़रूरत पड़ने पर सहायता करते हैं। एक दूसरेसे घंटो फोन पर बात करते हैं। अगर विदेशमें रहनेवाले प्रवासी भारतीय मतांतर होकर ईसाई धर्मको अपनाते हैं तो उनको नौकरी मिलना थोड़ा आसान होता है।

स्कूल और कालेजमें अन्य विद्यार्थियोंके साथ व्यवहार करना भी आसान हो सकता है। ईसाई धर्म के हो तो गिरिजाघरोंमें शहरके लोगोंसे बिरादरी बसानेको अधिक अवसर मिलते हैं। जब तक किसी प्रवासी भारतीयके रिश्तेवाले भारतमें रहते हैं तब तक मतांतर होनेका अवसर कम हैं। जब भारतमें कोई भी रिश्तेवाले नहीं होते तब विदेशी हिंदू स्वतंत्र हो कर अन्य धर्मोंके लोगोंके बीच भटकता है। तब उसकी परीक्शा होती है की वह अपना हिंदूधर्मको कितना मूल्यवान समझता है। विदेशों में रहनेवाले हिंदुओंको अपना धर्म हिंदूधर्म कहनेकी प्रेरणा उनके भारतमें रहनेवाले रिश्तेदार हैं। विदेशमें रहनेवाले किसी हिंदूको अपने भारतके रिश्तोंसे जोड़ना आवश्यक रहता है। अपना रिलिजन हिंदू बनाये रखने के लिये कुछ प्रेरणा याने मतलब होना चाहिये। भारत में रहनेवाले हिंदुओंको विदेशमें वास करनेवाले हिंदुओंके प्रति गर्व होना चाहिये।

विदेशोंमें हिंदुओंको दूसरे धर्ममें मतांतर होने से रोकने के लिये कई उपाय हैं। मंदिरोंकी स्थापना इनमें प्रमुख स्थान लेता है। मंदिरोंमें हिंदूधर्म जगमगाता है। मंदिरोंके अलावा आश्रम, मठ, गुरुकुल आदी बना सकते हैं। भारतीय संस्कारोंको उपलब्ध करानेकेलिये और भारतीय आचार विचारोंको जीवित रखनेकेलिये विदेशके मंदिरोंमें छोटी मोटी पाठशालायें खुलना चाहिए। इन मंदिरोंमें एक या अनेक देवी देवताओंकी मूर्तियाँ या चित्रोंको स्थापित करके उनकी पूजा हो सकती है। होम और हवन, याग और यज्ञ होसकते हैं। कीर्तन और भजनोंका प्रबंध हो सकता है। भारतमें हिंदूधर्म अनेक संघटनोंमें बांटा हुआ है तो भी हर एक संघटनमें पर्याप्त जनसमूह भाग लेते हैं। लेकिन विदेशोंमें इन संघटनोंके केवल एक या दो अनुयायी होंगे और अलग अलग संघटनोंका प्रत्येक मंदिर स्थापित करनेकेलिये पर्याप्त सदस्य नहीं होते हैं।

विविध संघटनोंके सदस्य साथ देंगे तो मंदिर किस संघटनका क्यों नहो उसमें सब हिंदू भाग ले सकते हैं।

सब हिंदुओंने मिलकर सामान्य शैलीमें अपना पूजा पाठ करना आवश्यक है। इससे धर्मको बल मिलता है और हिंदुओंकी आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक प्रगती सब देशोंमें हो सकती है। अपने बच्चोंको अपना हिंदूधर्मके बारेमें प्रशिक्शण देना मंदिरोंमें सुलभ होता है। अपने बच्चोंको हिंदू होनेसे गर्व होना आवश्यक है। विदेशोंमें हिंदू बने रहनेसे उनको कोई हानी नहीं पहुंचनी चाहिए। रिवाज़ोंसे भरा हुआ अपना हिंदूधर्म भारतमें जाती, भाषा या प्रादेशिक गुटोंमें बांटा हुआ हो तो भी वह एक बड़ा सम्मिलन सा दीखता है। विदेशोंमें भी इन गुटोंके सदस्य अलगसे इकट्ठा होके अपना विशिष्ट संघ बनाते हैं। इन गुटोंको एक साथ मिलकर हर एक शहरमें एक सामान्य हिंदू संघ बानाना आवश्यक है।

विज्ञान और तंत्रज्ञानमें बहूत प्रगती होनेसे अब एक हिंदू दूसरे हिंदूसे अतिवेगसे अपने सूचनाओंको और संदेशोंको भेज सकता है मंगा सकता है। संचार सुगम होनेके कारण हिंदू लोगोंने परस्पर संपर्कमें रहना सुलभ साध्य बन गया है। भारतमें हिंदूधर्मको बुरा धर्म माननेवाले लोग बहुत कम हैं। लेकिन वेदेशोंमें हिंदूधर्मके विरोधी अत्यधिक हैं। विश्वके विविध धर्मोंके बीच युद्ध होते रहेते हैं। हमारा हिंदूधर्म विश्वमें सब धर्मोंका मूल है। वही प्रचीन धर्म अब भी जीवित है। विश्वके लोग प्राचीन कालमें सूर्यको भगवान मानते थे। आदिवासी लोग अब भी उनके पूर्वजोंको ईश्वरका स्थान देकर पूजा करते हैं। नागको, परबतोंको, नदियोंको, काल्पनिक भूत-प्रेतोंको भी देवी देवता मानते थे। अब भी विश्वभरमें कई देशोंमें कई जगहोंमें यही प्रथा चलती है। अकेले एक भगवान या ईश्वरका नमूना वेदोंने सबसे पहले लोगोंके सामने रखा।

मोसस नामके एक यहूदी संतने भी हज़ारों बरस पहले भगवान एक ही होनेका अंदाज़ा किया था। क्रिस्त पूर्व छटे शताब्धीमें स्थापित बौध और जैन धर्मोंने वैदिक धर्ममें बहुत हलचल मचाई थी। राजा अशोकने बौध धर्मको सारे विश्वमें फैलानेमें अग्रिम प्रयास किया। श्रीलंका, मयन्मार, थायल्यांड, वियेटनाम, जपान, चीन और अन्य पूर्व एशिया खंडके देशोंमें अब भी बौध धर्म प्रथम स्थान पर है। ईसामसीहने अपना ईसाई धर्मको अनुसूचित करके येहूदियोंको और रोमनोंको अपने मतमें शामिल कर लिया। क्रुसेडर्स युद्धके बाद ईसाई धर्म सारे युरोपमें फैल गया। राजा विक्रमादित्यके कालमें वैदिक सनातन धर्म फिरसे अपना सर उठाकर खडा हो गया और अनेक स्वामियोंने मंदिरोंके अलावा मठोंकी स्थापना करके सनातन धर्मका पुनरुज्जीवन किया। जब पौराणिक पंडितोंने राजा विक्रमादित्यके काल में मूर्ती पूजाके समर्थनमें होम हवन आदी विधियोंको पीछे ढकेला तब से भारतवर्षमें बौध धर्म अधोगती पर चल पड़ा।

होम हवन याग आदी विधियोंके बदले पौराणिक पंडितोंने अग्निज्वालाकी आरती सजाकर जाघंट, मृदंग और करतालके साथ मूर्तियोंकी पूजा करनेकी रीती प्रस्तुत की।

बौधधर्म ईश्वर है या नहीं इस विषयमें चर्चा नहीं करता है। पौराणिकोंके ईश्वरको बौधधर्मियोंने खंडन नहीं किया। बौध धर्मियोंने निर्वाणको अधिक महत्व दिया था। जब बौध मतमें दो गुट हो गये अर्थात् महायान और हीनयान नामके दो सिद्धांत सुननेको आये तब महायान के पंथियोंने गौतम बुद्धको ही ईश्वर माना और बुद्धके मूर्तीको ईश्वरके समान ऊंचा स्तान दिया। बुद्धकी मूर्तीकी प्रार्थना करना प्रारंभ किया। इसको देखकर पौराणिक पंडित बुद्धको ईश्वर के समान माननेमें सहमत हो गये। पौराणिक शास्त्रमें इससे आगे जाकर बुद्धको विध्णूका और एक अवतार माना। क्रिस्त शक पंद्रहवीं सदी में भक्तिप्रधान हिंदूधर्मका प्रचार वेग पकडा। क्रिस्तानंतर सातवीं सदी में महम्मद पैगंबरने इस्लाम धर्मकी स्थापना की।

इस्लाम केवल एक ईश्वरको मानता है और उसको अल्लाह कहके पुकारता है। जब इस्लाम धर्म दक्शिण भारतमें अरब्बी मुसाफिरोंके द्वारा प्रसार हुआ तो हिंदुओंका सनातन धर्म थोडा लडखडाया। वैदिक निराकार सर्वांतर्यामी ईश्वरके विचारको पुनर्जन्म मिला। स्वामी शंकराचार्यजीने अद्वैत सिद्धांतको पुष्टी दी। स्वामी मध्वाचार्यजीने द्वैत सिद्धांतको लोगोंके सामने रखा। स्वामी रामानुजाचार्यने विशिष्टाद्वैत मतको सबसे सही मत होनेका दावा किया। इन तीनों स्वामी दक्शिण भारतमें जनमे थे। उत्तर भारतमें चैतन्य महाप्रभुजीने भक्तियोगका प्रतिपादन किया। मंदिरोंमें निचले जातीके लोगोंको प्रवेश निशेध करके सनातन धर्म अधोगति की तरफ बढ़ने लगा।

क्रिस्त शक बारहवीं सदीमें मुस्लिम राजाओं के कालमें जिज़िया और अन्य करोंको लगानेके वास्ते मुस्लिमेतर लोगोंकी पहचान अच्छी तरह करना आवश्यक हुआ। मुघल हुकुमतके कालमें जो कोई मुसलमान नहीं था उसको हिंदू कहते थे। उस व्यक्तीका तादात्म्य या परिचय हिंदू का हुआ।

मुघल साम्राज्यमें रहनेवाले हर एक मुस्लिमेतर व्यक्ती हिंदू नामसे पुकारा गया। मुघल हुकुमतके कालमें हिंदू लोगोंको अधिक ज़कात और सीमा शुल्क देना था। जिस किसी पुरुषका सुन्नत हुआ हो वह मुसल्मान सिद्ध होता था। जिसके कानोंमें छेद और जेवर होते थे वह पुरुष मुस्लिमेतर याने हिंदू सिद्ध होता था। क्रिस्त शक बारहवीं सदीके आरंभसे अठारह सदीके आरंभतक सरासर छे सौ बरसकी अवधीमें हिंदुओंको अलगसे पहचानना आवश्यक होगया था। मुघल हुकुमतके कालमें हिंदू, बौध और जैन लोगों की पहचान एक ही थी। हर एक मनुष्यको अपने जीवनमें कठिणायियोंको भुगतना पड़ता हैं। गौतम बुद्धने कहा की इन कठिणायियोंको कम करनेकेलिये भिक्शू बनना अच्छा है। भिक्शाटन करके सामग्री लाकर अपना स्वयं पाक बनाकर दिनमें एक बार खाओ। बौध चैत्रोमें रहकर ध्यानमें, शास्त्र पढ़नेमें, योगासन, प्राणायाम, आदी करते हुए समय बिताओ। करीब करीब दस बरस चैत्रमें बिताकर फिर शादी करलो। ग्रहस्थाश्रममें भी अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह आदी नियमोंको हर व्यवहार में पालन करो।

शेतकरी, उद्योग, व्यापार, नौकरी आदी वृत्तियोंको अपनाओ मगर सारे व्यवहारोंमें अतीव काम, अतीव क्रोध, मद, मत्सर, लोभ आदी अनिष्टोंको, बुरे गुणोंको, तामसिक भावोंको अपने पास न आने दें। ब्राह्मणादि जातियोंको खतम करो। निचले वर्गके लोगोंको भी समान अवकाश मिलना चाहिए। सबको शास्त्र पढ़नेका, सीखनेका, सिखानेका अधिकार दिया है। वेदोंको उपनिषदोंको पढ़नेकी ज़रूरत नहीं है। याग, यज्ञ, हवन, होम आदि करनेकी ज़रूरत नहीं है। यही धर्म है। इसका शरण लो। बुद्धके सूत्रोंका पालन करो। निर्वाणके दिशामें जीवन बिताओ। अगर इस जनममें इन नियमोंका पालन करोगे तो अगले जनममें तुम्हारा जीवन सुखद हो जायेगा। बौधधर्म भारतमें क्रिस्त पूर्व छहवी सदी में स्थापित होकर आहिस्ते आहिस्ते सब जगह फैला। राजाओंने भी बौधधर्म स्वीकार किया तब प्रजाने भी इसको अपनाया। लेकिन वैदिकधर्मने हार नहीं मानी। वैदिकधर्मके अनुयायियोंने नये नये शास्त्रोंको बनाया।

पुराणोंको लिखा और ईश्वरको समझनेमें आसानी बरतने के लिये देवी देवताओंकी मूर्तियोंका पूजन की सिफारिश की। सोलह संस्कारोंका मंत्रोंको संयोजित करके विवाहसे लेकर श्राद्ध तक आचारमें लाया। विशेषतह ब्राह्मणादि ऊँचे जातियोंके परिजनोंको अपना वैदिक सनातनधर्मका अनुचरण करना आसान किया। गुरु नानकजी का ग्रंथसाहेब भी इनसे प्रभावित हुआ। ग्रंथ साहेबका पठन को मंत्र पठनके शैलीमें नहीं बलकी गानेके रूपमें पढ़ते हैं। ब्राह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्यसमाज, आदि हिंदूधर्मके सुधारक संस्थाओंने अपना अपना योगदान देकर हिंदू धर्मको वैज्ञानिक बनानेमें मदद की है। आर्यसमाजने तो होम हवनोंको प्रोत्साह दिया।

अब ईसवी 2016में आर्यसमाज केवल सामाजिक क्शेत्रोंमें अर्थात् अंतर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, शुद्धी याने हिंदूमतमें प्रवेश दिलाना आदि विधियोंकेलिये प्रसिद्ध है।

ईसवी 2016 के आधुनिक हिंदूधर्ममें एक बहूत बड़ा बदलाव यह आया है की निचले जातीके लोगोंका स्वाभिमान और आत्मविश्वास बढ़ा है। सूचित जाती, जनजाती या अन्य पिछडे जातीके होना अब एक गर्वकी बात बन गयी है।

ब्राह्मणोंको पता नहीं होगा की क्यों निचले जातीके लोग अब तक स्वयंको निकृष्ट समझते थे। एक कारण उनकी अविद्या । दूसरा उनकी गरीबी। तीसरा उनका मांसाहार। चौथा उनका मद्यपानका अभ्यास। पांचवा उनके वस्त्र वेष। और भी कई कारणोंसे निचले जातीके लोग अपनेको स्वयं निकृष्ट समझते थे। ऐसे निचले दर्जेके लोग हर देशोंमें हैं लेकिन वह जातीका दर्जा नहीं बलकी आर्थिक दर्जा है। हिंदुओंमें निचले जातीको जनमसे ही पहचाना जाता है। अब किसीको उनके जाती पर बुरा कहा तो उसकी सज़ा जैल है।

ईसवी 2016 के आधुनिक हिंदूधर्ममें किसी व्यक्तीको जातीसे बाहर करना, उसको खाना पीना नहीं देना, उससे संपर्क बंद करना, गांवसे दूर ले जा कर वनमें छोड़ना आदी जातिभेद किया तो जैल सज़ा निश्चित है।

मठाधिपतियोंने उनके शिश्योंमेंसे किसी अपराधीको सज़ा देते वक्त जातिभ्रष्ठ करना एक लगातार होनेवाली क्रूर प्रथा थी। जब किसीको उनके मठके स्वामीने जातिभ्रष्ठ किया तो वह आदमी आत्महत्या करनेको तय्यारी करता था। उसको अपने घरमें भी प्रवेश निषिद्ध होता था। अब यह एक पुरानी भूली हुई संगती है। भगवान बुद्धने जब जातिभेद जड़से निकाल कर फेंका और सब जातियोंको एक समान अपने धर्ममें शामिल होनेका अवसर प्रदान किया तो चर्चाका विषय निर्वाण और मोक्श बना न की जातियोंकी दुर्व्यवस्था। सब लोग हिंदुओंका संघटन का मौका खो बैठे। बंगालमें राजा राम मोहन राय जैसे महानुभावोंने ब्राह्म समाज और दयानंद सरस्वतीने आर्य समाज खोल कर जातियोंकी पुनर्व्यवस्थाका प्रस्ताव रखा तो अंग्रेज़ोंने उसको कानूनके रूपमें लानेमें कदम पीछे खींचा। कदम आगे नहीं बढ़ाया।

ईसवी 1947 के बाद ही अस्पृश्यता निषेध कानून बना और उसका निरमूलन शुरू हुआ जिससे हिंदू समाज उन्नतीकी ओर मुढ़ा। सौ दो सौ बरस पहले जो निकृष्ठताको हिंदूधर्मके निचले जातीके लोग भोगते थे वह निचलापन अब निर्नामि हुआ है। भारत आगे बढ़ रहा है और हर एक हिंदुस्तानी अब सम्मानसे जी सकता है। अब सिरफ बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के दो वर्ग हैं।

अपने जीवनमें लाभदायक मध्यम चुननेकेलिये बडे आदमियोंका जीवन चरित्र पढ़ना एक सलाहनीय ज़रूरत है। हम समझते हैं की महात्मा गांधीजीने देशको स्वातंत्र्य दिलवाया। इसीलिये उनका जीवन चरित्र पढ़कर उनके आदर्शोंको हम अनुकरण करनेका प्रयास करते हैं। हमारे पूर्वजोंकी जीवन कथा पूर्वकाल बीतनेके वजहसे अप्रासंगिक और असंबद्ध होती जाती हैं।

दलितोंमें अब स्वाभिमान जगा है। ब्राह्मणोंको विशेष दर्जा नहीं मिलता है। पुरोहित और अर्चक वर्ग की गिनती छोटी होती जा रही है। मंदिरमें और मठोंमें पूजा अर्चना करनेकेलिये भी पर्याप्त संख्यामें पुरोहित नहीं मिलते हैं। ब्राह्मणोंको सरकारमें नौकरी दुर्लभ हुई है। ब्राह्मण लोग किसी राजकीय पक्शके प्रतिनिधी चुने नहीं जाते हैं। ब्राह्मणोंको छोटा दूकान खोलकर सुबह से देड़रात तक परिश्रम करके बेपारी बनके जीना ही एक मार्ग बचा है। ब्रह्मणोंको अब परिपूर्ण और संपन्न ढ़ंगसे समाजमें सर उठाकर जीनेकेलिये केवल ब्रह्मण समाज सहायता देगा। अपने परिजनों पर निर्भर होना पड रहा है। हिंदूधर्म कालके अनुरूप बदलता गया है। जो कुछ भी परिवर्तन हुआ है वह अच्छे परिणाम लाने के लिये ही हुआ है।

उन्नीसवीं सदी के अंत तक हिंदुस्तान में सन्यासी लोग बडी संख्यामें देखनेको मिलते थे। उनमें ब्रह्मण वंशमें जनमे सन्यासीयोंका सम्मान गांवके लोग बडे उत्साहसे करते थे। निचले जातीमें जनमे सन्यासीको कम या नहीं सा सम्मान देते थे।

अब ईसवी 2016 में सिरफ मठाधिपती स्वामियोंको सम्मान मिलता है। गांवमें संकुचित गलियोंमें भिक्शाटन करना केवल भिकारीको सीमित हुआ है। लोगोंको भूतों प्रेतों की कहानियां सच्ची कहानियाँ होनेका विश्वास ज्यादा था। अगर अकाल मरण पाये हुए व्यक्तीका गयामें गंगानदीमें या किसी अन्य नदीमें पिंड दान नहीं हुआ हो तो वह प्रेत बनकर उसके पिछ्ले परिजनोंको पीड़ा देता है ऐसा समझते थे। अब भी कई देहातों में भूत और प्रेत के विषय में अफवा होते हैं। प्रेत वह जीव है जिसका मृत्यूके बाद दर्शन सूत्रोंके अनुसार श्राद्ध नहीं हुआ होता। जब किसीने उसके नाम लेके पिंड दान किया तो वह प्रेत तत्काल सद्गती पाता है। आजकल प्रेतका अस्तित्व पर सवाल उठाते हैं और पिंड दान भी कम लोग करते हैं। प्राचीन कालमें ब्राह्मणोंको चोर ढ़कायितोंसे भी मान्यता और सुरक्शा मिलती थी। चोरोंको ढ़कायतोंको भी जानकारी थी की ब्राह्मणोंके पास बहुत धन नही रहता। ब्राह्मण लोग देवोंके पूजारी होते हैं। इसीलिये उनसे धन चुराना वे गलत समझते थे। ब्राह्मणोंके ऊपर हिंसा नहीं करते थे।

हिंदुस्तान में अंग्रेज़ोंका राज्य शुरू होनेके पहले गुरुकुल पद्धतीमें पाठशालायें चलती थीं। पिछ्ले ज़मानेमें सब बुद्धिमान युवक पाठशाला जाना उचित समझते थे। ऐसी पाठशाला केवल काशीमें होती थीं। इस्कूलोंको और कालेजोंको खोल कर गुरुकुल पद्धतीके पाठशालाओं में विद्यार्थी कम हुए। पाठशालाओंने भी अपनी गुणवत्ता खो दी थी। बड़े धार्मिक केंद्रों में भी गुरुकुल पद्धतीकी एक भी अच्छ्ी पाठशाला जिसमें शिक्शा पाये हुये विद्यार्थी बड़े पंडित बन सकते थे नहीं थी। वे सब काशी जाकर बड़े पंडित बननेका अवसर जुटा लेते थे। लेकिन इस्कूल और कालेज खुलनेके बाद विद्यार्थी लोग काशी जानेका अवसर खोकर आधुनिक विद्या सीखने पसंद करने लगे थे। पाठशालामें विद्यार्थियोंको छ्ोटीसी भूलकेलिये भी क्रूर दंड दिया जाता था। कभी कभी चोरी करनेके आरोप पर बिना अन्वेशण किये विद्यार्थीको माँबापसे अलग करके जाति भ्रष्ठ करके गांवसे भी बाहिर ढकेलते थे।

इस्कूलों में भी सब तरह के भूल को दंड दिया जाता था लेकिन कठिण दंड नहीं दिया जाता था। बहिष्कार करने की बात तो बिलकुल नहीं होती थी। पाठशालाओं में विद्यार्थीको वहीं रहना पड़ता था। रात में वहीं सोते थे। उनको खाना भी वहीं देते थे। लेकिन इस्कूलों मे भर्ती हुआ विद्यार्थी शाम को घर आ सकता था। उन्नीसवीं सदी में इस्कूलोंकी और कालेजोंकी स्थापना ज़ोरसे हो रही थी। अंग्रेज़ी शैलीके अच्छे इस्कूल सभी शहरों में चलने लगे।

आजकल हिंदूधर्म सुधर गया है और इसका कारण ब्राह्म समाज और अन्य धार्मिक संस्थावोंके लंबे कालसे चला हुआ परिश्रम ही है। भक्तिमार्ग अपनाकर चलनेवाले भी हिंदूधर्ममें अधिक संख्यामें देखनेको मिलते हैं। हिंदूधर्म कैसे अपनी परंपराको सही ढंगसे समझकर आगे बढ रहा है यह भी हमें जानना ज़रूरी है। अब भारतकी आबादी बढ़कर सव्वा सौ करोड हो गयी है।

आबादी बढी है तो भी ज्ञान विज्ञानकी प्रगतीके कारण देशका कामकाज़ सुचारू रूपसे चलता है। ज्ञान विज्ञानका प्रयोग देशके विकासमें हो रहा है। देशका विकास तब होता है जब हिंदू लोग अपने देशकी सुरक्शा पर ध्यान देते हैं। जब देशके लोग अपने देशको ही निंदा करके दगलबाज़ बनते हैं तो देशप्रेमियोंको सावधान रहना आवश्यक है। अब आपसमें संपर्क तीव्रगतीसे मोबैल फोन द्वारा होता है। सरकारको कर पावतीमें नज़रंदाज़ करके जो धन जमाकरके रखते हैं उससे लोग बुरे आदतोंमें फस जाते हैं। अपीम जैसे खतरनाक दवाओंकी तस्करी बढती है और आतंकियोंका हाथ प्रबल होता है। बालकोंका और लडकियोंका अपहरण करके उनको बुरे लोगोंको बेचना भी काले धनके माध्यमसे होता है। हिंदू धर्मसे ही देशका विकास होगा।



नेता वह है जो भाषण दे सकता है। भाषण दे कर अपनी अच्छी राय को सुननेवालों को अर्थपूर्ण ढ़ंग से व्यक्त कर सकता है। गांव के सारे परिवारों को लाभ पहुंचानेवाली बातोंको कहता है। जब उस नेता के पीछे पाँच दस लोग उसके समर्थन में खड़े हो जाते हैं तो वह अपने विचारोंको ज्यादा ज़ोर देकर कहता है। नेता सत्यवादी हो तो उसके काम में कई लोग जुड़ जाते हैं। जब नेता अनुभवी प्रौढ़ आकर्शक शरीरवाला होता है तब उसको ज्यादा लोग पसंद करते हैं। मोटा लंबा शरीरवाले को ज्यादा पसंद करते हैं। गोरा नेता हर बार भीढ़ में चुनकर आता है। गांव के बहुतर लोगोंको समझ में आनेवाली भाषा दमदार कंठसे बोलनेवाला जल्दी नेता बनता है। नेताको भ्रष्ताचार क्या होता है कैसे किसीपर छिपकता है और कैसे भ्रष्टाचार से दूर रह सकते हैं इसका ज्ञान होना चाहिये। महिळाओंको हर परिस्थितियों में माँ बहन के समान समझना अत्यंत आवश्यक गुण नेता का होता है।

धनवान नेता बलवान नेता होता है। नेता की दृष्टी अपने पर गिरने के लिये कई लोग उससे बात करने आते हैं। नेता को चाय पिलाते हैं। भोजन देते हैं। नेता अगर जनसभा का आयोजन करना चाहता है तो उसके लिये छोटे या बडे भवन की ज़रूरत है। तब भवनके मालिक उस नेता का स्नेह जुटाने के लिये अपना भवन बिना शुल्क लिये अथवा कम शुल्क ले कर देता है। कई लोग नेताको धन और अन्य वस्तु दान देते हैं। अगर एक नेता गांव में अनाथाश्रम बनाना चाहता है तो गांव के अमीर लोग भूखंड देने के लिये सामने आते हैं। उसके खर्चे के लिये अन्य अमीर लोग पैसा दान देते हैं। नेता उस पैसेको कैसे और किसके लिये खर्च करता है उसका हिसाब कोई नहीं पूछता। इस तरह से नेता जितना लोकप्रिय होता है उतना उसको धन और संपत्ति मिलती है।

नेताओंको विरोधी होते हैं। कई कारणोंसे कोई नेता जैसे लोकप्रिय होता है तो वह दुश्मनी भी जमाता है। उसका शादी हुई है तो उसकी पत्नी उसको नेता बनना नहीं पसंद करती है। नेताओं को अपने पत्नी और बच्चों के साथ रहनेको समय बहुत कम मिलता है। नेता के भाई और बहन नेता का पूर्व चरित्र सब जाननेवाले होने के कारण उसका नेता बनना गलत समझते हैं। उस पर ईर्शा करने लगते हैं। अगर विचारों का या विश्वासों का मिलाव नहीं है तो नेताओंकी जान खत्रे में पड़ती है। पचास प्रतिशत नेता खूनी के शिकार होते हैं। भारत के इतिहास में बहुत ऐसे नेता हुए हैं जिनका विष पिलाकर हत्या की गयी जैसे स्वामी दयानंद सरस्वतीने अपना जान खो दी। महात्मा गांधी की गोली मार कर जान ली। नेता बनना मुश्किल होगा लेकिन नेता बनकर मरना आसान है।

अंतमें दो बातें।

पुस्तकोंको पढ़ने की आदत आज कल समाज में कम होते जा रहा है। अनेक पुस्तकोंको पढ़ कर मेरा हिंदूधर्मका ज्ञान बढ़ा। भारतके इतिहासके बारेमें जानकारी मिली। प्रमुखतः हिंदुस्तान प्रदेशका चारित्रिक महत्व समझमें आया।

संसारमें मानव किस आधार पर चलता है? प्रकृतीका हाथ थाम कर चलता है। सूर्य का प्रकाश, उष्ण, विद्युत्चक्ती, आदियोंके साथ मनुष्यका जीवन प्रकृतीकी गतीसे जोड़ता है। हम जनम लेते वक्त हमारे शरीर और मनमें हमारे पूर्वजोंके गुणस्वभाव भरे होते हैं। हमारे माँबापने हमे पाल पोसकर बड़ा किया। उन्होंने हमे जीनेका रास्ता दिखाया। हमारे स्कूल और कालेजके शिक्शकोंने हमें भाषा, गणित, अन्य ज्ञान विज्ञान सिखाया। हमें पुस्तकों के और ग्रंथोंके लेखकोंने समाचार और सूचना प्रदान किया।

इन सब साधनोंको होते हुए हमें डरनेकी कोई बात नहीं है। पुस्तकोंमें लिखे हुए कहानियोंको पढ़कर हमारे मनमें ज्ञान और श्रद्धा बढ़ती है। ग्रंथों में लिखे हुए उपदेशोंको आज भी (ईसवी 2016में भी) समयानुसार पालन करनेसे हम अच्छे देशभक्त प्रामाणिक नागरीक और दयाशील सज्जन बनेंगे। धर्मोंकी बातें विश्वास और श्रद्धाकी बातें हैं। उनको प्रयोगशाला में प्रयोग करके सिद्ध नहीं करना है। अगर एक भगवान गलत है तो सारे भगवान गलत हैं। किसी धर्म को हम गलत कहते हैं तो हमारा धर्म भी गलत हो सकता है।

। समाप्त ।

डा। मोहन शेणै

परिचय

डा। मोहन शेणै का संपूर्ण नाम है - अड्यार मोहन गोपालकृष्ण शेणै। इनके पितामह गोपालकृष्ण मंगळूरके पासके अड्यार गांवके रहनेवाले थे। इनको मातापिताने दिया हुआ नाम है मोहन। इनके पिता का नाम है गोपालकृष्ण। इनके परिवारका नाम है शेणै। वृत्तीमें वे एक अवकाश प्राप्त पेथोलोजिस्ट हैं। इन्होंने मंगळूरके प्रसिद्ध स्कूल गणपति है स्कूलमें मेट्रिक पढ़के मुंबै शहरमें रामनारायण रुइया कालेजमें इंटर सायन्स पढ़ा। इन्होंने मुंबै शहरके बायकळा व्याप्तीमें स्थित ग्रांट मेडिकल कालेजमें एम बी बी एस पढ़ा और वैद्यकीय डिग्री प्राप्त की। बादमें वे अमेरिका गये। अमेरिकामें उन्होंने पेथोलोजी बोर्ड पास किया। कुल साढे आठ बरस अमेरिकामें बिताकर उनमें तीन बरस एक अस्पतालमें पेथोलोजिस्ट का पद संभालकर वे भारत वापस आकर बेंगळूरु शहरमें बसे। उनकी पत्नीका नाम ललिता है। उनके दो बच्चे हैं। बडी बेटी और एक बेटा। दोनों अमेरिकामें बसे हैं। अब वे एक लेखक बनकर अपना समय बिताते हैं। उनके पुस्तकोंकी सूची:

अंग्रेजी पुस्तकें: अड्यार गोपाल वर्ल्ड (परिवारका समाचार); मिनिमम हिंदुइसम प्राक्टीस (हिंदूधर्म पर व्यख्यान); कर्नाटक राज्योत्सव एंड अदर एस्सेस (प्रबंध); फैंड युवर सेल्फ यंग म्यान (कहानी); लेटस गेट आन विद अवर लैव्स (कहानी); हिंदू जंटलमन एंड लेडी (प्रबंध); बांड आफ ल्यांड (कहानी); वाटीस रांग डाक्टर (कहानी); द सेन्स आफ वेकेन्सी (कहानी)

कन्नड पुस्तकें: इन्नु ननगे बेडा (कहानी); राधाली पद्यावळी (माताजीकी डैरी); नवधर्म (धार्मिक कहानी); कोंकणी पुस्तकें: सेक्यूलरिसम (प्रबंध); आम्गेलि अर्थव्यवस्था (प्रबंध); होडु आनि सानु (कहानी); हांव डाक्टु जाल्लों (प्रबंध); सारे पुस्तके अमज़ोन.काम के आन लैन पर बिकती हैं।

www.amazon.com

ऋण भार

मैने इन पुस्तकोंका सहारा लेकर इस पुस्तकको लिखा है।

1. अंग्रज़ी हिंदी शब्ध कोश - डा। एन श्रीधरन
2. मिनिमम हिंदुइसम प्राक्टीस - मोहन शेणै
3. हिंदी इंग्लीष डिक्शनरी - डा। हरदेव बहरी
4. वैकिपीडिया - इंटरनेट



Made in the USA
Charleston, SC
15 March 2017

धार्मिक चिंतन - लेखकः डा। मोहन शेणै

DHARMIC CHINTHAN - A HINDI LANGUAGE BOOK



सबको अपने जीवनमें अपना धर्म जाननेकी ज़रूरत होती है. जब यह प्रश्न उठता है कि हमारा धर्म कौनसा है तब हमको हमारे धर्मका नाम याद आता है. जीवन भर हम अपने धर्मको साथ लेकर चलते हैं.

जीवन भर हमको बताया जाता है की ईश्वर पर विश्वास रखो. ईश्वर दयालू है. श्रद्धापूर्ण मनसे अपने दुराचारोंको कबूल करके माफ़ी माँगने पर ईश्वर हमको कष्ट नहीं देगा.

हम अपने घरमें जो कुछ अपने परिवारके लोग कोई धार्मिक आचरण करते हुए देखतें हैं उसको देखकर हम बचपनसे ही अपने धर्मके बारेमें थोडा बहुत सीख लेते हैं.

सत्य वही है जिसे हम आँखोंसे देख सकते हैं, कानोंसे सुन सकते हैं और ज्नान और बुद्धीसे सत्य मानते हैं. हमारा दिमाग चलाके हमें अनुपयुक्त, काल्पनिक ओर असंबद्ध उपदेशोंसे दूर रहना चाहिये.

साधना वही है जो हमें हमारे कर्तव्योंके तरफ ध्यान देनेको प्रेरित करता है. ज्ञान प्राप्त करना भी एक तरह की साधना है. ज्ञानके माध्यमसे हम सत्यको समझ सकते हैं. जैसे हमारा ज्ञानका आविश्कार होता है वैसे हम पुराने बातोंको जिनको हम सत्य समझ थे अब झूठ साबित होनेसे त्याग देते हैं.

हमको सुरक्शा देनेवाला और मुश्किलोंसे बचानेवाला कौन है? इस प्रश्नका उत्तर अलग अलग विद्वान अलग अलग तरीखेसे देते हैं. मेरा उत्तर यह है: जब हम घरके अंदर हैं त घरके दीवारें हमे रक्शा प्रदान करते हैं और घरके बाहर जो आस पास में होते हैं वे हमा रक्शा करते हैं. हमारा अच्छा बर्ताव हमें हर जगह बचाता है.

PUBLISHED BY ADYAR GOPAL PARIVAR PUBLISHERS

A Discourse on Modern Hindu Philosophy



ADYAR GOPAL PARIVAR
COVER DESIGN BY DORKO

ISBN 9781542685009



